सत्यमेव जयते
नीति आयोग

नीति वर्किंग पेपर

विकसित भारत:
रोजगार का सृजन करने वालों को बंधन मुक्त करना और विकास चालकों को सशक्त बनाना

अरविंद विरमानी
जुलाई, 2024

विकसित भारत: रोजगार का सृजन करने वालों को बंधन मुक्त करना और विकास चालकों को सशक्त बनाना

अरविंद विरमानी

जुलाई, 2024

-सार-

यह आलेख 2050 में विकसित भारत का विजन प्रस्तुत करता है। इस विज़न के पीछे दो उद्देश्य हैं। एक है तीव्र गति से हो रहा विकास, जो उन देशों के साथ अंतर को कम करता है जो 1960 और 1970 के दशक में भारत के समान विकास स्तर पर थे, लेकिन उस समय की तुलना में अब आगे बढ़ गए हैं। तेजी से विकास के लिए वैश्विक और घरेलू रुझानों की समझ और उनका उपयोग महत्वपूर्ण है, जिसका उपयोग भारत की सरकार और यहां के लोगों द्वारा बेहतर जीवन की ओर बढ़ने के लिए किया जा सकता है। दूसरा, व्यक्तिगत प्रेरणा और अंतर्निहित क्षमताओं के आधार पर भारत के प्रत्येक नागरिक के लिए अवसर की समानता है। इन दोनों उद्देश्यों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल, सार्वजनिक वस्तुओं, सामाजिक और प्रशासनिक सेवाओं तक समान पहुंच महत्वपूर्ण है। विकसित देशों के 1.4 बिलियन नागरिकों को उपलब्ध गुणवत्तापूर्ण सामाजिक सेवाओं का 1.6 बिलियन भारतीयों को प्रावधान जो ई-गवर्नेंस, ई-लर्निंग, टेली-मेडिसिन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी डिजिटल प्रणालियों के व्यापक उपयोग के माध्यम से केवल 30 वर्षों में ही संभव है। ई-कौटिल्य, ई-चाणक्य, ई-मनु जैसी एआई संचालित विशेषज्ञ प्रणालियाँ शासन में परिवर्तन लाएंगी। ई-आचार्य, ई-गुरु और ई-वैद जैसी विशेषज्ञ प्रणालियाँ शिक्षा, कौशल और स्वास्थ्य सेवाओं में परिवर्तन लाएंगी। हम एक हाइब्रिड (फिजिटल) वास्तुशिल्प की कल्पना करते हैं जो संरचनात्मक परिवर्तन और समावेशी विकास में तेजी लाने के लिए भारत के विशाल मानव संसाधन को एक व्यापक डिजिटल अवसंरचना से जोड़ता है। सरकार भारत में प्रत्येक घर के लिए हार्ड और सॉफ्ट अवसंरचना का प्रावधान सुनिश्चित करेगी, एक नीति संरचना विकसित करेगी जिससे प्रतिस्पर्धी बाजारों का निर्माण होगा जिसमें निजी उद्यमी नवाचार कर सकते हैं और आगे बढ़ सकते हैं, और एक कल्याणकारी प्रणाली विकसित करेगी जो कमजोर और असुरक्षित लोगों की रक्षा करेगी और इसके साथ ही इसमें नागरिक समाज के लिए गैर-विपणन योग्य सेवाओं की बहुलता प्रदान करने के लिए पर्याप्त गुंजाइश होगी। प्रस्तावित नीतिगत एवं संस्थागत सुधारों का उद्देश्य रोजगार का सृजन करने वालों को बंधन मुक्त करना तथा विकास चालकों को सशक्त बनाना है।

---

[*] लेखक नीति आयोग के सदस्य हैं। यह वर्किंग पेपर पॉलिसी पेपर, "इंडिया विजन 2050," पीपी संख्या 01/2021, ईजीआरओडब्ल्यू फाउंडेशन, मई 2021 और वर्किंग पेपर, "इंडिया विजन 2050: ए सिविलाइजेशनल पावर", डब्ल्यूपी संख्या 01/2024, ईजीआरओडब्ल्यू फाउंडेशन, जून 2024 पर आधारित है। इस आलेख में व्यक्त विचार लेखक के निजी विचार हैं और इन्हें नीति आयोग या भारत सरकार से संबद्ध नहीं किया जाना चाहिए।

विषय सूची

चित्र.....6

तालिकाएं.....7

1.प्रस्तावना.....8

2. अवसर की समानता.....9

3. वैश्विक रुझान.....12

3.1 जनसांख्यिकी.....12

3.2 डिजिटलीकरण और फिजिटल अर्थव्यवस्था.....14

3.3 जलवायु परिवर्तन.....15

3.4 वैश्वीकरण, वि-वैश्वीकरण और डी-रिस्किंग.....16

3.5 तुलनात्मक लाभ.....20

4. अर्थव्यवस्था : विकास और संरचना.....22

4.1 भारतीय अर्थव्यवस्था.....22

4.2 विश्व अर्थव्यवस्था में भारत.....27

4.2.1 कनेक्टिविटी और व्यापार.....31

4.2.2 वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला.....33

4.2.3 अंतरराष्ट्रीय वित्त.....34

4.3 संरचनात्मक परिवर्तन.....35

4.3.1 गुणवत्ता श्रृंखला.....35

4.3.2 कृषि एवं ग्रामीण श्रम.....37

4.3.3 अवसंरचना.....38

4.3.4 विनिर्माण.....39

4.3.5 सेवाएं.....41

5. ज्ञान अर्थव्यवस्था: विकास चालकों को सशक्त बनाना.....44

5.1 शिक्षा.....45

5.2 डिजिटल शिक्षक (ई-आचार्य).....47

5.3 रोजगार और नौकरी कौशल 48
5.3.1 श्रमबल, श्रमिक और बेरोजगारी 50
5.3.2 मजदूरी वृद्धि 52
5.3.3 ग्रामीण रोजगार एवं मजदूरी 57
5.3.4 युवा रोजगार एवं नौकरी खोज 58
5.3.5 शिक्षित श्रमबल की उपलब्धता 60
5.4 डिजिटल कौशल (गुरु-ई) 61
5.5 ज्ञान स्टैक 62
6. शासन एवं लोक कल्याण 63
6.1 सरकारी स्टैक 64
6.2 गरीबी और वितरण 64
6.3 कल्याण स्टैक 67
6.4 सार्वजनिक स्वास्थ्य 68
6.5 डिजिटल डॉक्टर (वैद-ई) 71
6.6 समुदाय और सामाजिक स्टैक 72
7. डिजिटल अर्थव्यवस्था: विशेषज्ञ प्रणाली एआई 72
7.1 डिजिटल विनियमन 73
7.2 कौशल का आदान प्रदान 74
7.2.1 यूएफआई, फिन-स्टैक और फिंटरनेट 74
7.3 डिजिटल मार्केट इंटरफ़ेस या मार्केट स्टैक 75
8. हरित अर्थव्यवस्था 75
8.1 परिवहन 76
8.2 ऊर्जा 77
8.3 शहरीकरण 77
8.4 आवास 78
8.5 वृत्ताकार अर्थव्यवस्था: पुनर्चक्रण 78
8.6 पर्यावरणीय विनियम 78
8.7 ग्रीन स्टैक 78

9. भारत एक सभ्यतागत शक्ति के रूप में 79
9.1 रक्षा एवं निवारण 79
9.2 बहुध्रुवीय परिधि वाला द्विध्रुवीय विश्व 81
9.3 बहुध्रुवीय परिधि वाला त्रिध्रुवीय विश्व 81
9.4 कूटनीति 82
9.5 सभ्यतागत राष्ट्र 83
10. नीतिगत विजन: रोजगार सृजनकर्ताओं को बंधनमुक्त करना 84
10.1 नियंत्रण, विनियमन और नियामक 85
10.1.1 विनियामक अनुपालन में आसानी 86
10.1.2 सरकारी सार्वजनिक इंटरफ़ेस (जीपीआई) 87
10.2 डिजिटल टैक्समैन: ई- कौटिल्य 87
10.3 पूंजी बाजार 91
10.3.1 एफडीआई प्रतिबंध 92
10.3.2 बैंकिंग और ऋण 93
10.4 आपूर्ति श्रृंखला क्रांति 93
10.4.1 विनिर्माण आपूर्ति श्रृंखला 94
10.4.2 एसएमई और स्टार्ट-अप 96
10.5 शिक्षा और कौशल-निर्माण 97
10.6 शहरी विकास 99
10.7 भूमि एवं रियल एस्टेट 101
10.8 कृषि और ग्रामीण 101
10.9 परिवहन और ऊर्जा 102
10.10 आपराधिक न्याय प्रणाली 104
11. सार और निष्कर्ष 105
12. संदर्भ 110
परिशिष्ट सारणी 111

चित्र

		पृष्ठ सं.
चित्र 1 :	व्यापारिक वस्तुओं के व्यापार का वैश्वीकरण एवं वि-वैश्वीकरण	16
चित्र 2 :	विश्व विनिर्माण निर्यात में हिस्सेदारी - अमेरिका, जर्मनी, चीन	17
चित्र 3 :	श्रमबल भागीदारी की दरें (कुल, महिला) भारत और विश्व	21
चित्र 4 :	वास्तविक प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (पीसीजीडीपी) वृद्धि (%) : घरेलू एवं वैश्विक वृद्धि के सापेक्ष	22
चित्र 5 :	वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में निजी उपभोग व्यय (पीएफसीई) और सकल स्थिर पूंजी निर्माण (जीएफसीएफ) का हिस्सा	23
चित्र 6 :	प्रति वर्ष 5.9%, 6.4% और 6.9% की औसत पीसीजीडीपी वृद्धि के साथ अनुमान	27
चित्र 7 :	चीन, अमेरिका, यूरोपीय संघ, विश्व के सापेक्ष भारत का प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (2017 मे अंतर्राष्ट्रीय डॉलर में पीपीपी)	28
चित्र 8 :	वीआईपीई द्वारा मापी गई भारत और चीन की वैश्विक आर्थिक शक्ति	29
चित्र 9 :	शक्ति का पिरामिड	30
चित्र 10 :	रोजगार में वृद्धि {श्रमिक मानव-दिन) एवं वास्तविक मजदूरी दर	40
चित्र 11 :	नौकरी कौशल त्रि-आयामी समस्या है	49
चित्र 12 :	सामान्य राज्यों (यूएस) और वर्तमान साप्ताहिक स्थिति (सीडब्लूएस) के अनुसार श्रमिक-जनसंख्या अनुपात	51
चित्र 13 :	भारत की श्रमबल भागीदारी दर	52
चित्र 14 :	आकस्मिक श्रमिकों की बढ़ती मांग, वास्तविक मजदूरी और नौकरी उत्पादकता	54
चित्र 15 :	स्व-नियोजित: रोजगार वृद्धि, वास्तविक मजदूरी में मामूली सुधार	55
चित्र 16 :	दिहाड़ी और वेतनभोगी मजदूरों पर महामारी और बाहरी झटकों का प्रभाव	56
चित्र 17 :	खोज बेरोज़गारी - आयु समूहों के अनुसार युवा बेरोज़गारी दर	59
चित्र 18 :	जैसे-जैसे कॉलेज शिक्षितों का प्रतिशत बढ़ता है, खोज रोजगार की माँग बदलता है	60
चित्र 19 :	वीआईपी सूचकांक द्वारा मापी गई राष्ट्रीय शक्ति	80
चित्र 20 :	वीआईपीएम द्वारा मापी गई सैन्य शक्ति	80
चित्र 21 :	आसियान देशों के सापेक्ष भारत के विनिर्माण शुल्क	88
चित्र 22 :	एकीकृत डिजिटल कर प्रणाली	90

तालिकाएं

		पृष्ठ सं.
तालिका 1 :	कार्यशील आयु वाली आबादी की हिस्सेदारी और परिवर्तन	13
तालिका 2 :	विश्व स्तर पर विनिर्मित निर्यात में चीन की हिस्सेदारी, 2021 (%)	18
तालिका 3:	1999 से 2023 तक आर्थिक विकास में परिवर्तन	24
तालिका 4 :	बाह्य एफडीआई और विनिर्मित आयात का हिस्सा	34
तालिका 5 :	तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षा की पहुंच और उपलब्धि	46
तालिका 6 :	श्रमबल की भागीदारी (एलएफपीआर), श्रमिक आबादी (डब्ल्यूपीआर) और बेरोजगारी (यूआर)	50
तालिका 7 :	नौकरियों में वृद्धि, श्रमिक आबादी अनुपात और प्रकार के अनुसार वास्तविक मजदूरी	53
तालिका 8 :	ग्रामीण गैर-खेतिहर मजदूरों की वास्तविक मजदूरी	57
तालिका 9 :	2013 से 2023 तक खेतिहर मजदूरों की वास्तविक मजदूरी में वृद्धि	58
तालिका 10 :	अर्थव्यवस्था के तीव्र विस्तार के लिए शिक्षित श्रम की संभावित आपूर्ति	61
तालिका 11 :	उपभोग के आधार पर भारत की गरीबी दर (एचसीआर) और गिनी	65
तालिका 12 :	संचयी उपभोग वितरण	67
तालिका 13 :	भारत में बौनापन, कम वजन और दुर्बलता के निर्धारक के रूप में सीवेज और स्वच्छता	69
तालिका 14 :	सार्वजनिक स्वास्थ्य की मूल बातें - पेयजल, स्वच्छता और सीवेज	70
तालिका 15 :	स्वास्थ्य परिणाम - जीवन प्रत्याशा और मृत्यु दर	71
तालिका 16 :	भारत में विशिष्ट शुल्क	89
तालिका 17 :	जीएसटी सुधार के निहितार्थ	90
तालिका 18 :	एफडीआई प्रतिबंध सूचकांक - 2020 और 2010	93
तालिका 19 :	प्रति व्यक्ति एनएसडीपी के सापेक्ष शिक्षा प्रदर्शन में अंतर वाले राज्य	97
तालिका 20 :	लॉजिस्टिक्स प्रदर्शन तथा बंदरगाह एवं शिपिंग	103
तालिका 21 :	बिजली कीमत का तुलनात्मक विवरण	104

1. प्रस्तावना

भारत एक लोकतांत्रिक बाजार अर्थव्यवस्था है, जिसकी आबादी पश्चिम के सभी 78 लोकतांत्रिक देशों की कुल आबादी (~ 1.4 बिलियन) के बराबर है। 28 राज्यों और 8 संघ राज्य क्षेत्रों, 23 आधिकारिक भाषाओं और 456 जीवित भाषाओं के साथ, यह 28 देशों और 24 आधिकारिक भाषाओं वाले यूरोपीय संघ (ईयू) की तुलना में कहीं अधिक विविधतापूर्ण है। इन देशों के विपरीत, जो उच्च मध्यम आय या उच्च आय वाले देश हैं, भारत अभी भी निम्न मध्यम आय वाला देश है। हाल ही में आबादी के मामले में चीन से भारत आगे निकल गया है; बड़ी आबादी और अपेक्षाकृत निम्न मध्यम आय का संयोजन भारत को दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाता है।

एक दशक में उच्च मध्यम आय वाला देश बनने तथा 25 साल में उच्च आय वाला देश बनने के लिए भारत के भविष्य की कुंजी विकास और हमारे तुलनात्मक लाभ का दोहन है। चल रहे आर्थिक सुधार तथा अगले कुछ वर्षों के लिए एजेंडा में शामिल आर्थिक एवं संस्थागत सुधार 2020 के दशक के दौरान प्रति व्यक्ति जीडीपी की वृद्धि दर को 7 प्रतिशत पर बनाए रखेंगे, जिससे कुछ ही वर्षों में भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। चुनौती यह है कि हमारे मानव संसाधन की गुणवत्ता में बदलाव लाने, वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था में नए रुझानों का लाभ उठाने के लिए इन सुधारों को कैसे व्यापक और गहन बनाया जाए, ताकि तीन दशकों तक तेज विकास कायम रह सके।

खंड 2 में समानता का विजन प्रस्तुत किया गया है जो स्वतंत्र, खुले, बहुलवादी लोकतंत्र में तीव्र समावेशी विकास का आधार है। खंड 3 में जनसांख्यिकी, डिजिटलीकरण, डी-कार्बोनाइजेशन और डी-ग्लोबलाइजेशन की रुझानों की जांच की गई है, जो अगले दशक में भारत के वैश्विक तुलनात्मक लाभ का निर्धारण करेंगे। खंड 4 में भारतीय अर्थव्यवस्था की वृहद-आर्थिक (मांग पैटर्न सहित) और संरचनात्मक विशेषताओं का जायजा लिया गया है तथा अगले कुछ दशकों में इसके संभावित विकास की परिकल्पना की गई है। खंड 5 में "जनसांख्यिकीय लाभांश" को वास्तविक बनाने और ज्ञान अर्थव्यवस्था के निर्माण से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों की जांच की गई है। इस खंड में बाजार के अनुरूप कौशल की मांग और आपूर्ति के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा और रोजगार के मुद्दे का विश्लेषण किया गया है। इस खंड में रोजगार की खोज का मुद्दा भी शामिल है। सीमित डेटा उपलब्धता के आधार पर, यह रोजगार और वास्तविक मजदूरी की वृद्धि में परिवर्तन को विशिष्ट प्रकार के श्रम की मांग और आपूर्ति की सापेक्ष वृद्धि से जोड़ता है।

खंड 6 शासन और लोक कल्याण को आगे बढ़ाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका पर केंद्रित है। इसकी शुरुआत गरीबी और वितरण के डेटा आधारित विश्लेषण से की गई है, जिसके बाद स्वास्थ्य और सार्वजनिक स्वास्थ्य के मुद्दों पर चर्चा की गई है। बाल कुपोषण सहित स्वास्थ्य के मापदंडों की देशव्यापी तुलना नीति और राज्य सरकार के प्रयास के लिए आधार तैयार करती है। शासन की गुणवत्ता विकास के लिए वृहद आर्थिक वातावरण के साथ-साथ सरकारी सेवाओं की आपूर्ति के लिए भी महत्वपूर्ण है। इस खंड में सरकार के कानूनों, नियमों, प्रक्रियाओं और निर्णयों के डिजिटलीकरण का प्रस्ताव किया गया है, ताकि शासन की प्रणालियों, प्रक्रियाओं और साधारण निर्णयों को बदलने के

लिए एआई विशेषज्ञ प्रणालियों के उपयोग के लिए आधार तैयार किया जा सके। इसमें वंचितों के लिए सामाजिक सेवा (शिक्षा, कौशल, स्वास्थ्य) की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए एआई विशेषज्ञ प्रणालियों का उपयोग करने की संभावना की भी जांच की गई है।

खंड 7 में हाइब्रिड, डिजिटल-भौतिक (फिजिटल) प्रणालियों पर विस्तार से चर्चा की गई है, जो विजन को वास्तविकता में बदलने के लिए महत्वपूर्ण हैं। खंड 8 में हरित अर्थव्यवस्था के प्रमुख घटकों और कार्बन नियंत्रण के प्रति भारत के समग्र दृष्टिकोण का खाका प्रस्तुत किया गया है। खंड 9 में 2050 की दुनिया में भारत के लिए भू-राजनीतिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। खंड 10 में तीन दशकों तक तीव्र विकास को गति देने तथा बनाए रखने के लिए आवश्यक सुधारों पर नीतिगत दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। खंड 11 के साथ यह आलेख समाप्त हो जाता है।

2. अवसर की समानता

भारत का संविधान इस दर्शन पर आधारित है कि संविधान के अंतर्गत बनाए गए कानूनों तथा इन कानूनों को लागू करने वाली शासन व्यवस्था और प्रशासनिक संस्थाओं के अंतर्गत सभी नागरिक समान हैं। मूल उद्देश्य, जिसे अम्बेडकर ने सबसे अच्छे ढंग से समझाया था, यह था कि भारत में कुछ दशकों में यथोचित रूप से समानता आ जाए। इन आशाओं को प्राप्त करने में विफलता के कारण संवैधानिक उपायों को दशकों तक आगे बढ़ाना आवश्यक हो गया है। इसके अलावा, संविधान और कानूनों का क्रियान्वयन किस प्रकार किया जाता है, इसकी प्रशासनिक वास्तविकता अभी भी लक्ष्य से बहुत दूर है। हम 2050 में ऐसे भारत की कल्पना करते हैं जिसमें संविधान के मूल ढांचे में सन्निहित मानव समानता के मूल उद्देश्य को बहाल किया जाएगा, कानूनों में समानता के मौलिक अधिकार को प्रतिबिंबित किया जाएगा तथा कानूनों और उनके कार्यान्वयन के बीच के अंतर को कम करने के लिए शासन की संस्थाओं में सुधार किया जाएगा। हम कल्पना करते हैं कि स्वतंत्रता के बाद के प्रथम तीन दशकों में लागू किए गए आर्थिक कानूनों, नियमों, विनियमों और नियंत्रणों का समूह पुरानी यादें बनकर रह जाएगा।

भारतीय समाज आज सामाजिक रूप से उतना समान नहीं है, जितना संविधान निर्माताओं ने इसकी घोषणा के 75 वर्ष बाद होने की कल्पना की थी। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण, जो इस उम्मीद के साथ 10 वर्षों के लिए बनाया गया था कि यह अड़चनों को खत्म करने और समानता बहाल करने के लिए पर्याप्त होगा, को सीमित सफलता के साथ 70 वर्षों के लिए बढ़ा दिया गया है। आधिकारिक उपायों के अलावा, वंशानुगत भेदभाव को कम करने में मिली सफलता का कुछ श्रेय बाजार अर्थव्यवस्था की पहचान-विहीनता और शहरी जीवन की गुमनामी को भी जाता है। संस्थापकों ने कभी यह कल्पना नहीं की होगी कि स्वतंत्रता के कुछ दशक बाद आरक्षण समाप्त होने के बजाय, 40 साल बाद इसे अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए भी लागू कर दिया जाएगा, तथा 60 साल बाद इसे और आगे बढ़ाने की मांग उठेगी। राजनीतिक विमर्श और प्रतिद्वंद्विता ने भी प्रत्येक धार्मिक समूह द्वारा धर्म के आधार पर भेदभाव को समाप्त करने में बाधा उत्पन्न की है। हम 2050 में एक ऐसे भारत की कल्पना करते हैं, जहां बचा हुआ भेदभाव अमेरिका जैसे अन्य बड़े बहुलवादी लोकतंत्रों में प्रचलित स्तर तक कम हो जाएगा या उससे भी नीचे चला जाएगा।

भारत संविधान में पूर्ण लैंगिक समानता को शामिल करने वाले पहले लोकतंत्रों में से एक था, लेकिन इसे सामाजिक मानदंडों और नियमों में परिवर्तित करने में विफल रहा है। हम एक ऐसे भारत की कल्पना करते हैं जिसमें गांवों, छोटे शहरों और शहरी घरों में काम करने वाली महिलाओं का भारत के उच्च कौशल वाले श्रमबल में हिस्सा आधे से अधिक हो। हम एक ऐसे भारत की कल्पना करते हैं जिसमें महिला श्रमबल की भागीदारी दर उच्चतम वैश्विक चतुर्थक में हो और मजदूरी में अंतर न्यूनतम वैश्विक पंचक में हो। ओईसीडी अध्ययन (2015) से पता चलता है कि श्रमबल की भागीदारी और मजदूरी में लैंगिक समानता से भारत की जीडीपी विकास दर में 1.5 प्रतिशत से 2.4 प्रतिशत तक की वृद्धि हो सकती है। आईएमएफ का अनुमान है कि अर्थव्यवस्था में महिलाओं की समान भागीदारी से विभिन्न देशों के सकल घरेलू उत्पाद में औसतन 16 प्रतिशत की वृद्धि हो सकती है। इस संबंध में भारत को लेकर यह अनुमान है कि इससे सकल घरेलू उत्पाद में 27 प्रतिशत की वृद्धि हो सकती है।

सामाजिक गतिशीलता एक आर्थिक अनिवार्यता है, क्योंकि जनसंख्या की उत्पादक क्षमता के पूर्ण उपयोग से न केवल व्यक्ति को लाभ होता है, बल्कि अर्थव्यवस्था की कुल उत्पादकता में भी वृद्धि होती है। हम एक ऐसे भारत की कल्पना करते हैं जिसमें सभी नागरिकों और उनके बच्चों के लिए आर्थिक अवसर की समानता हो, जो माता-पिता के वर्ग, जाति, धर्म या जातीय मूल या लिंग से स्वतंत्र हो। इसके लिए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जो सभी को उच्चतम गुणवत्ता की बुनियादी शिक्षा और नौकरी योग्य कौशल प्रदान करे, तथा प्रत्येक को उसकी क्षमता और प्रतिभा, रुचि और प्रेरणा के अनुसार कौशल और उच्च शिक्षा प्रदान करे तथा इसमें सार्वजनिक (अर्थात व्यक्तिगत) हितों को बढ़ावा देने की आवश्यकता भी शामिल हो। सीखने की कला सीखना, वैज्ञानिक पद्धति, तथा हमारे मानस में दबी मान्यताओं पर प्रश्न उठाने की क्षमता अच्छी शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य है। यदि इस परिणाम को उत्पन्न करने के लिए मानविकी को डिज़ाइन किया जाता है, तो वे नवाचार को बढ़ावा देने में एसटीईएम (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) के समान ही उपयोगी हो सकते हैं। शिक्षा में सामाजिक, नागरिक और राष्ट्रीय जिम्मेदारी की गांधीवादी धारणाओं को शामिल किया जाना चाहिए, न कि स्टालिनवादी-माओवादी धारणाओं को, जो यह मानता है कि "अंत ही साधन को सही ठहराता है।"

अवसर की समानता के लिए प्रतिस्पर्धी बाजार अर्थव्यवस्था की आवश्यकता होती है, जिसमें प्राकृतिक एकाधिकार की तर्कसंगत रूप से पहचान की जाती है और उन्हें पेशेवर रूप से विनियमित किया जाता है तथा अवसर की समानता पर विषम सूचना के प्रतिकूल प्रभाव को ठीक किया जाता है। समाज को पेटेंट को मंजूरी प्रदान करना या प्रमुख हथियार प्रणालियों का उत्पादन जैसे मामलों में कभी-कभी एकाधिकारवादी अधिकार बनाने पड़ते हैं क्योंकि ऐसा करना सार्वजनिक हित में होता है। यह कार्य सार्वजनिक लाभ और लागत को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

सामाजिक-आर्थिक समानता के लिए समान गुणवत्ता वाली सार्वजनिक वस्तुओं तक समान पहुंच की भी आवश्यकता होती है[1] क्योंकि सरकार द्वारा "सार्वजनिक वस्तुओं" के प्रावधान में असमानता का होना असमानता का एक स्रोत है। "सार्वजनिक स्वास्थ्य" और "सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा" उत्कृष्ट "सार्वजनिक वस्तुएं" हैं जिनके लिए सरकार पूरी जिम्मेदारी वहन करती है।[2] संचारी रोग सार्वजनिक भलाई का सबसे अच्छा उदाहरण है जिसे "सार्वजनिक स्वास्थ्य" कहा जाता है और टीकाकरण, वेक्टर नियंत्रण, सीवेज, स्वच्छता, स्वच्छ पेयजल और सार्वजनिक शिक्षा इसे नियंत्रित करने के साधन हैं। प्रदूषण (वायु, जल, भूमि) का नियंत्रण भी सार्वजनिक स्वास्थ्य से निकटता से जुड़ा हुआ है। सभी को अच्छी गुणवत्ता वाली “सार्वजनिक स्वास्थ्य” सेवाएं प्रदान करना अवसर की समानता का आधारभूत स्तंभ है।[3] हम एक ऐसे भारत की कल्पना करते हैं जिसमें स्वास्थ्य बीमा सभी परीक्षणों और उपचारों (छोटी सर्जरी सहित) के लिए सभी निवासियों को कवर करता है तथा बड़ी सर्जरी, दीर्घकालिक रोग और उपचार योग्य कैंसर को सरकारी तृतीयक स्वास्थ्य प्रणाली द्वारा कवर किया जाता है।[4]

हम एक ऐसे भारत की कल्पना करते हैं जिसमें उन्नत देशों की तरह उच्च गुणवत्ता वाले पेयजल, स्वच्छ वायु और किसी भी प्रकार के रसायन से प्रदूषित न हुई भूमि तक सभी लोगों की समान पहुंच हो, जहां बड़े महानगरों से लेकर छोटे शहरों और बस्तियों तक सभी लोगों की समान शहरी सुविधाओं और पर्यावरण तक पहुंच हो। हम एक ऐसे भारत की कल्पना करते हैं जिसमें अवसर की समानता वास्तव में प्राप्त हो और दिखाई दे; सार्वजनिक पार्कों, मेट्रो रेल (अर्ध-सार्वजनिक वस्तु), हवाई अड्डों और फुटपाथों एवं सड़कों पर गरीब, मध्यम वर्ग और अमीर, शहरी निवासी और ग्रामीण निवासी के बीच असल मायने में फर्क न हो।

हम एक ऐसी सामाजिक सुरक्षा प्रणाली की कल्पना करते हैं जो सबसे गरीब से लेकर सबसे अमीर तक के लिए निर्बाध रूप से कार्य करे। जिन लोगों को अंतरण की आवश्यकता है, से लेकर उन लोगों तक जो कर देते हैं। एक शुद्ध आय अंतरण प्रणाली जो काम के लिए प्रोत्साहन और आय में ईमानदारी से गिरावट से समझौता किए बिना इस कहावत को लागू करती है, "प्रत्येक से उसकी क्षमता के अनुसार, प्रत्येक को उसकी आवश्यकता के अनुसार"। एक ऐसी प्रणाली जो यह सुनिश्चित करे कि प्रत्येक नागरिक उसका हिस्सा है और उसके साथ न तो एक ओर याचक की तरह व्यवहार किया जाए, न ही दूसरी ओर संभावित अपराधी की तरह।[5]

---

[1] उदाहरण के लिए, खुली सीवेज नालियां बनाम सेप्टिक टैंक या सीवेज पाइप; ग्रामीण बनाम शहरी क्षेत्रों या शहरी क्षेत्रों की मलिन बस्तियों में शिक्षकों और डॉक्टरों की भिन्न गुणवत्ता।

[2] सड़कों और राजमार्गों, न्यायिक प्रणाली, आंतरिक सुरक्षा एवं पुलिस और रक्षा के क्षेत्र में बराबर। “निजी वस्तुओं” के उदाहरण के लिए अगला फुटनोट देखें। स्वास्थ्य संविधान की राज्य सूची में है।

[3] "सार्वजनिक स्वास्थ्य" को निमोनिया, हृदय संबंधी समस्याएं, कैंसर, किडनी और अन्य अंगों के रोग और विफलताएं जैसे "व्यक्तिगत स्वास्थ्य" मुद्दों से अलग किया जाना चाहिए। इनके लिए, समाज और सरकार के पास भिन्न स्वास्थ्य प्रणालियों (यूके, कनाडा, यूरोप, यूएसए) या निजी-सार्वजनिक भागीदारी संस्करण का विकल्प है, जो कर अदा करने की हमारी क्षमता और कर संसाधनों की मांग के अनुकूल है।

[4] इसके लिए राज्य में प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक स्वास्थ्य केन्द्रों की आवश्यकता होती है जो मरीजों और बीमा कंपनियों के लिए विश्वसनीय स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करें। सार्वभौमिक ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी के प्रावधान के साथ, टेलीमेडिसिन सार्वभौमिक व्यक्तिगत स्वास्थ्य बीमा को व्यवहार्य बना देगा।

[5] कर-अंतरण प्रणाली का आधार डिजिटल, एआई समर्थित कर प्रणाली (पीआईटी, जीएसटी, सीमा शुल्क) होगी, जो कौटिल्य की अवधारणा को साकार करेगी, जो मधुमक्खी द्वारा फूल से शहद चूसने के समान है।

निम्न मध्यम आय वाला देश होने के कारण, औसत भारतीय नागरिकों की आय और "जीवन की गुणवत्ता" तथा उच्च मध्यम और उच्च आय वाले देशों के नागरिकों की आय और "जीवन की गुणवत्ता" के बीच एक बड़ा अंतर है। हम 2050 में ऐसे भारत की कल्पना करते हैं, जिसमें यह अंतर समाप्त हो जाएगा, ताकि भारतीय महानगर और सड़कों, सार्वजनिक और व्यावसायिक स्थानों पर रहने वाले लोग अमेरिका, यूरोप या एशिया के किसी भी शहर में रहने वाले लोगों की तरह खुशहाल दिखें। यह एक ऐसा भारत होगा, जहां एनआरआई और पीआईओ वापस आकर बसने के लिए उत्सुक होंगे तथा यहां अपने बच्चों को पढ़ने और काम करने के लिए भेजेंगे।

हम एक ऐसे भारत की कल्पना करते हैं जो विश्व में तीसरा सबसे शक्तिशाली देश हो, जो न तो किसी देश के सामने अपना सिर झुकाए और न ही किसी देश को नीची नजर से देखे। एक ऐसा भारत जो अधिनायकवादी हमलावरों को रोकता हो और अंतरराष्ट्रीय मंचों और संगठनों में निम्न आय और निम्न मध्यम आय वाले देशों की आवाज को उठाता हो। परवर्ती का एक उदाहरण यह है कि भारत ने सदैव अन्य विकासशील देशों को उनकी आवश्यकताओं और अपेक्षाओं के आधार पर उच्च गुणवत्ता वाली विदेशी सहायता (अनुदान और ऋण) प्रदान की है, विशेष इनायत या लगान प्राप्त करने का प्रयास किए बगैर, जैसा कि अन्य देशों ने किया है। जैसे-जैसे भारत की आय और संसाधन बढ़ेंगे, वह इस सहायता को बढ़ाने में सक्षम हो सकेगा। भारत वर्तमान में पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, लेकिन कुछ वर्षों में यह तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, एक संभावित महाशक्ति बन जाएगा, जो 2050 तक एक संभावित सुपर पावर बनने की आधी राह है।[6]

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सतत, तीव्र, समावेशी, हरित विकास आवश्यक शर्त है। समावेशी विकास सभी के लिए निजी आय उत्पन्न करता है और साथ ही सरकारी राजस्व भी उत्पन्न करता है, जो इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक सार्वजनिक और अर्ध-सार्वजनिक वस्तुएं तथा सुरक्षा जाल उपलब्ध कराने के लिए महत्वपूर्ण है।

3. वैश्विक रुझान

3.1 जनसांख्यिकी

जनसांख्यिकीय परिवर्तन वैश्विक तुलनात्मक लाभ में परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण चालक है। 1960 के दशक से भारत अपने जनसांख्यिकीय लाभांश का उपयोग पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया के देशों की तरह नहीं कर पाया है। पिछले 30 वर्षों में अधिकांश उच्च आय वाले देशों (एचआईसी) और कई उच्च मध्यम आय वाले देशों (यूएमआईसी) की कार्यशील आबादी में गिरावट आई है, जबकि भारत की कार्यशील आबादी में वृद्धि हुई है **(तालिका 1)**। 2050 तक संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, जर्मनी

[6] हम शक्ति को आर्थिक शक्ति के वीआईपीई सूचकांक से मापते हैं और उसे महाशक्ति मानते हैं जिसके पास सबसे मजबूत आर्थिक शक्ति का वीआईपीई 25 प्रतिशत से अधिक हो और उसे सुपर पावर मानते हैं जिसके पास सबसे मजबूत आर्थिक शक्ति का वीआईपीई 50-60 प्रतिशत से अधिक हो। अनुमान है कि भारत 2030 तक संभावित महाशक्ति तथा 2050 तक संभावित सुपर पावर की इस तकनीकी कसौटी को पूरा कर लेगा।

जैसे सबसे बड़े विकसित देशों की कार्यशील आयु वाली आबादी की वैश्विक हिस्सेदारी में कमी आएगी, जबकि भारत की हिस्सेदारी में 0.3 प्रतिशत की वृद्धि होगी। कार्यशील आयु वाली आबादी में पश्चिमी यूरोप की हिस्सेदारी -0.6% पॉइंट तक घट जाएगी तथा इटली, फ्रांस और ब्रिटेन की हिस्सेदारी कम हो जाएगी। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि चीन, जो कि कारक संपदा के मामले में भारत का सीधा प्रतिद्वंदी है, 2050 तक वैश्विक कार्यबल में अपनी हिस्सेदारी का 7.8 प्रतिशत खो देगा, जिससे चीन से भारत में श्रम गहन उत्पादन को आकर्षित करने का अवसर मिलेगा। निम्न-मध्यम कौशल गहन विनिर्माण के लिए सभी संभावित (यूएमआईसी और एलएमआईसी) प्रतिस्पर्धी भी हिस्सेदारी खो देंगे **(तालिका 1)**।

तालिका 1: कार्यशील आयु वाली आबादी की हिस्सेदारी और परिवर्तन

Country share of World's 20-59 yr olds (WAP)					
	Change in share(%pt)		Share of world WAP (%)		
	2020-1990	2050-2020	1990	2020	2050
High income countries (HICs)					
USA	-1.0	-0.5	5.3	4.2	3.8
W Europe	-1.4	-0.6	3.8	2.4	1.8
UK	-0.3	-0.1	1.2	0.8	0.7
Japan	-1.3	-0.6	2.7	1.5	0.9
S Korea	-0.2	-0.4	1.0	0.7	0.4
Taiwan	-0.1	-0.1	0.4	0.3	0.2
Upper middle income countries (UMICs)					
China	-3.4	-7.8	23.5	20.1	12.3
Russia	-1.2	-0.7	3.1	1.9	1.3
Thailand	-0.1	-0.4	1.1	1.0	0.6
Indonesia	0.3	-0.2	3.3	3.6	3.5
Mexico	0.3	-0.1	1.4	1.6	1.5
Lower Middle Income countries (LMICs)					
Viet nam	0.2	-0.2	1.1	1.3	1.1
India	**2.9**	**0.3**	**15.4**	**18.3**	**18.6**

स्रोत : संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या डेटा और अनुमान (2022)। लेखकों की गणना में 15-19 आयु वर्ग को इस धारणा के आधार पर कार्यशील आयु वाली आबादी से बाहर रखा गया है कि वे शिक्षा और नौकरी योग्य कौशल प्राप्त करने में व्यस्त होंगे

हालांकि, अफ्रीका में श्रमबल के विस्तार के कारण अगले 10-15 वर्षों में कम कौशल वाले श्रम गहन उत्पादन में भारत का वर्तमान लाभ समाप्त हो जाएगा। इसलिए, अगले 30 वर्षों में भारत का तुलनात्मक लाभ अर्ध-कुशल या मध्यम कौशल वाले श्रम गहन विनिर्माण और सेवाओं की ओर शिफ्ट हो जाएगा। 2020 में भारत के कुल श्रमबल में शिक्षित और कुशल श्रमिकों का कम अनुपात 2035 तक भारत की हिस्सेदारी को दोहरे अंकों तक बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है।

ऊपर उल्लिखित देशों के लिए कुल श्रमबल में हिस्सेदारी के साथ-साथ कुशल श्रमबल की वैश्विक हिस्सेदारी में भी गिरावट आएगी। इसके अलावा, कोरिया गणराज्य, ब्राजील, शेष उत्तरी और दक्षिण अमेरिका के शिक्षित और कुशल श्रमबल की हिस्सेदारी में भी गिरावट आएगी। पिछले कुछ दशकों में उभरती अर्थव्यवस्थाओं में बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा अनुसंधान एवं विकास में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है तथा इस विविधीकरण के प्रमुख लाभार्थी इजरायल, भारत और चीन हैं।

जनसांख्यिकी का तीसरा पहलू आबादी का वृद्ध होना है। उन देशों को छोड़कर जिनमें कुल और कार्यशील आयु वाली आबादी बढ़ रही है, कार्यशील आयु वाली आबादी की तुलना में बुजुर्गों की आबादी का अनुपात बढ़ेगा, 30 वर्षों में चीन की कार्यशील आयु वाली आबादी की तुलना में बुजुर्गों की आबादी तीन गुना बढ़ जाएगी, जो 2020 में 30.5 प्रतिशत से बढ़कर 2050 में 84 प्रतिशत हो जाएगी। इस अवधि में भारत की भी कार्यशील आयु वाली आबादी की तुलना में बुजुर्गों की आबादी 18.7 प्रतिशत से दोगुनी होकर 38.7 प्रतिशत हो जाएगी, लेकिन यह चीन की तुलना में आधी से भी कम रहेगी। आयु संबंधी स्वास्थ्य सेवाओं, औषधियों और फार्मास्यूटिकल्स तथा चिकित्सा उपकरणों का तेजी से विस्तार होगा।

भारत विश्व के लिए हाइब्रिड स्वास्थ्य सेवाओं (ऑनलाइन और ऑफलाइन), दवाओं और चिकित्सा उपकरणों का प्रमुख प्रदाता बन सकता है। तकनीशियनों, नर्सों, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य चिकित्सकों तथा स्पीच थेरेपिस्ट जैसे विशिष्ट कौशल वाले लोगों का प्रशिक्षण आवश्यक होगा।

महामारी के कारण, अगले पांच वर्षों में सार्वजनिक स्वास्थ्य और सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा के मुद्दे छाए रहेंगे। लेकिन भारत 2035 तक विश्व की फार्मेसी बनने की स्थिति में है। विनियामक लागत को न्यूनतम करने और सार्वजनिक स्वास्थ्य लाभ को अधिकतम करने के लिए सरकार को औषधि अनुसंधान, खोज, परीक्षण, अनुमोदन और उत्पादन के बाद मूल्य निर्धारण की संपूर्ण प्रक्रिया का पेशेवर ढंग से विनियमन करना चाहिए।

3.2 डिजिटलीकरण और फिजिटल अर्थव्यवस्था

2050 के भारत के लिए दो अन्य वैश्विक रुझान विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। डिजिटलीकरण और हरित अर्थव्यवस्था। विकसित देश और चीन भारत की तुलना में बहुत तेजी से डिजिटलीकरण कर रहे हैं। आधार, यूपीआई, ओएनडीसी, डिजी लॉकर और वित्तीय एवं स्वास्थ्य स्टैक जैसी डिजिटल अवसंरचना का विकास करने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए महत्वपूर्ण कदमों को व्यापक और त्वरित बनाने की आवश्यकता है। महामारी ने दुनिया भर में और भारत में डिजिटलीकरण को बहुत बढ़ावा दिया है; पिछले कुछ वर्षों में दूर से काम करना और घर से काम करना, तथा ओवर दि वायर सर्विस की वैश्विक मांग-आपूर्ति और सेवाओं का निर्यात सैकड़ों प्रतिशत बढ़ा है और अगले दशकों में भी तेजी से बढ़ता रहेगा। सरकार द्वारा टेक उद्यमियों को उपलब्ध कराए गए सहायक वातावरण के साथ, भारत इस अंतर को पाट सकता है और उसे ऐसा करना भी चाहिए, तथा घर से काम करने और कहीं से भी काम करने जैसी नई संभावनाओं से लाभ उठा सकता है।

ऐसी आबादी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा, कौशल, स्वास्थ्य और सरकारी सेवाएं प्रदान करने के लिए मानव और सामाजिक सेवाओं का डिजिटल प्रावधान महत्वपूर्ण होगा, जो यूरोप और उत्तरी अमेरिका के महाद्वीपों की संयुक्त आबादी से भी अधिक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और विशेषज्ञ प्रणालियों के रुझान इस प्रक्रिया के पूरक होंगे। प्रत्यक्ष मानव संपर्क और सामाजिककरण के लाभों तथा कुछ लोगों द्वारा अनेक लोगों को डिजिटल माध्यम से प्रदान की जाने वाली बेहतर गुणवत्ता वाली सूचना और ज्ञान के बीच संतुलन को अनुकूलतम बनाने के लिए भारत में हाइब्रिड मॉडल विकसित किए जाएंगे।

"घर से काम करने (डब्ल्यूएफएच)" की प्रवृत्ति घर से बाहर काम करने में महिलाओं के सामने आने वाले सामाजिक भेदभाव को दूर करने का एक तरीका प्रदान करती है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में। कहीं से भी काम करने (डब्ल्यूएफए) की प्रवृत्ति भारत और विश्व में कौशल की मौजूदा और उभरती कमी को दूर करने का अवसर प्रदान करती है। भारत को उच्च शिक्षित महिलाओं की अप्रयुक्त क्षमता का तत्काल उपयोग करना चाहिए, जो अपने घरों में ही बंद हैं या छोटे गृहनगरों तक सीमित हैं, जहां उच्च शिक्षित महिलाओं के लिए नौकरी की संभावनाएं बहुत कम हैं।

3.3 जलवायु परिवर्तन

अनुमान लगाया गया है कि ऐतिहासिक रूप से भारत का कार्बन स्पेस का उपयोग 52जीटी (1850-2019 के दौरान) है, जो 2 डिग्री वार्मिंग परिदृश्य के तहत उपलब्ध कुल कार्बन स्पेस का लगभग 1.3 प्रतिशत है। भारत का प्रति व्यक्ति उत्सर्जन वैश्विक औसत का लगभग एक तिहाई है। सरकार ने 2005 से 2030 के बीच कार्बन तीव्रता को 45 प्रतिशत तक कम करने तथा वन एवं वृक्ष आवरण को बढ़ाने का लक्ष्य रखा है, ताकि 2030 तक 2.5-3.0 बिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड समतुल्य को अवशोषित किया जा सके।

भारत की पर्यावरणीय चुनौतियाँ इसकी जनसंख्या के पैमाने, विविधता और भौगोलिक फैलाव तथा विविध मौसम/पर्यावरणीय स्थितियों से संबंधित हैं। वायु, भूमि, जल प्रदूषण और भूमिगत जलाशयों के खाली होने से संबंधित चुनौतियों के अलावा, भारतीय मौसम पर वैश्विक जलवायु परिवर्तन का प्रभाव भी जुड़ गया है। यूरोपीय संघ, जापान और अमेरिका के विपरीत, हमें गर्म मौसम और वाष्पीकरण की अधिक बड़ी समस्या का सामना करना पड़ता है। गर्मियों में शीतलन और प्रशीतन की आवश्यकता बहुत अधिक होती है।

भारत ने इस चुनौती का सामना करने का निर्णय लिया है; इसने नवंबर 2021 में सीओपी 26 में 2070 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन प्राप्त करने के अपने लक्ष्य की घोषणा की है। भारत ने इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया है, जिसमें सौर ऊर्जा और इलेक्ट्रिक वाहनों पर सक्रिय रुख शामिल है, हम हरित अर्थव्यवस्था की ओर रुझान द्वारा खोले गए नए क्रियाकलापों की पूरी श्रृंखला में भाग लेने के लिए तैयार हो रहे हैं। शहरी नियोजन और आवास की डिजाइन ऐसी होनी चाहिए जो अर्थव्यवस्था पर कार्बन नियंत्रण और संयम की लागत को न्यूनतम करे। जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम संबंधी असामान्य परिस्थितियां भी उत्पन्न हो रही हैं, जिनका पूर्वानुमान लगाया जाना चाहिए तथा सरकारी कार्यक्रमों एवं परियोजनाओं तथा ग्रामीण एवं शहरी मकानों के डिजाइन में

इन्हें शामिल किया जाना चाहिए। प्रणालियों के बेहतर डिजाइन तैयार करने के लिए प्रोत्साहन और पर्यावरणीय क्षरण के लिए हतोत्साहन का एक इष्टतम संयोजन उभर कर सामने आएगा।

3.4 वैश्वीकरण, वि-वैश्वीकरण और डी-रिस्किंग

वैश्विक वित्तीय संकट के साथ शुरू हुई वि-वैश्वीकरण की प्रवृत्ति विश्व स्तर पर सकल घरेलू उत्पाद की तुलना में वैश्विक वस्तु निर्यात के अनुपात में गिरावट की प्रवृत्ति के साथ जारी है **(चित्र 1)**।[7] हालाँकि, व्यापारिक निर्यात में चीन की हिस्सेदारी में वृद्धि जारी रही, जो 2009 में 9% से बढ़कर 2021 में 15% हो गई।

चित्र 1 : व्यापारिक वस्तुओं के व्यापार का वैश्वीकरण एवं वि-वैश्वीकरण

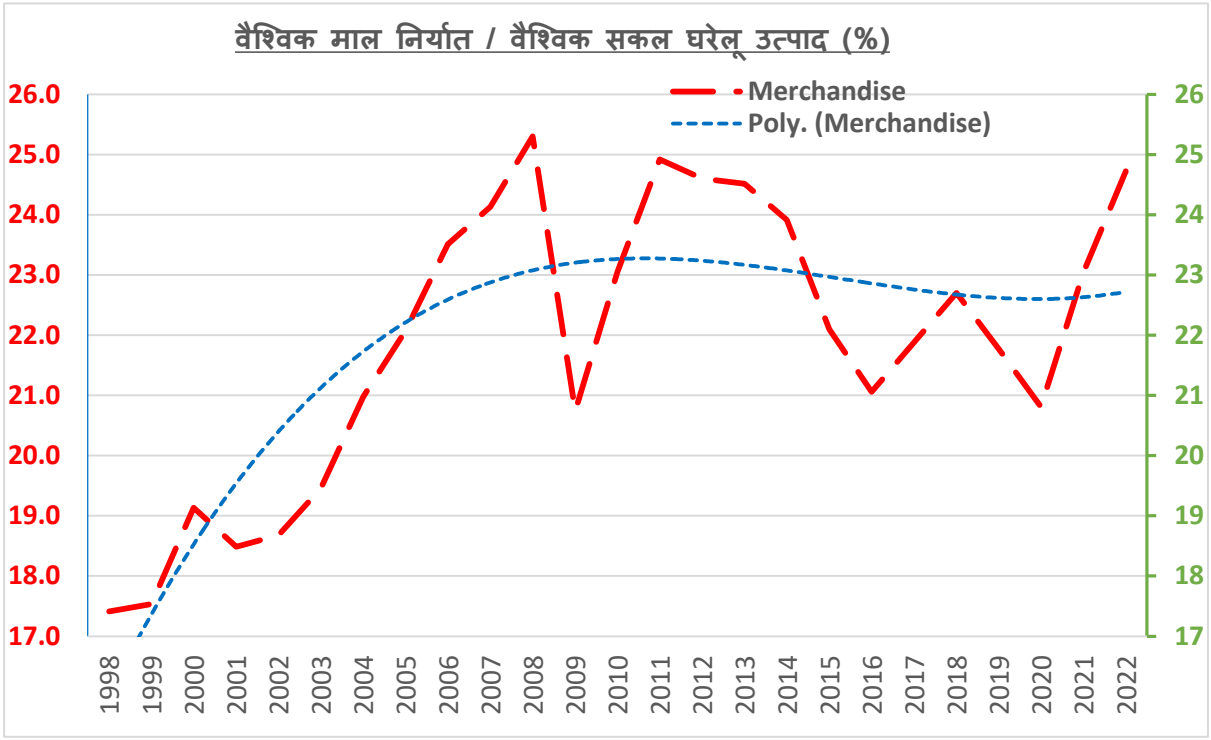

स्रोत: विश्व बैंक, डब्ल्यूडीआई डाटा बेस। लेखक की गणना। पॉली चर में गणना की गई बहुपद प्रवृत्ति है

विनिर्मित निर्यात में इसकी हिस्सेदारी और भी तेज़ गति से बढ़ी है, जो 2009 में 12% से बढ़कर 2021 में 20.5% हो गई है **(चित्र 2)**। 2001 में चीन के विश्व व्यापार संगठन में शामिल होने तक अमेरिका, जर्मनी और जापान विश्व में शीर्ष तीन निर्यातक थे। वैश्विक निर्मित निर्यात में संयुक्त राज्य अमेरिका की हिस्सेदारी 1968 तक सबसे अधिक थी, जिसके बाद जर्मनी ने संयुक्त राज्य अमेरिका को पीछे छोड़ दिया। जर्मनी की बढ़त 1992 तक रही, जिसके बाद अमेरिका ने 2003 तक पुनः शीर्ष स्थान प्राप्त कर लिया। युद्धोत्तर काल के दौरान मुक्त व्यापार और औद्योगिक नीति के प्रति अमेरिका का दृष्टिकोण भिन्न रहा है। 1980 के दशक में जापानी निर्यात में वृद्धि के कारण

[7] हालांकि, जीएफसी (2008) के बाद विश्व स्तर पर सकल घरेलू उत्पाद की तुलना में सेवाओं का अनुपात भी बढ़ता रहा और 2019 में 6.55% के शिखर पर पहुंच गया। महामारी के कारण 2020 में इसमें गिरावट आई है, तथा 2022 में यह विश्व स्तर पर सकल घरेलू उत्पाद का 6.2% हो गया।

अमेरिका ने जापानी ऑटोमोबाइल निर्यात पर स्वैच्छिक निर्यात प्रतिबंध (वीईआर) लगा दिए थे, जिसके बाद प्लाजा समझौते (1985) हुए, जिन्हें कई लोगों ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के तीन दशकों के दौरान अमेरिका द्वारा प्रचारित ख़ालिस मुक्त व्यापार की नीतियों के उलट माना था। मुक्त व्यापार की आड़ में दो दशकों तक चीन के विनिर्माण निर्यात में वृद्धि को सुगम बनाने के बाद, अब चक्र का एक और मोड़ सामने है।

चित्र 2 : विश्व विनिर्माण निर्यात में हिस्सेदारी - अमेरिका, जर्मनी, चीन

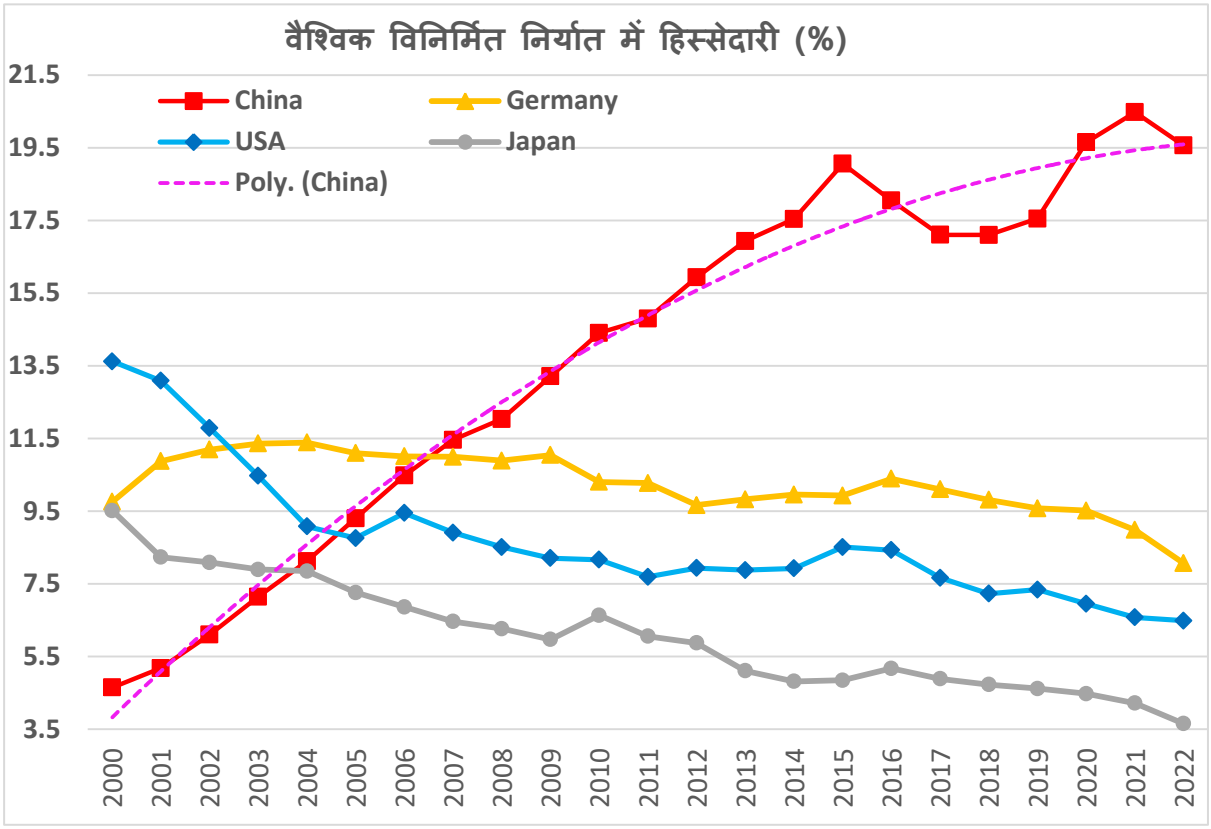

स्रोत : विश्व बैंक, डब्ल्यूडीआई डाटा बेस। लेखक की गणना। पॉली अनुमानित है

चीन के विनिर्माण निर्यात की सफलता का कारण निर्यात आधारित, आयात प्रतिस्थापन, अवसंरचना संचालित (ईएलआईएसआईडी) नीति है, जिसे 1980 के दशक के मध्य से 1990 के दशक के प्रारंभ तक अपनाया गया। चीन ने 1990 के दशक में एमएनई/एमएनसी के प्रमुख निवेशकों के लिए लाल कालीन बिछा दिया था तथा पूर्वी प्रांतों द्वारा कुछ ही महीनों में पूर्ण विकसित औद्योगिक अवसंरचना और कनेक्टिविटी उपलब्ध करा दी गई थी। 1990 के दशक के अंत और 2000 के दशक के प्रारंभ में इन उद्यमों से निर्यात में उछाल आने के बाद, निवेश का जोर आयात प्रतिस्थापन और रियल एस्टेट की ओर शिफ्ट हो गया। (2) 2001 में विश्व व्यापार संगठन में शामिल होने के बाद रिवर्स इंजीनियर एंड डेवलप (एसआरईएडी) नीति शुरू की गई।[8] चीन की समाजवादी बाजार अर्थव्यवस्था एक ऐसा

[8] एस उन प्रणालियों को संदर्भित करता है जिनका उपयोग एफडीआई निवेश वाले उद्यमों पर इस बात का दबाव डालने के लिए किया जाता है कि वे अपनी प्रौद्योगिकी घरेलू कंपनियों और विकसित देशों और साइबर स्पेस में पीआरसी के व्यापक वाणिज्यिक खुफिया नेटवर्क को सौंप दें।

वातावरण प्रदान करती है जिसमें प्रांतीय कम्युनिस्ट पार्टियों के स्वामित्व वाली और/या उनके द्वारा समर्थित कंपनियां प्रमुख रिवर्स इंजीनियरिंग और विकास करने वाले केंद्रीय स्वामित्व वाले प्रौद्योगिकी संस्थानों से प्रौद्योगिकी प्राप्त करने के बाद अन्य प्रांतों की कंपनियों के साथ जमकर प्रतिस्पर्धा करती हैं। इन नीतियों को पश्चिम की मुक्त व्यापार विचारधारा और आंशिक रूप से चीन की विषम व्यापारिक औद्योगिक नीति की सफलता से प्रोत्साहन मिला।

2018-19 से आयातक देशों को एक ऐसे देश पर निर्भर रहने के जोखिम का एहसास होने लगा है, जिसका कई विनिर्मित निर्यातों, विशेष रूप से दूरसंचार उपकरण, स्वचालित डेटा प्रसंस्करण मशीनों और इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों पर परोक्ष रूप से एकाधिकार है (तालिका 2)।

तालिका 2 : विश्व स्तर पर विनिर्मित निर्यात में चीन की हिस्सेदारी, 2021 (%)

उत्पाद	**हिस्सेदारी**
मिट्टी के बर्तन	67.4%
लाइटिंग के जुड़नार और फिटिंग	67.4%
बच्चे की गाड़ियाँ, खिलौने, खेल और खेल के सामान	59.0%
आधार धातु से बने घरेलू उपकरण	57.7%
प्रीफ़ैब बिल्डिंग, सैनिटरी, हीटिंग और लाइटिंग के जुड़नार	55.7%
बुने हुए कपड़े, मानव निर्मित कपड़े	55.4%
बुने हुए या क्रोकेटेड कपड़े	53.8%
टेक्सटाइल सामग्री से बनी हुई वस्तुएं	48.5%
ट्रेलर और अर्ध-ट्रेलर	48.5%
बुने हुए सूती कपड़े	48.4%
कटलरी	45.8%
स्वचालित डेटा प्रोसेसिंग मशीन	44.0%
ट्यूल्स, ट्रिमिंग, लेस, रिबन और अन्य छोटे सामान	43.3%
बिजली से चलने या न चलने वाले घरेलू प्रकार के उपकरण	42.7%
टेक्सटाइल फेब्रिक से बने कपड़े के सामान	42.1%
महिलाओं के टेक्सटाइल से बने, बुने हुए या क्रोकेटेड कपड़े	40.9%
ऑप्टिकल उपकरण और उपस्कर	40.1%
दूरसंचार उपकरण और पार्ट्स	39.9%

यात्रा के सामान, हैंडबैग, आदि	37.2%
ध्वनि रिकॉर्डर या पुनरुत्पादक	36.9%
रेडियो-प्रसारण रिसीवर, चाहे संयुक्त हों या नहीं	36.6%
टेलीविजन रिसीवर, चाहे संयुक्त हों या नहीं	35.9%
कपड़ा को छोड़कर परिधान के सामान, कपड़ों के साजोसामान	35.4%
मोटरसाइकिल और साइकिल	35.0%
स्रोत: यूएन कॉमट्रेड डेटा। लेखक की गणना	

महामारी के दौरान और उसके बाद (2020-2021) चीन से जुड़ी आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्यवधान के बाद यह धारणा और बढ़ गई है। चीन से बाहर विनिर्माण आपूर्ति श्रृंखलाओं के विविधीकरण के स्थान के रूप में भारत के सापेक्ष लाभ को भी पहचान मिली है। 2017 से 2022 के बीच अमेरिकी आयात में चीन की हिस्सेदारी घटी है, जबकि भारत की हिस्सेदारी बढ़ी है। विश्व बैंक (2023) के एक अध्ययन से पता चलता है कि भारत की हिस्सेदारी में वृद्धि वियतनाम, ताइवान, कनाडा और मैक्सिको के बाद 5वीं सबसे अधिक होगी।[9]

भारत चीन के अनुभव से सीख सकता है और विनिर्मित निर्यात पर चीन के एकाधिकार को कम करने के लिए उसी नीति का उपयोग कर सकता है **(तालिका 2)**। मुख्य सबक बुनियादी ढांचे, विदेशी निवेश, निर्यात-आयात, चरणबद्ध विनिर्माण और प्रौद्योगिकी रिवर्स इंजीनियरिंग और विकास नीतियों का एकीकरण है। भारत को अमेरिका और यूरोपीय संघ की एमएनसी/एमएनई के लिए लाल कालीन बिछाना होगा ताकि आधी सदी में जो खोया है उसकी भरपाई जल्दी से जल्दी हो सके।

इसके लिए सम्पूर्ण अवसंरचना, औद्योगिक, व्यापार और प्रौद्योगिकी नीतियों को एकीकृत करने के लिए सावधानीपूर्वक तैयार और क्रियान्वित की गई योजना की भी आवश्यकता है, ताकि चीनी-भारतीय संयुक्त उद्यमों द्वारा उत्पादित वस्तुओं के घरेलू उत्पादन से चीन से मध्यवर्ती और पूंजीगत वस्तुओं के आयात को प्रतिस्थापित किया जा सके तथा भारत-चीन संयुक्त उद्यमों से सीखे गए कौशल और प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए भारतीय कंपनियों से पूर्ण प्रतिस्पर्धा की जा सके।

पिछले 20-30 वर्षों में उच्च आय वाले विकसित देशों (एचआईडीसी) से उन्नत प्रौद्योगिकी का चीन में बड़े पैमाने पर रिसाव की खोज तथा ट्रोजन और मैलवेयर के प्रवेश की उच्च संभावना वाले दूरसंचार उपकरणों, एडीपी मशीनों और इलेक्ट्रॉनिक्स वस्तुओं (आईओटी) के आयात पर अत्यधिक निर्भरता ने राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर चिंताएं उत्पन्न कर दी हैं।[10] इससे भारत में विनिर्माण मूल्य

[9] "क्या अमेरिकी व्यापार नीति वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को नया आकार दे रही है?", फ्रायंड, मट्टू, मुलाब्दिक और रूटा, नीति अनुसंधान वर्किंग पेपर संख्या 10593, विश्व बैंक, ईएएंडपी, अक्टूबर 2023

[10] 2000 के दशक में विकसित एसआरईएडी रणनीति "मेड इन चाइना, 2025" योजना (2015) के माध्यम से 2010 के दशक के मध्य में उच्च प्रौद्योगिकी पर केंद्रित थी। हाल ही में, यह पाया गया है कि विद्युत और यांत्रिक मशीनरी एवं उपकरण जैसे गैर-इलेक्ट्रॉनिक

श्रृंखलाओं में विविधता लाने का आकर्षण बढ़ जाता है। अमेरिका-भारत आईसीईटी सामरिक एवं दोहरे उपयोग वाली प्रौद्योगिकी के संबंध में विश्वास का प्रतीक है। यह सॉफ्टवेयर से जुड़ी मूल्य श्रृंखलाओं के लिए विशेष रूप से आकर्षक है, क्योंकि सॉफ्टवेयर समाधान में अनुसंधान एवं विकास के लिए भारत पहले से ही आकर्षक गंतव्य है।

मितव्ययिता और दायरे के संदर्भ में चीन की तुलना में भारत के तुलनात्मक नुकसान को नई उत्पादन संबद्ध प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना द्वारा आंशिक रूप से दूर किया जा रहा है, लेकिन अन्य बाधाओं और उच्च तकनीक शिक्षा और कौशल के संबंध में काफी कुछ करना होगा। ऑनलाइन शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रक्रियाएं तथा विशेषज्ञ प्रणालियां ही कम समय में भारत की बड़ी आबादी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल प्रदान करने का एकमात्र तरीका है।

3.5 तुलनात्मक लाभ

भारत की जनसंख्या का आकार और आर्थिक विविधता का अर्थ है (क) किसी भी प्रकार या गुणवत्ता के कौशल में कुशल श्रम की उपलब्धता मध्यम आय वाले किसी भी प्रतिस्पर्धी की तुलना में अधिक है और उन सभी की कुल उपलब्धता से भी अधिक हो सकती है। (ख) 28 विभिन्न राज्यों में से कुछ राज्यों को कृषि में, अन्य को विनिर्माण में तथा शेष को विभिन्न प्रकार की सेवाओं में तुलनात्मक लाभ है (या हो सकता है)। यह कृषि वस्तुओं के निर्यात और विभिन्न प्रकार की व्यावसायिक एवं पेशेवर सेवाओं में परिलक्षित होता है, जिसमें बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए अनुसंधान एवं विकास करने वाले वैश्विक क्षमता केंद्र शामिल हैं। हालाँकि, यदि राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य से देखा जाए तो भारत का समग्र तुलनात्मक लाभ 2020-35 के दौरान कम कुशल श्रम गहन और मध्यम/अर्ध कुशल श्रम गहन विनिर्माण से 2030-45 के दौरान मध्यम/अर्ध कुशल विनिर्माण और (उच्च) कुशल सेवाओं में शिफ्ट हो जाएगा।

जैसे-जैसे विकसित देशों और उभरती अर्थव्यवस्थाओं की कार्यशील आबादी में कमी आएगी **(तालिका 1)**, उनके अर्ध कुशल और कुशल श्रमबल का हिस्सा घटेगा, पूंजी की लागत के सापेक्ष कुशल श्रम की लागत बढ़ेगी। इसलिए इन देशों का तुलनात्मक लाभ रोबोटिक्स, स्वचालित मशीन और स्वचालित उत्पादन लाइन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन लर्निंग प्रणाली जैसे उच्च तकनीक वाले पूंजी गहन उत्पादों की ओर शिफ्ट हो जाएगा। भारत को स्वचालन के संबंध में इन देशों की नकल करने की आवश्यकता नहीं है, परंतु वह अपने कुशल श्रमबल की गुणवत्ता बढ़ाने तथा अपनी पहुंच और प्रभावशीलता का विस्तार करने के लिए एआई और मशीन लर्निंग का उपयोग कर सकता है। अनुसंधान से पहले ही पता चल गया है कि कुछ व्यवसायों में, कम कुशल व्यक्ति मध्यम कौशल स्तर पर और मध्यम कौशल वाले व्यक्ति उच्च कौशल स्तर पर प्रदर्शन करने के लिए एआई का उपयोग कर सकते हैं। इससे भारत को अफ्रीका और पश्चिम एशिया में तेजी से बढ़ रहे श्रमबल तथा चीन सहित अमेरिका, यूरोप और पूर्वी एवं दक्षिण पूर्व एशिया में घटते श्रमबल वाले देशों के बीच संभावित रूप से अद्वितीय प्रतिस्पर्धात्मक लाभ मिलेगा।

उपकरणों में भी इलेक्ट्रॉनिक घटक लगे हुए हैं, जिनका उपयोग उपकरण को निष्क्रिय करने के लिए किल स्विच के रूप में किया जा सकता है।

इस तुलनात्मक लाभ के दोहन का एक महत्वपूर्ण पहलू श्रमबल में महिलाओं की भागीदारी है। भारत की समग्र श्रमबल भागीदारी दर (भारत का एलएफपीआर = 55.4%) इसके प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद की अपेक्षा कम है (गुलाबी रेखा, **चित्र 3**), इस तथ्य के बावजूद कि पुरुषों के लिए एलएफपीआर अपेक्षा से बहुत अधिक है (भारत का एलएफपीआर = 79%) (हरी रेखा, **चित्र 3**)। यह भारतीय महिलाओं के एलएफपीआर (30%) में बड़े अंतर के कारण है, जो इसके प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के स्तर पर अपेक्षित अंतर का आधा है। चूंकि पुरुषों का एलएफपीआर पहले से ही बहुत अधिक है, इसलिए भविष्य में इसमें ज्यादा वृद्धि होने की उम्मीद नहीं है। इसलिए निम्न से मध्यम और उच्च कौशल के क्षेत्र में भारत के संभावित तुलनात्मक लाभ के पूर्ण दोहन के लिए महिलाओं के रोजगार में वृद्धि की भूमिका निर्णायक है। हालांकि आने वाले दशकों में फोकस बुनियादी शिक्षा और नौकरी कौशल से हटकर मध्यम कौशल और फिर उच्च कौशल पर शिफ्ट हो जाएगा।

2030 के दशक के पूर्वार्ध में जब भारत उच्च मध्यम आय वाला देश बन जाएगा, तो उसे अपनी अर्थव्यवस्था को पूंजी आधारित अर्थव्यवस्था से कौशल आधारित अर्थव्यवस्था में बदलने की पहल करनी होगी। इसके बाद, जब भारत 2040 के दशक में प्रौद्योगिकी फ्रंटियर के करीब पहुंचेगा, तो इसका तुलनात्मक लाभ नवाचार की ओर शिफ्ट हो जाएगी। इसके लिए नवोन्मेषी उद्यमियों और नवोन्मेषों को विपणन योग्य उत्पादों और सेवाओं में परिवर्तित करने के लिए संबंधित कौशल की आवश्यकता होती है।

चित्र 3: श्रमबल भागीदारी की दरें (कुल, महिला) भारत और विश्व

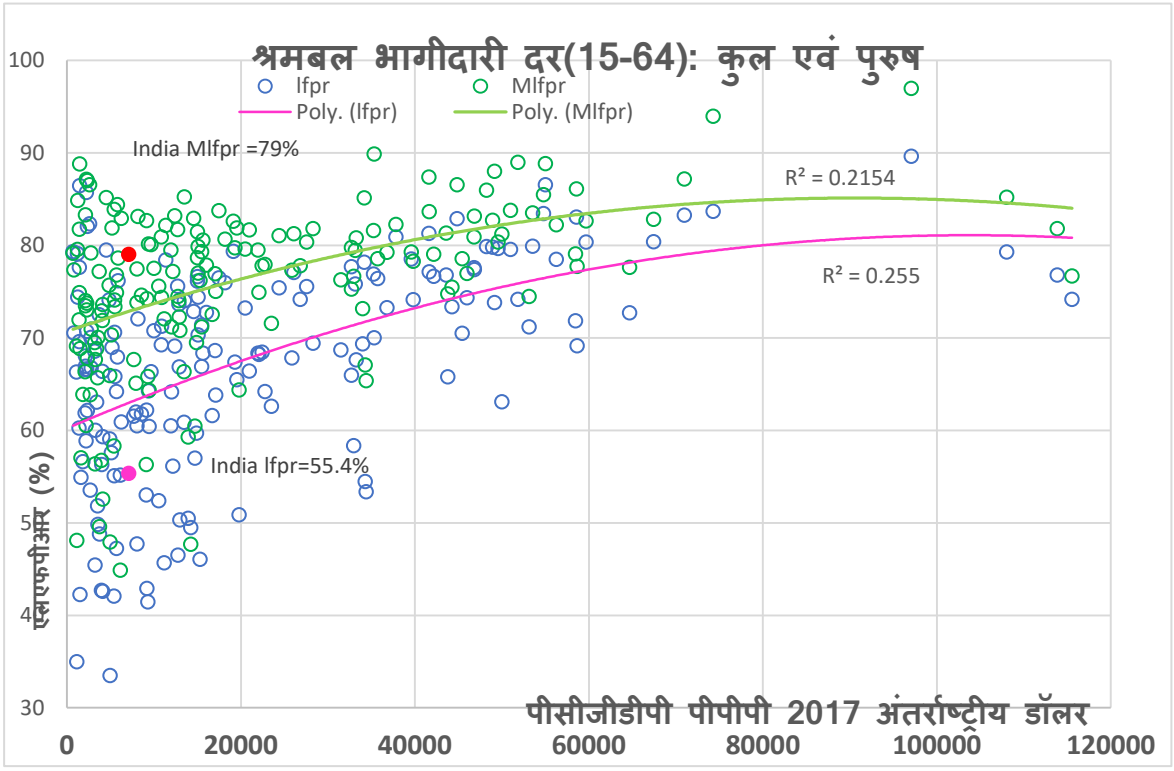

स्रोत : विश्व विकास संकेतक, लेखक के ग्राफ (पुरुष एलएफपीआर के लिए संगत ग्राफ को नहीं दिखाया गया है)

डब्ल्यूआईपीओ (2023) के अनुसार, भारत 2022 में पेटेंट आवेदनों का छठा सबसे बड़ा प्राप्तकर्ता था, जो 2021 से 25% की वृद्धि को दर्शाता है। 2022 के दौरान चीन ने 1,464,605, यूएसए ने 252,316, जापान ने 218,813, कोरिया गणराज्य ने 183,748, ईपीओ ने 984,074 और भारत ने 38,551 पेटेंट दायर किए हैं। यद्यपि भारत एक दशक में या उसके आसपास पेटेंट उत्पादन में तीसरे स्थान पर पहुंचने का लक्ष्य रख सकता है, लेकिन अग्रणी स्तर पर नवाचार को बढ़ावा देने वाला वातावरण सृजित करने के लिए आवश्यक संस्थाओं के निर्माण में लम्बा समय लगता है। भारत को ऐसी संस्थाओं के निर्माण में तेजी लानी चाहिए तथा अपेक्षित तुलनात्मक लाभ उत्पन्न करना चाहिए।

4. अर्थव्यवस्था : विकास और संरचना

4.1 भारतीय अर्थव्यवस्था

भारतीय अर्थव्यवस्था पर समाजवादी नियंत्रण 1970 के दशक में चरम पर था, जबकि कर की दरें 1980 के दशक में चरम पर थीं। 1980 के बाद से क्रमिक आर्थिक सुधार हुए हैं तथा 1947 से 1979 के बीच लगाए गए नियंत्रणों को उदार बनाया गया है। परिणामस्वरूप, अपने स्वयं के अतीत की तुलना में और वैश्विक वृद्धि के सापेक्ष भी प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (पीसीजीडीपी) की वृद्धि दर धीरे-धीरे तेज हुई है (**चित्र 4**)। पीसीजीडीपी में वृद्धि की रुझान 1980 में लगभग 2.2% से बढ़कर लगभग 5.6% हो गई है।[11]

चित्र 4 : वास्तविक प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (पीसीजीडीपी) वृद्धि (%): घरेलू एवं वैश्विक वृद्धि के सापेक्ष

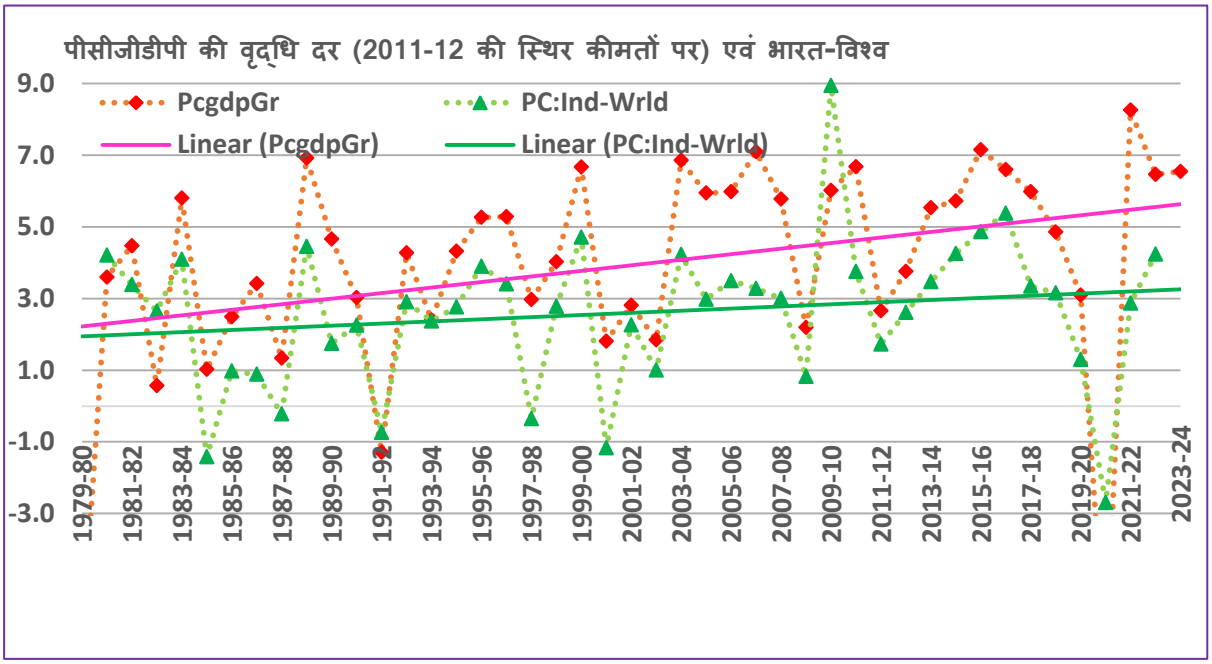

स्रोत : भारतीय रिजर्व बैंक से घरेलू डेटा श्रृंखला, विश्व बैंक, डब्ल्यूडीआई से विश्व तुलनात्मक डेटा (भारत सहित)।

[11] सकल घरेलू उत्पाद की वास्तविक वृद्धि दर 1980 में लगभग 3.8% प्रति वर्ष से बढ़कर 6.5% प्रति वर्ष हो गई है

बढ़ती विकास दर के साथ-साथ वास्तविक मांग की संरचना में भी परिवर्तन हुआ है, जिसमें सकल घरेलू उत्पाद में स्थिर निर्माण (जीएफसीएफ) का हिस्सा बढ़ रहा है तथा निजी अंतिम उपभोग (पीएफसीई) का हिस्सा घट रहा है। वैश्विक वित्तीय संकट के दो वर्ष बाद 2010-11 में जीएफसीएफ में वृद्धि चरम पर थी, जबकि पीएफसीई निम्नतम स्तर पर पहुंच गया (**चित्र 5)**।

अर्थशास्त्रियों ने यह दलील दी है कि बुनियादी ढांचे और कमोडिटी क्षेत्रों के लिए ढीली राजकोषीय नीति और ऋण के शिथिल मानकों के कारण 2010-11 और 2011-12 में सुधार के बाद निवेश में तेजी आई थी; इससे मुद्रास्फीति में वृद्धि हुई, एक छोटा बीओपी संकट और बैलेंस शीट की दोहरी समस्या पैदा हुई, जिसने कई वर्षों तक वित्तीय क्षेत्र को परेशान किया।

चित्र 5 : वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में निजी उपभोग व्यय (पीएफसीई) और सकल स्थिर पूंजी निर्माण (जीएफसीएफ) का हिस्सा

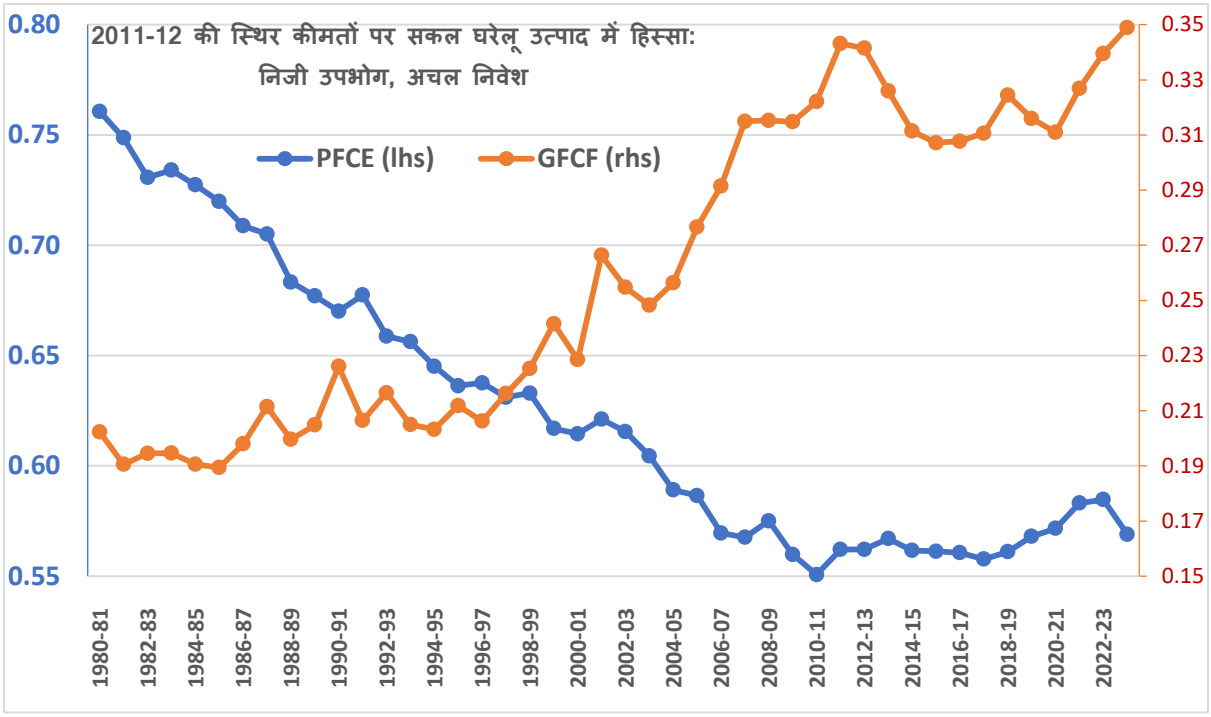

यदि हम ऋण के बुलबुले से प्रेरित निवेश में तेजी और गिरावट के चक्र को ध्यान में रखें, तो ऐसा प्रतीत होता है कि वैश्विक वित्तीय संकट के बाद जीडीपी की तुलना में जीएफसीएफ की वृद्धि दर धीमी हो गई है। वैश्विक वित्तीय संकट के बाद जीडीपी की तुलना में पीएफसीई की वास्तविक वृद्धि दर में गिरावट भी रुक गई है तथा बैलेंस शीट संकट (जिसकी परिणति 2019 में एनबीएफसी डिफॉल्ट के रूप में हुई) और उसके बाद आए झटकों की श्रृंखला के बाद यह अनुपात स्थिर होने की प्रक्रिया में है।

श्रमिक आबादी अनुपात 1983 में 0.65 से घटकर 1993 में 0.63 और 2004 में 0.62 तथा 2011 में 0.55 हो गया (भल्ला, 2024), जो यह दर्शाता है कि सामान्य स्थिति के संदर्भ में 1983-2011 के दौरान नौकरियों की वृद्धि दर आबादी की वृद्धि दर से धीमी थी। आगे के खंडों में नवीनतम आंकड़ों की जांच की जाएगी ताकि यह पता लगाया जा सके कि आज हम कहां खड़े हैं।

जैसा कि **चित्र 4** से स्पष्ट है, भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर में काफी उतार-चढ़ाव होता रहता है। ऐतिहासिक रूप से, सूखा, तेल की कीमतें (1980, 1990, 2008, 2022), यूएसएसआर का पतन (1989-92), वैश्विक वित्तीय संकट (2008) और महामारी (2020-21) प्रमुख झटकों में शामिल रहे हैं। ये झटके सीधे प्रभावित आबादी को संकट में डालते हैं; सूखे और अल नीनो की स्थिति में किसान और खेतिहर मजदूर, महामारी की स्थिति में शहरी आबादी (प्रवासी सहित) और तेल की कीमतों में वृद्धि और लॉकडाउन की स्थिति में संपूर्ण गैर-कृषि अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। भारत सरकार और प्रभावित राज्यों ने हमेशा संकट और बचत की हानि को कम करने के लिए उपाय किए हैं और यह सुनिश्चित करने में सफल रहे हैं कि आर्थिक विकास अपनी प्रवृत्ति पर लौट आए **(चित्र 4)**।

इन उतार-चढ़ावों का विकास पर प्रभाव, नीतिगत कार्रवाई द्वारा यथासंभव समायोजन **तालिका 3** में दर्शाया गया है। तीसरे और पांचवें कॉलम से पता चलता है कि पीसीजीडीपी और जीडीपी दोनों की औसत वृद्धि दर 1994-95 से मंदी से तेजी और फिर मंदी की ओर घूमी है।[12] कॉलम छह से पता चलता है कि सकल घरेलू उत्पाद की तुलना में वास्तविक निजी अंतिम उपभोग व्यय के अनुपात में गिरावट या तो रुक गई है (पंक्ति 8 और 9) या यह बढ़ गया है (पंक्ति 5 और 6)। कॉलम सात से पता चलता है कि सकल घरेलू उत्पाद की तुलना में वास्तविक सकल स्थिर निवेश का अनुपात या तो स्थिर हो गया है (पंक्ति 4 और 6) या इसने वृद्धि की अपनी प्रवृत्ति को बहाल किया है (पंक्ति 8 और 9)।

तालिका 3 : 1999 से 2023 तक आर्थिक विकास में परिवर्तन

National account aggregates in constant 2011-12 prices								
	Average	Growth rate (%)				GDP Share (%) of		
		PC GDP		GDP		PFCE	GFCF	GFCE
			change		change			
	1	2	3	4	5	6	7	8
1	**fy95-fy99**	4.4		6.4		63.7	21.3	10.8
2	**fy00-fy04**	4.0	-0.4	5.8	-0.6	61.5	24.8	11.2
3	**fy05-fy09**	5.4	1.4	6.9	1.1	57.8	29.1	10.1
4	**fy10-fy14**	4.9	-0.5	6.7	-0.2	56.0	32.9	10.8
5	**fy15-fy19**	6.1	1.1	7.4	0.7	56.0	31.2	10.0
6	**fy20-fy24**	3.4	-2.6	4.3	-3.1	57.5	32.8	10.2
7	**FY95-fy04**	4.2		6.1		62.6	23.0	11.0
8	**FY05-fy14**	5.2	1.0	6.8	0.7	56.9	31.0	10.4
9	**FY15-fy24**	4.7	-0.4	5.9	-1.0	56.8	32.0	10.1

हर झटके के बाद सवाल यह उठता है कि अस्थायी प्रभावों को स्थायी प्रभावों से अलग किया जाए या नहीं। महामारी, तेल की कीमतों में वृद्धि और अल नीनो का ग्रामीण क्षेत्रों पर आर्थिक प्रभाव कुछ

[12] यदि प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में परिवर्तन नकारात्मक/सकारात्मक होता है, तो सत्ताधारी पार्टी की चुनावी संभावनाओं पर प्रभाव नकारात्मक/सकारात्मक होता है (भारतीय मतदाता व्यवहार में लेखक का आर्थिक कारकों का मॉडल (विरमानी 2004))।

मायनों में "दोहरे सूखे" जैसा था, लेकिन इसने शहरी क्षेत्रों को भी सीधे तौर पर प्रभावित किया। महामारी की विश्वव्यापी प्रकृति और मांग व आपूर्ति दोनों पर पड़ने वाले प्रभाव[13] तथा उसके बाद आने वाले झटकों (तेल की कीमतें और एल नीनो) के कारण जटिलता बहुत अधिक थी। इसका शुद्ध परिणाम यह हुआ कि बचत में और अधिक कमी आई तथा कम निरपेक्ष बचत और ऋण सीमा वाले लोगों पर इसका अधिक प्रभाव पड़ा।[14]

इसके बावजूद, 2019-20 की तुलना में 2021-22 में वास्तविक प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद अधिक था। पिछले दस वर्षों के औसत की तुलना में वित्त वर्ष 20-24 (2019-20 से 2023-24) के दौरान औसत वास्तविक निजी उपभोग अनुपात भी अधिक है (**तालिका 3** के कॉलम 6 की पंक्ति 4, 5, 6) और अर्थव्यवस्था विकास दर की अपनी प्रवृत्ति पर लौट आई है **(चित्र 4)**।[15] इसका श्रेय भारत के सुदृढ़ मौद्रिक एवं राजकोषीय प्रबंधन, समावेशी दृष्टिकोण तथा भारत की संवैधानिक संस्थाओं की अंतर्निहित मजबूती को दिया जा सकता है।

निरंतर तेज वृद्धि अत्यंत दुर्लभ है; विरमानी (2012) ने दिखाया कि केवल एक दर्जन गैर-संसाधन संपन्न देश हैं, जिनकी प्रति व्यक्ति जीडीपी वृद्धि दर एक दशक से अधिक समय तक 7% या उससे अधिक रही है, जिनमें से आधे देश इसे दो दशक से भी कम समय तक कायम रख पाए।[16] अन्य 7 गैर-संसाधन संपन्न देशों ने एक दशक या उससे अधिक समय तक 6% से अधिक की विकास दर कायम रखी।[17] भारत तीन दशक (2021-2050) तक वास्तविक प्रति व्यक्ति जीडीपी में औसतन 6-6.5% प्रति वर्ष की तीव्र वृद्धि दर को बनाए रख सकता है, बशर्ते संरचनात्मक मुद्दों के समाधान के लिए उचित नीतिगत और संस्थागत सुधार किए जाएं। तेजी से विकास के लिए प्रौद्योगिकी के अनुकरण और अनुकूलन के लिए संस्थानों की आवश्यकता होती है, जो उन्नत देशों में व्यापक रूप से उपलब्ध है, क्योंकि यह किसी भी देश को निम्न मध्यम आय से उच्च मध्यम आय वाले देश की ओर ले जाती है। उच्च मध्यम आय से उच्च आय की ओर बढ़ने के लिए ऐसे संस्थानों की आवश्यकता होती है जो प्रौद्योगिकी के अग्रिम क्षेत्रों में नवाचार के सृजन और कार्यान्वयन को बढ़ावा दें।

तेजी से बढ़ती पूर्वी और दक्षिण पूर्व एशियाई अर्थव्यवस्थाएं (एनआईसी, न्यू एनआईसी और चीन), जो तेजी से निम्न मध्यम आय स्तर से उच्च मध्यम आय और तत्पश्चात उच्च आय स्तर की ओर बढ़ी

---

[13] वायरस का प्रसार खुले ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में अधिक आसान और तेज था। वायरस के बारे में प्रारंभिक जानकारी के अभाव और इसके परिणामस्वरूप वैक्सीन न होने के कारण यह समस्या और भी जटिल हो गई।

[14] नकारात्मक आय के झटकों की अवधि बढ़ने के साथ बचत में गिरावट भी बढ़ती जाती है। चूंकि गरीबों की बचत का निरपेक्ष आकार कम होता है, इसलिए उनकी एहतियाती बचत निम्न आय वर्ग (और मध्यम वर्ग) की तुलना में तेजी से खत्म हो जाती है। उनकी ऋण सीमा भी कम होती है। जैसे-जैसे नकारात्मक आय का झटका कम होता है, ऐसी संभावना बढ़ती जाती है कि ऋण को चुकता करने और एहतियाती बचत को फिर से बहाल करने में पुनर्जीवित आय के एक बड़े हिस्से का उपयोग किया जाएगा। ऐसी स्थितियों में सरकार की कल्याणकारी नीति रोजगार सृजन, बुनियादी जरूरतों पर सब्सिडी, आय हस्तांतरण और रियायती ऋण पर केंद्रित होती है। ये संकट को कम करते हैं, लेकिन आय और एहतियाती बचत के नुकसान की कभी पूरी तरह भरपाई नहीं कर पाते हैं।

[15] रोजगार, मजदूरी, नौकरी सृजन, गरीबी और वितरण पर अगले खंडों में चर्चा की जाएगी।

[16] मैराथन धावक (तेज़ धावक (चीन, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, हांगकांग, जापान और बोत्सवाना)। पुर्तगाल, ग्रीस, इटली, थाईलैंड, एंटीगुआ और बारबुडा, बोस्निया-हर्जेगोविना)

[17] आयरलैंड, आइल ऑफ मैन, केप वर्डे, प्यूर्टो रिको, मालदीव, सेंट किट्स और नेविस।

हैं, ने 1990 के बाद से भारत के आर्थिक सुधारों के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन का काम किया है।[18] जब हम बारीकी से देखते हैं, तो पाते हैं कि पूंजी निर्माण, एफडीआई, निर्यात और आयात तथा विनिर्माण मूल्य संवर्धन (जीडीपी के अनुपात के संदर्भ में) के संबंध में उनके पास विविध प्रकार का अनुभव है। उनसे सबक लेते हुए, 2020 और उसके बाद के वैश्विक परिवेश को देखते हुए भारत ने अपना रास्ता स्वयं बनाया है और आगे भी बनाता रहेगा।

इस संदर्भ में 2016-2018 के दौरान द्विपक्षीय निवेश संधियों (बीआईटी) को समाप्त करने से भी हमें कोई फायदा नहीं हुआ। कोटिर्लो और कलाच्यिन (2023) का अनुमान है कि बीआईटी को निरस्त करने के बाद एफडीआई में 60% की गिरावट आएगी (तिमाही समय श्रृंखला के आधार पर)। हार्टमैन और स्प्रुक (2023) का अनुमान है कि जिन देशों के साथ बीआईटी समाप्त नहीं किए गए, उनकी तुलना में एफडीआई में 30% की कमी आएगी। अनुमानित गिरावट का अधिकांश हिस्सा एमएंडए में एफडीआई से संबंधित है। गोल्डार और अन्य (2024) ने एफडीआई पर बीआईटी समाप्ति के महत्वपूर्ण नकारात्मक प्रभाव और आयात पर सकारात्मक प्रभाव की पुष्टि की है। यह एफडीआई और निर्यात के बीच पूरक संबंध को दर्शाता है। इस प्रकार, एफडीआई के स्रोत देशों जैसे कि यूरोपीय संघ के सदस्यों के साथ इन संधियों की बहाली (प्रत्यक्ष) एफडीआई में वृद्धि और विनिर्माण आपूर्ति श्रृंखलाओं को आकर्षित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

एफडीआई, बीआईटी और एफटीए के लिए नियमों और प्रक्रियाओं में उचित बदलावों को देखते हुए, हम उम्मीद कर सकते हैं कि (1) अगले 10 वर्षों में वास्तविक निवेश दर में सकल घरेलू उत्पाद के 2% की वृद्धि होगी और उसके बाद 3 प्रतिशत की वृद्धि होगी। (2) एफडीआई सकल घरेलू उत्पाद के वर्तमान 1.8% से बढ़कर सकल घरेलू उत्पाद का 2.5% हो जाएगा। (3) अगले दशक में विनिर्माण में मूल्य संवर्धन की हिस्सेदारी में वृद्धि सकल घरेलू उत्पाद के 3% तक तथा दो दशकों में सकल घरेलू उत्पाद के 28-30% तक होगी। हालाँकि यह काफी चुनौतीपूर्ण होगा। विशेष रूप से राज्य स्तर पर संस्थागत परिवर्तन महत्वपूर्ण होंगे। सरकार के सभी स्तरों पर, विशेष रूप से संघ और राज्य सरकार तथा नगरपालिका/पंचायती राज तथा जमीनी स्तर पर स्थित नौकरशाही के व्यवहार के संबंध में अधिक सुधार के प्रयासों से अधिक महत्वाकांक्षी लक्ष्य प्राप्त किए जा सकते हैं।

उत्पाद बाजार (माल और सेवाएं), कारक बाजार (पूंजी, श्रम, भूमि और प्रबंधन), प्राकृतिक संसाधन अन्वेषण उत्पादन और विपणन, सामाजिक सेवाएं (शिक्षा, स्वास्थ्य, सरकारी सेवाएं) और सार्वजनिक क्षेत्र के एकाधिकार और क्रेता एकाधिकार (रक्षा) के सुधार कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं। इनमें से कुछ सुधार (वित्तीय क्षेत्र, श्रम, विद्युत उत्पादन और पारेषण, रक्षा उत्पादन, कॉर्पोरेट कर) पहले ही किए जा चुके हैं, लेकिन समय के साथ इन्हें परिष्कृत करने की आवश्यकता हो सकती है।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) भारत के उत्पादकों का 85-90 प्रतिशत हिस्सा हैं और 21वीं सदी में भारत को शक्ति प्रदान करने के लिए स्टार्ट-अप और तकनीकी उद्यमी इन्हीं के बीच से उभरेंगे। लागत और समय की दृष्टि से कम्पनियों की तुलना में एमएसएमई के लिए विनियामक अनुपालन में आसानी अधिक मूल्यवान है। एमएसएमई को समान अवसर प्रदान करने के लिए वस्तु

[18] 1980 के दशक में, एनआईसी (सिंगापुर, हांगकांग, दक्षिण कोरिया और ताइवान) को "चमत्कारी विकास वाली अर्थव्यवस्था" के रूप में बहुत महत्व दिया गया था।

एवं सेवा कर (जीएसटी) का सरलीकरण तथा प्रत्यक्ष कर संहिता को युक्तिसंगत बनाना महत्वपूर्ण है। एमएसएमई के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने के लिए सीमा शुल्क के सरलीकरण की आवश्यकता है, साथ ही भारत में वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के विकास को सुगम बनाने के लिए औद्योगिक नीति के अंग के रूप में भी इसकी आवश्यकता है।

कानूनी सुधार, कल्याणकारी सुधार और हस्तांतरण-सब्सिडी प्रणाली में सुधार लंबित हैं। अर्थव्यवस्था की संरचना में परिवर्तन लाने, ज्ञात कमजोरियों से पार पाने तथा विकास के साथ उत्पन्न होने वाली नई बाधाओं को दूर करने के लिए अगले सुधार भी आवश्यक होंगे।

4.2 विश्व अर्थव्यवस्था में भारत

हमने पीपीपी, स्थिर 2017 अंतर्राष्ट्रीय डॉलर में वास्तविक प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (पीसीजीडीपी) वृद्धि के लिए तीन परिदृश्य बनाए हैं। एक रूढ़िवादी है, जिसमें औसत वृद्धि दर 5.9% प्रति वर्ष है, एक 6.4% प्रति वर्ष की मध्यमान दर है तथा एक 6.9% प्रति वर्ष की आशावादी दर है, जो यह मानती है कि भारत आवश्यक नीतिगत और संस्थागत सुधार करेगा। प्रति वर्ष 0.6% की औसत जनसंख्या वृद्धि के आधार पर, पीपीपी पर सकल घरेलू उत्पाद की औसत वृद्धि दर क्रमशः 6.5%, 7% और 7.5% होगी। **चित्र 6** में तीन परिदृश्यों के आधार पर चीन के सापेक्ष भारत के प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद को दर्शाया गया है, जिसके परिणामस्वरूप 2050 तक प्रति व्यक्ति औसत वृद्धि दर 5.9%, 6.4% तथा 6.9% प्रति वर्ष होगी। मध्यम अनुमान के अनुसार, भारत 2031 के आसपास उच्च मध्यम आय वाला देश बन जाएगा और 2047 के आसपास उच्च आय वाला देश बन जाएगा।

चित्र 6 : प्रति वर्ष 5.9%, 6.4% और 6.9% की औसत पीसीजीडीपी वृद्धि के साथ अनुमान

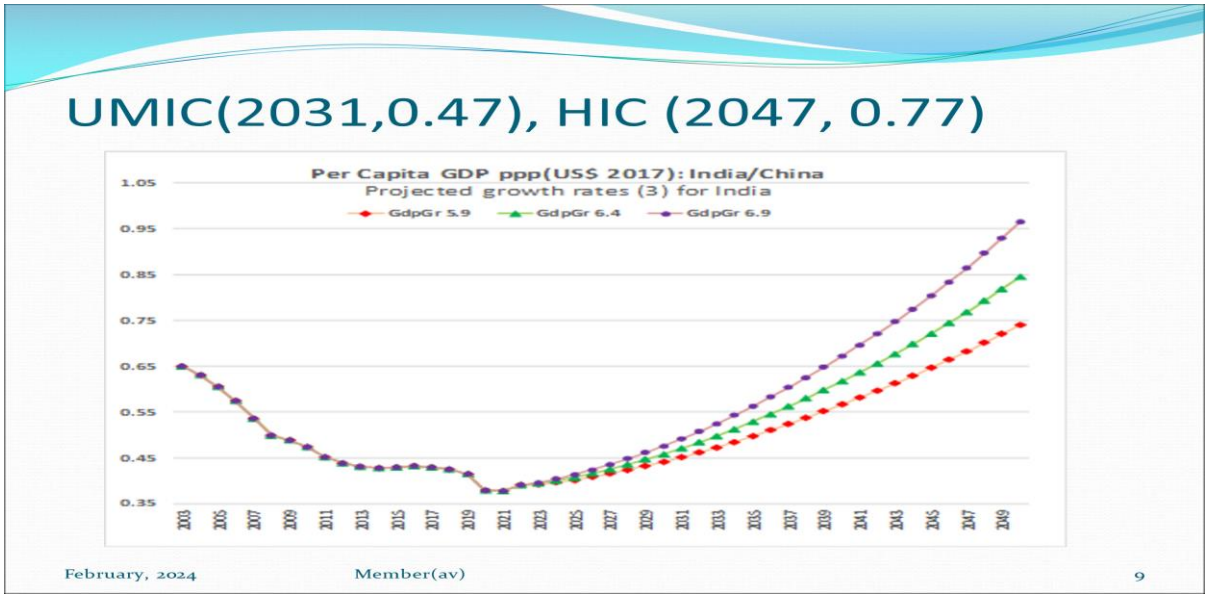

स्रोत : डब्ल्यूडीआई एवं संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या अनुमान से डेटा। लेखक के पूर्वानुमान में आईएमएफ और ओईसीडी के अनुमानों को आधार के रूप में उपयोग किया गया है

रूढ़िवादी परिदृश्य में, 2035 में भारत का प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद चीन के 50% और अमेरिका के 18% के बराबर होगा **(चित्र 7)**। इसी परिदृश्य में, 2050 में भारत का प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद वैश्विक औसत के बराबर होगा, लेकिन चीन के 75% और अमेरिका के 30% से कम होगा। रूढ़िवादी परिदृश्य में, भारत 2031 के आसपास उच्च मध्यम आय वाला देश (यूएमआईसी) बन जाएगा और 2050 के बाद उच्च आय वाला देश (एचआईसी) बन जाएगा।[19] आशावादी परिदृश्य में, भारत 2047 में एचआईसी बन जाएगा। भारत अगले कुछ वर्षों में जापान और जर्मनी दोनों को पीछे छोड़ते हुए वर्तमान अमेरिकी डॉलर के आधार पर अमेरिका और चीन के बाद तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

चित्र 7 : चीन, अमेरिका, यूरोपीय संघ, विश्व के सापेक्ष भारत का प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (2017 मे अंतर्राष्ट्रीय डॉलर में पीपीपी)

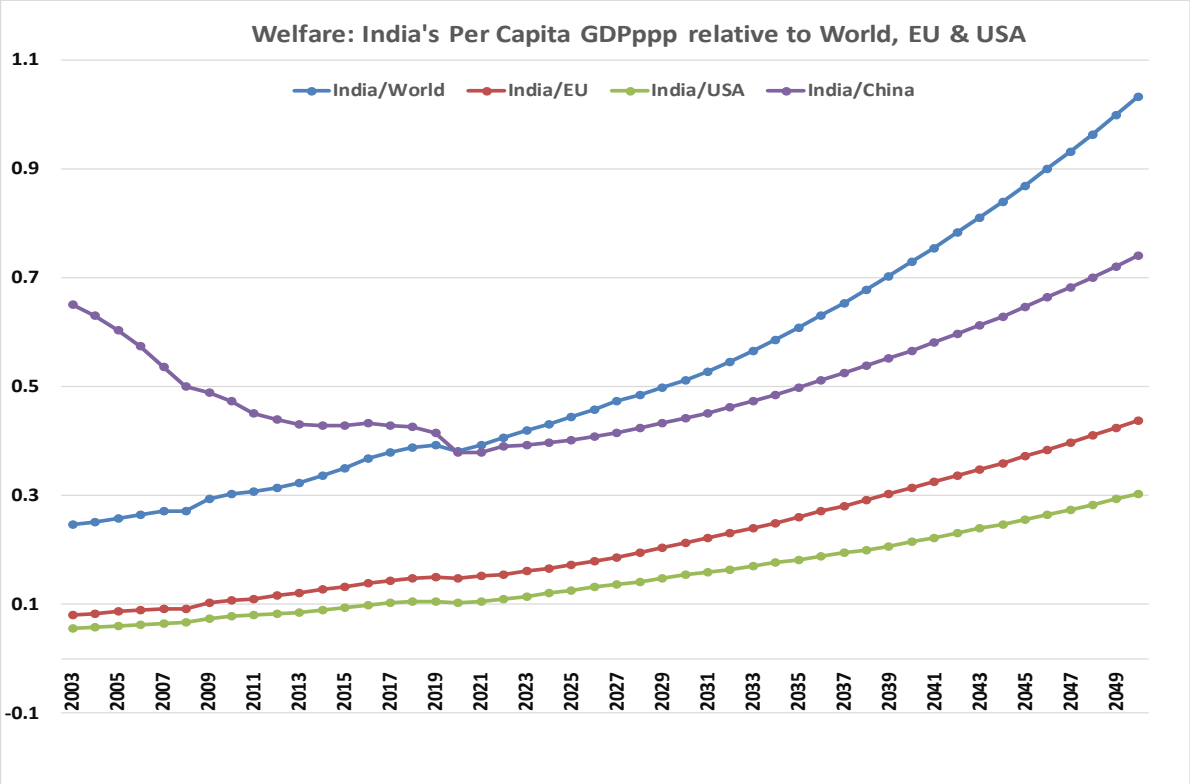

स्रोत : जैसा कि चित्र 4 में दिखाया गया है। नोट : भारत/चीन = चीन के प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद से विभाजित करके भारत का प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद। इसी प्रकार, भारत/यूएसए (भारत/यूरोपीय संघ, भारत/विश्व) यूएसए (यूरोपीय संघ, विश्व) के प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद से भारत के प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद का अनुपात है।

[19] सिटीग्रुप और प्राइस वाटरहाउस ने भविष्यवाणी की है कि भारत 2050 तक सबसे बड़ी या दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। हमारे अनुमान अधिक रूढ़िवादी हैं, जिनमें यह माना गया है कि भारत के लिए 6.0%, चीन के लिए 2.8% तथा अमेरिका के लिए 2.0% की वास्तविक प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (पीपीपी) की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि होगी। चूंकि इंडोनेशिया और रोमानिया हाल ही में क्रमशः यूएमआईसी और एचआईसी बन गए हैं, इसलिए हमने 2017 में अंतर्राष्ट्रीय डॉलर में उनके पीसीजीडीपी पीपीपी को बेंचमार्क के रूप लिया है, यानी यूएमआईसी (11600 डॉलर) एचआईसी (31000 डॉलर)।

वीआईपीई (/वीआईपीपी) सूचकांक द्वारा मापी गई भारत की आर्थिक शक्ति 2050 (2035) में चीन की 80% (39%) और अमेरिका की 75% (34%) होगी **(चित्र 8)**।[20] आर्थिक शक्ति समग्र शक्ति का आधार है। यह उस आधार का निर्माण करती है जिस पर सैन्य शक्ति, कूटनीतिक शक्ति, सांस्कृतिक शक्ति की परतों का निर्माण किया जा सकता है **(चित्र 9)**। आर्थिक शक्ति के निर्माण के बाद, हमारा अतिरिक्त लक्ष्य तीसरे सबसे बड़े सैन्य-औद्योगिक परिसर और एक बड़े अनुसंधान एवं विकास केंद्र के साथ तीसरी सबसे मजबूत सैन्य शक्ति बनना होना चाहिए।[21]

चित्र 8 : वीआईपीई द्वारा मापी गई भारत और चीन की वैश्विक आर्थिक शक्ति

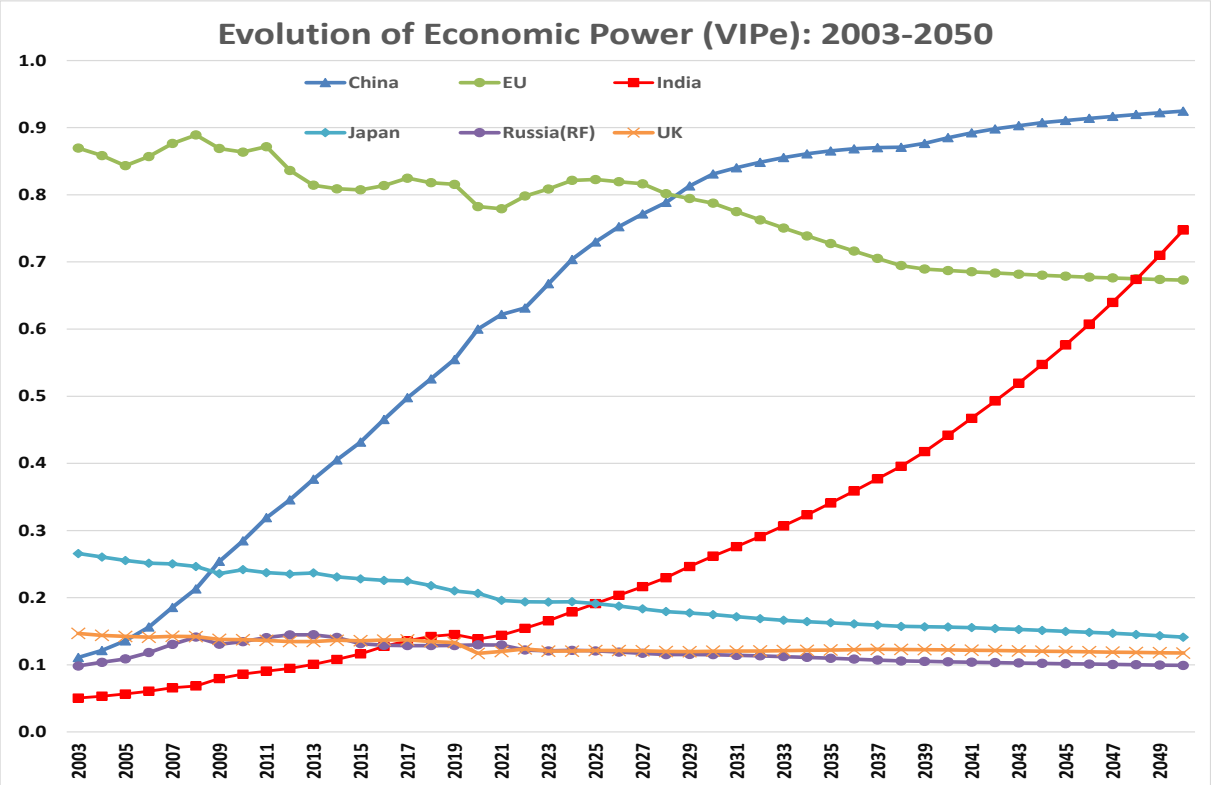

डेटा के स्रोत: जैसा कि चित्र 4 और 5 में दिखाया गया है। नोट : वीआईपीई = विरमानी आर्थिक शक्ति सूचकांक, यह सबसे मजबूत शक्ति (अमेरिका) के सापेक्ष किसी देश की आर्थिक शक्ति को मापता है। भारत/चीन = चीन के वीआईपीई के प्रतिशत के रूप में भारत का वीआईपीई।

[20] ऐतिहासिक रूप से वर्तमान अमेरिकी डॉलर में सापेक्ष सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वीआईपीई द्वारा मापी गई आर्थिक शक्ति के लगभग बराबर होता है।

[21] वीआईपीई = विरमानी आर्थिक शक्ति सूचकांक; यह संयुक्त राज्य अमेरिका के सापेक्ष किसी देश की आर्थिक शक्ति को मापता है। आर्थिक शक्ति किसी अर्थव्यवस्था के वास्तविक सापेक्ष आकार का ज्यामितीय औसत और सामान्य तकनीकी कौशल (अमेरिका के सापेक्ष प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद) का माप है। वीआईपी = विरमानी (समग्र) शक्ति सूचकांक वीआईपीई/वीआईपीपी और सैन्य शक्ति का ज्यामितीय रूप से भारित औसत है। यह 2020-2050 के लिए 5.9% की औसत पीसीजीडीपी वृद्धि के रूढ़िवादी परिदृश्य पर आधारित है।

चित्र 9 : शक्ति का पिरामिड

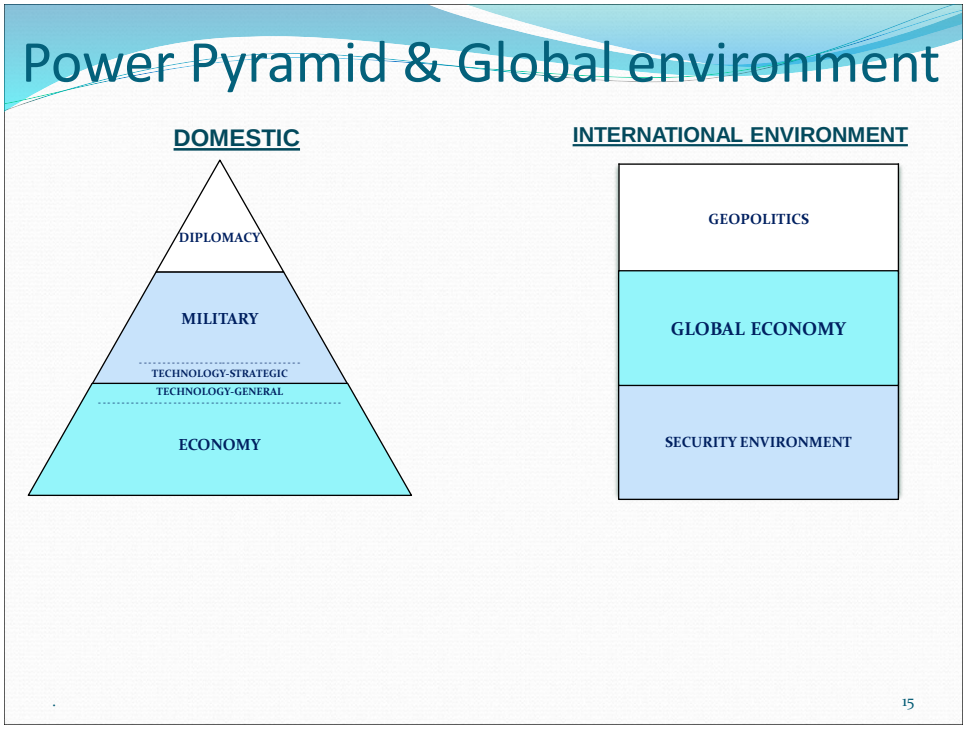

वर्ष 2030 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था (वर्तमान अमेरिकी डॉलर में) बन जाने के बाद, (अमेरिका, यूरोपीय संघ के साथ) भारत वैश्विक विकास के शीर्ष तीन चालकों में शामिल हो जाएगा, क्योंकि शेष विश्व से वस्तुओं और सेवाओं के शुद्ध आयात के माध्यम से शेष विश्व की मांग पर इसका सीधा प्रभाव पड़ेगा।[22] यह अमेरिका और चीन के बाद दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा पूंजी बाजार भी होगा, जो चालू खाता घाटे (= आई-एस) में प्रतिबिंबित उच्च निवेश स्तर के कारण बड़ी मात्रा में पूंजी आकर्षित करेगा। हालांकि, भारत के उच्च मध्यम आय वाला देश बन जाने के बाद घरेलू बचत दर बढ़ने के साथ चालू खाता घाटा कम हो जाना चाहिए।

भारत अपने जनसांख्यिकीय लाभांश का उपयोग करके विश्व का मध्यम और बैक ऑफिस बन जाएगा तथा ऑनलाइन, प्रबंधकीय (उद्योग, कृषि), व्यावसायिक (फिन टेक, डेटा विश्लेषण, परामर्श) और सामाजिक सेवाओं (स्वास्थ्य, शिक्षा) का सबसे बड़ा प्रदाता बन जाएगा, क्योंकि यूरेशिया के बाकी हिस्सों में शिक्षित, युवा कार्यबल में कमी आ रही है। यह उन आर्थिक गतिविधियों के लिए विश्व को जनशक्ति आपूर्तिकर्ता भी बन सकता है, जिनमें साइट पर तकनीकी और पेशेवर कार्मिकों की भौतिक उपस्थिति की आवश्यकता होती है, जैसे कि सर्जरी, फिजियोथेरेपी, नर्सिंग, घर निर्माण और मरम्मत। भारत हाइब्रिड सेवाओं का नवप्रवर्तन करेगा, जहां पूर्णतः शारीरिक क्षमता वाला कार्यकर्ता किसी निजी

[22] चालू खाता घाटे के निरपेक्ष मूल्य में प्रतिबिंबित। ध्यान दें कि कोई देश शेष विश्व के विकास को जिस हद तक संचालित करता है, उसे देश के सकल घरेलू उत्पाद में स्वायत्त परिवर्तन (जैसे राजकोषीय प्रोत्साहन) के संबंध में आरओडब्ल्यू जीडीपी की लोचशीलता द्वारा मापा जाता है। यह विश्व विकास में अंकगणितीय योगदान से भिन्न है, जो विश्व सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि के अनुपात के रूप में देश के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि मात्र है।

पर्यवेक्षक के अधीन काम करेगा, जो वास्तविक समय में काम का मार्गदर्शन, निगरानी और निरीक्षण करेगा।

भारत विश्व में विनिर्मित वस्तुओं का चौथा सबसे बड़ा उत्पादक है, लेकिन विनिर्मित वस्तुओं का 15वां सबसे बड़ा निर्यातक है। यह बड़ा अंतर विश्व युद्ध के बाद के वैश्वीकरण में 1960 के दशक के बाद से निर्मित वस्तुओं के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को आगे बढ़ाने में बहुराष्ट्रीय उद्यमों (एमएनई)/निगमों (एमएनसी) द्वारा निभाई गई भूमिका को समझने में विफलता को दर्शाता है। निम्न आय से उच्च मध्यम आय और उच्च आय की ओर अग्रसर होने वाले पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया के प्रत्येक देश ने पहले तो विनिर्मित वस्तुओं के उत्पादन और निर्यात में वृद्धि को प्रोत्साहित करने और फिर उसे आगे बढ़ाने के लिए एमएनई से एफडीआई का स्वागत किया है। चीन ने एक कदम और आगे बढ़कर तथा पहले तो विदेशी निवेश वाले उद्यमों को प्रोत्साहित किया और फिर घरेलू फर्मों को प्रौद्योगिकी और कौशल हस्तांतरित करने तथा मध्यवर्ती वस्तुओं की स्थानीय खरीद का विस्तार करने के लिए उन पर दबाव डाला।[23] इसलिए बहुराष्ट्रीय उद्यम चीन के विनिर्मित वस्तुओं के आयात को कम करने के व्यापारिक अभियान (अर्थात आयात के बाद विनिर्मित वस्तुओं के निर्यात में वृद्धि करना) में भागीदार बन गए।

भारत विश्व में विनिर्मित वस्तुओं के शीर्ष पांच निर्यातकों में शामिल होगा या नहीं, यह आंतरिक व्यापार सुधारों तथा यूरोपीय संघ और अमेरिका के साथ व्यापार नीति के समन्वय पर निर्भर करेगा। चीन ने अनेक विनिर्मित वस्तुओं पर अप्रत्यक्ष

निर्यात एकाधिकार स्थापित कर लिया है तथा अनेक नई और/या भविष्योन्मुखी विनिर्मित वस्तुओं के मामले में भी ऐसा करने की दिशा में अग्रसर है। अपने कर राजस्व पर अस्थिर दबाव के बिना अमेरिका, यूरोपीय संघ और भारत के प्रतिस्पर्धा करने का एकमात्र तरीका यह है कि वे अपने तुलनात्मक लाभ अर्थात अमेरिका और यूरोपीय संघ की तकनीकी ताकत को भारत के प्रचुर मात्रा में उपलब्ध निम्न, मध्यम और उच्च कुशल श्रमिकों के साथ संयोजित करें। इसके लिए इन तीनों देशों के बीच विनिर्मित वस्तुओं के व्यापार पर टैरिफ और गैर-टैरिफ बाधाओं को समाप्त करना होगा तथा चीन से आयात (जिसमें चीन में 10% से अधिक मूल्य वर्धन वाले अप्रत्यक्ष आयात भी शामिल हैं) पर विशेष एकाधिकार विरोधी टैरिफ लगाना होगा।

4.2.1 कनेक्टिविटी और व्यापार

2008 से वैश्विक आर्थिक उथल-पुथल को 2020 से महामारी और भू-राजनीतिक उथल-पुथल ने विश्व व्यापार में अधिक अस्थिरता और अनिश्चितता पैदा करके और बढ़ा दिया है। आर्थिक, भू-राजनीतिक और सुरक्षा के इन घटनाक्रमों ने अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों में भूगोल, विश्वास और पारस्परिक लाभ के महत्व को उजागर किया है, उस पर बल दिया है और उसे पुनः स्थापित किया है।

[23] मध्यवर्ती वस्तुओं पर टैरिफ के स्थान पर नवजात उद्योग की सुरक्षा के लिए प्रयुक्त गैर-टैरिफ बाधाओं के साथ। "करके सीखने" की अवधि के दौरान घरेलू कंपनियों को भी सब्सिडी दी गई।

भौगोलिक आयाम यह सुझाव देता है कि हमें (1) भारतीय उपमहाद्वीप, (2) हिंद महासागर क्षेत्र, जिसमें द्वीप और तटीय राज्य शामिल हैं, में कनेक्टिविटी (परिवहन, ऊर्जा, दूरसंचार) पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। विश्वास का आयाम यह सुझाव देता है कि हम (क) विश्व भर के उन देशों के साथ आर्थिक संबंधों की पूरी श्रृंखला को बढ़ाएं जहां महत्वपूर्ण भारतीय प्रवासी (भारत के साथ वंश, संस्कृति या सामाजिक संबंधों से जुड़े हुए) हैं, और (ख) वे देश जो हमारे धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक सिद्धांतों को साझा करते हैं, जो भारत वर्ष की 4000 वर्ष से अधिक पुरानी धार्मिक सभ्यता पर आधारित हैं।[24] अमेरिका-भारत आईसीईटी सामरिक एवं दोहरे उपयोग वाली प्रौद्योगिकी के संबंध में विश्वास का प्रतीक है। यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी मूल्य श्रृंखलाओं के लिए विशेष रूप से आकर्षक है, क्योंकि सॉफ्टवेयर समाधान में अनुसंधान एवं विकास के लिए भारत पहले से ही आकर्षक गंतव्य है। (ग) उन देशों पर अपनी आयात निर्भरता को कम करें जिन्होंने शब्दों और कामों से स्पष्ट कर दिया है कि वे हमारा बुरा चाहते हैं। पारस्परिक लाभ की अनिवार्यता यह सुझाव देती है कि हम उन देशों के साथ अपने व्यापार और प्रौद्योगिकी संबंधों को गहरा करें जिनका तुलनात्मक लाभ हमारे साथ पूरक (प्रतिस्पर्धी के बजाय) है। इसका मूल ध्येय भारत और उसके साझेदारों दोनों के लिए कम जोखिम वाली आपूर्ति श्रृंखलाएं बनाना है।

भारत लॉजिस्टिक कंपनियों, शिपिंग सेवाओं, एयर लाइनों और इंटरनेट केबलों का जाल बिछाकर हिंद महासागर क्षेत्र के लिए केंद्र बन सकता है, जिससे हिंद महासागर और खाड़ी के तट पर स्थित सभी देशों और हिंद महासागर के द्वीपों को जोड़ा जा सकता है। इनका संवर्धन और समन्वयन सरकार द्वारा वित्त पोषित और बीमित हिंद महासागर लॉजिस्टिक्स कंपनी द्वारा किया जा सकता है। दक्षिण-पूर्व एशिया और पश्चिम एशिया को अधिक विकल्प उपलब्ध करने के लिए हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत की भूमिका का विस्तार होगा। भारत दक्षिण एशिया, हिंद महासागर, द्वीप राष्ट्रों, पूर्वी अफ्रीका और पश्चिम एशिया के सदस्यों के साथ मिलकर एक "गोंडवाना कॉमन मार्केट (जीसीएम)" तैयार कर सकता है।[25] 2050 तक यह संगठन आसियान और जीसीसी के साथ विशेष बाजार की व्यवस्था कर सकता है। संयुक्त अरब अमीरात के साथ मुक्त व्यापार करार और भारत-मध्य पूर्व-यूरोप कॉरिडोर (आईएमईसी) की घोषणा से इस प्रक्रिया की शुरुआत हो गई है।

म्यांमार में अशांति के कारण वियतनाम से भारत होते हुए पश्चिम एशिया तक जाने वाले ट्रांस-एशियन हाईवे और ट्रांस-एशियन रेलवे बाधित हो गए हैं। दशकों पहले एशियाई देशों द्वारा इनकी परिकल्पना की गई थी और एस्कैप द्वारा इनका समर्थन किया गया था, लेकिन अंततः ये 2035 तक ही साकार हो पाएंगे। महत्वपूर्ण दक्षिणी सड़कें और रेल लाइनें बांग्लादेश और म्यांमार से होते हुए थाईलैंड और मलेशिया तक जाएंगी, जिसमें भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र पूर्व-पश्चिम यातायात के चौराहे पर स्थित होगा। अफगानिस्तान और मध्य एशिया से होते हुए चाबहार से रूस तक जाने वाली उत्तर-

[24] हिंदू धर्मनिरपेक्षता एक अव्यक्त सामाजिक-आध्यात्मिक अनुबंध पर आधारित है, जिसे भरत जनजाति (वैदिक-हड़प्पा सभ्यता से संबंधित) द्वारा गढ़ा गया था, जो सरस्वती नदी के तट (सिंधु-यमुना मैदान) पर रहती थी। इसका तात्पर्य उन सभी जनजातियों के देवताओं का सम्मान करना था जो अन्य सभी जनजातियों के देवताओं का सम्मान करते थे, जबकि वे अपने स्वयं के देवता की पूजा करने (या किसी भी देवता की पूजा नहीं करने के लिए) के लिए स्वतंत्र थे।

[25] एक अन्य ध्येय जिस पर विचार किया जा सकता है, वह है भारत के द्वीपीय क्षेत्रों में से एक को हांगकांग में परिवर्तित करना। यह तभी संभव होगा जब कम कर, हल्के आर्थिक विनियमन वाली व्यवस्था संवैधानिक रूप से व्यवहार्य होगी।

दक्षिण रेल लाइन के माध्यम से अफगानिस्तान एक और लॉजिस्टिक्स केंद्र बन सकता है। बेहतर कनेक्टिविटी से भारत के विकास में दक्षिण एशिया के सभी देशों की भागीदारी भी सुगम हो जाएगी।

4.2.2 वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला

एमएनई आपूर्ति श्रृंखला की दो विशेषताएं महत्वपूर्ण हैं। पहला, उत्पादन/आपूर्ति को मौजूदा मांग के अनुरूप बनाकर बाजार जोखिम को कम करना। दूसरा, एफडीआई, प्रौद्योगिकी और मानव पूंजी को एक साथ मिलाकर उत्पादन जोखिम को कम करना। इसका परिणाम निरंतर उच्च उत्पाद गुणवत्ता तथा उपभोक्ता/खुदरा/थोक विक्रेता को समय पर आपूर्ति है। इसमें स्थानीय आपूर्तिकर्ताओं के कौशल और उत्पादकता के स्तर में वृद्धि शामिल है।

उच्च आय वाले विकसित देशों/अर्थव्यवस्थाओं (अमेरिका, यूरोपीय संघ, ब्रिटेन, जापान, दक्षिण कोरिया, ताइवान) द्वारा आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण से भारत में वैश्विक विनिर्माण केंद्र का विकास काफी सुगम होगा और इससे इसमें तेजी आएगी। विश्व के दो तिहाई व्यापारिक निर्यात बहुराष्ट्रीय उद्यमों (एमएनई) की आंतरिक आपूर्ति श्रृंखलाओं के अंतर्गत होते हैं। पिछले तीस वर्षों में इसमें तेजी से वृद्धि हुई है। शीर्ष दो हजार बहुराष्ट्रीय उद्यमों में से एक तिहाई का मुख्यालय अमेरिका में है, इसके बाद जापान (12%), चीन (10%), यूके (5%) और भारत (4%) का स्थान है।[26] यद्यपि यूरोपीय संघ की अर्थव्यवस्था आकार में अमेरिका के बराबर है, परंतु संभवतः उसके पास बड़े बहुराष्ट्रीय उद्यमों का लगभग एक तिहाई हिस्सा है। महामारी के समाप्त होने के बाद यह शेयर संभवतः पुनः बढ़ना शुरू हो जाएगा।

व्यापार और एफडीआई आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं; **तालिका 4** में ऊपर चिन्हित देशों के बाह्य एफडीआई और विनिर्मित आयात की तुलना की गई है, जिन्हें अधिकांश एमएनई आपूर्ति श्रृंखलाओं का उद्गम माना गया है, साथ ही भारत के संभावित प्रतिस्पर्धियों के आंकड़ों की भी तुलना की गई है। महामारी की वजह से उत्पन्न व्यवधान के कारण, यह महामारी-पूर्व वर्ष 2019 और नवीनतम उपलब्ध वर्ष (2022) का डेटा दिखाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय संघ, जापान, यूके, आरओके वैश्विक एफडीआई के लगभग 60%, अर्थात चीन (8%) से 7 गुना अधिक का स्रोत हैं। वे विनिर्मित वस्तुओं के वैश्विक आयात का 53%, अर्थात चीन (8.5%) से 5 गुना अधिक आयात करते हैं। जापान, ब्रिटेन और दक्षिण कोरिया मिलकर विदेशी विनिर्मित वस्तुओं के लिए चीन के बराबर बाजार का निर्माण करते हैं। चीन वर्ष 2000 से संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ की आपूर्ति श्रृंखलाओं का प्रमुख लाभार्थी रहा है।

[26]https://www.investopedia.com/ask/answers/021715/why-are-most-multinational-corporations-either-us-europe-or-japan.asp. 2189 कम्पनियों के नमूने में से 719 कम्पनियों का मुख्यालय अमेरिका में, 264 का जापान में, 219 का चीन में, 118 का ब्रिटेन में तथा 81 का भारत में था।

तालिका 4: बाह्य एफडीआई और विनिर्मित आयात का हिस्सा

Country share of World outward FDI and manufactured imports				
	Outward FDI		Manufactured Import	
	2019	2022	2019	2022
High Income				
United States	7.6	20.8	14.7	15.4
European Union	33.5	18.4	29.7	29.3
Japan	17.0	8.4	3.1	2.8
United Kingdom	-1.4	6.1	3.4	3.0
Korea, Rep.	2.3	3.2	2.2	2.4
sub total	59.0	57.0	53.2	53.0
Upper Middle Income				
China	9.0	7.3	8.7	8.4
Malaysia	0.5	0.5	1.0	1.1
Thailand	0.7	0.4	1.2	1.1
Lower middle income				
Viet Nam	0.0	0.1	1.5	1.6
India	0.9	0.7	1.8	1.9
World	100	100	100	100
Source: WB, World Development Indicators. Authors calculation.				

चूंकि विश्व की अधिकांश बहुराष्ट्रीय कंपनियों के मुख्यालय अमेरिका और यूरोपीय संघ (+यूके) में हैं, इसलिए इन अर्थव्यवस्थाओं और भारत के बीच बहुपक्षीय मुक्त व्यापार करार (एफटीए) से उन सभी को लाभ होगा। अमेरिका-भारत आईसीईटी सामरिक एवं दोहरे उपयोग वाली प्रौद्योगिकी के संबंध में विश्वास का प्रतीक है। यह सॉफ्टवेयर और एआई घटक से जुड़ी मूल्य श्रृंखलाओं के लिए विशेष रूप से आकर्षक है। इस तरह के एफटीए से अधिनायकवादी देशों पर निर्भरता कम करने में मदद मिल सकती है, जिन्होंने एकाधिकार बनाने के लिए विषम नीतियों का इस्तेमाल किया है और भू-अर्थशास्त्र और भू-राजनीतिक दबाव के लिए इस निर्भरता का उपयोग करने में संकोच नहीं करते हैं।

4.2.3 अंतरराष्ट्रीय वित्त

हम 2035 में एक ऐसे भारत की कल्पना करते हैं, जिसके पास राजकोषीय अधिशेष, खुला पूंजी खाता, डबल एए रेटिंग और एक ऐसी मुद्रा (रुपया) होगी जो पूरी तरह से परिवर्तनीय और आईएमएफ की विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) सूची का हिस्सा होगी। भारत के विशाल और बढ़ते अंतर्राष्ट्रीय भंडार, बढ़ते व्यापार विविधीकरण और पड़ोस में रुपये की बढ़ती भूमिका, तथा मुक्त विश्व में तीसरा सबसे बड़ा पूंजी बाजार होने के कारण यह एक स्वाभाविक परिणाम होगा।[27] विश्व रेटिंग एजेंसियों के मौजूदा अल्पाधिकार तथा राजकोषीय घाटे के लिए उनके द्वारा प्रयुक्त मानदंडों को देखते हुए 3% का राष्ट्रीय राजकोषीय घाटा ऐसा होने के लिए वस्तुतः एक पूर्वापेक्षा है। इसके लिए केन्द्र सरकार के लिए 1.5% राजकोषीय घाटे का विसर्पण मार्ग तैयार करना होगा, जिसके बाद राज्यों द्वारा भी इसी प्रकार का कदम उठाया जाए।

[27] ये पूर्णतः परिवर्तनीय मुद्रा के रूप में एसडीआर में शामिल किए जाने के लिए आवश्यक एवं पर्याप्त शर्तें हैं।

सभी विकासशील और उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं को कवर करने के लिए भारतीय रेटिंग एजेंसी भारत से बाहर विविधीकरण करेगी। यह बड़े, मुक्त बाजार लोकतंत्रों की रेटिंग एजेंसियों की इक्विटी भागीदारी के साथ या उनके साथ संयुक्त उद्यम के रूप में हो सकता है। भारत सरकार इस प्रक्रिया को सुगम बना सकती है!

2020 से पहले के हांगकांग, सिंगापुर या लंदन जैसे अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय केंद्र तभी विकसित हो सकते हैं, जब वहां जीवन की गुणवत्ता इन केंद्रों के समान होगी। यदि इन केंद्रों में उपलब्ध सामाजिक स्वतंत्रता और जीवन की गुणवत्ता गिफ्ट सिटी में प्रदान नहीं की जा सकती है, तो कहीं और एक नया केंद्र विकसित करना होगा।

यूरोपीय संघ जैसे अन्य मुक्त बाजार, खुले लोकतंत्रों के सहयोग से 2050 तक भारत के पास एक अंतर्राष्ट्रीय भुगतान और निपटान प्रणाली होगी, जिसका प्रबंधन इन अर्थव्यवस्थाओं/देशों द्वारा संयुक्त रूप से किया जाएगा।

4.3 संरचनात्मक परिवर्तन

भारत की संरचनात्मक चुनौती का समाधान इसकी आर्थिक प्रणाली के संवैधानिक आधार और केंद्र सरकार (संघ सूची) और राज्य सरकारों (राज्य सूची) के बीच अधिकारों और जिम्मेदारियों के विभाजन को समझकर ही किया जा सकता है। संविधान विषयों को तीन सूचियों: संघ, समवर्ती और राज्य सूची में रखने के लिए सहायकता की अवधारणा का प्रयोग करता है। समवर्ती सूची में ऐसे विषय शामिल हैं, जहां सहायकता के सिद्धांत का राष्ट्रीय नीति या केंद्र सरकार द्वारा गहन राष्ट्रीय समन्वय की आवश्यकता के साथ टकराव होता है। उदाहरण के लिए, शिक्षित युवाओं की बढ़ती गतिशीलता को देखते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक मानकों और प्रमाणन की आवश्यकता महसूस होने के कारण 1970 के दशक में शिक्षा को राज्य सूची से हटाकर समवर्ती सूची में डाल दिया गया। 75 वर्षों के बहुलवादी लोकतंत्र का परिणाम यह है कि भारत (28 राज्यों और 1.4 अरब लोगों के साथ) यूरोपीय संघ (28 देश, 450 मिलियन लोग) की तुलना में अधिक एकीकृत है[28] और पश्चिमी लोकतंत्रों (78 देश, 1.4 बिलियन लोग) के समान विविधतापूर्ण है, लेकिन औसत आय उनसे बहुत कम है।

4.3.1 गुणवत्ता श्रृंखला

भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना को देखने का पारंपरिक दृष्टिकोण "दोहरा द्वैतवाद" है: (1) मूल्य वर्धन और अनौपचारिक रोजगार में असंगठित क्षेत्र का बहुत अधिक हिस्सा, और (2) कृषि में लगे और/या ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली आबादी का बड़ा हिस्सा। इस चित्रण से यह गलत निष्कर्ष निकलता है कि उच्च वास्तविक मजदूरी के लिए अर्थव्यवस्था का औपचारिकीकरण एक आवश्यक शर्त है।

नौकरी कौशल का गुणवत्ता/क्षमता आयाम मुख्य लुप्त पहलू है। प्रमाण-पत्रों द्वारा परिभाषित शिक्षा के स्तर और उस स्तर के संबंध में मापी गई क्षमता के बीच बड़ा और परिवर्तनशील अंतर है। इससे

[28] सभी बाह्य आर्थिक मुद्दे, सभी अंतरराज्यीय मुद्दे (व्यापार, नदियां, उच्च न्यायपालिका, चुनाव) और राष्ट्रीय अवसंरचना (रेलवे, राजमार्ग, जलमार्ग), सार्वजनिक भौतिक स्थान से असंबंधित सभी विषय (वित्त, प्रौद्योगिकी)

कार्यस्थल पर सीखने की क्षमता के साथ-साथ नौकरी संबंधी कौशल हासिल करने की क्षमता भी प्रभावित होती है। प्रत्येक कौशल की गुणवत्ता/क्षमता का स्तर एक अन्य कम मूल्यांकित पहलू है, जहां उसे क्षेत्र, व्यवसाय या पेशे के प्रकार के आधार पर निम्न, मध्यम या उच्च कौशल माना जाता है। इसका अर्थ यह है कि बहुत ही योग्य, निम्न (मध्यम) कौशल वाला श्रमिक मध्यम (उच्च) कौशल वाले व्यवसायों में कम सक्षम श्रमिकों के एक बड़े हिस्से की तुलना में अधिक उत्पादक हो सकता है और इसलिए अधिक कमा सकता है।

गुणवत्ता शृंखला या प्रौद्योगिकी बुलबुला: किसी उपभोक्ता उत्पाद की गुणवत्ता सूक्ष्म रूप से सम्पूर्ण आपूर्ति श्रृंखला के गुणवत्ता स्तर पर निर्भर करती है। इस प्रकार, निम्न गुणवत्ता वाली आपूर्ति श्रृंखला पुरानी प्रौद्योगिकी, कम क्षमता/गुणवत्ता वाले शिक्षित और कुशल श्रमिकों और प्रबंधकों, निम्न गुणवत्ता वाले औजारों, उपकरणों और मशीनरी, तथा निम्न गुणवत्ता वाले मध्यवर्ती सामान और कच्चे माल का उपयोग करेगी। यह मजदूरी की कम दरों और सस्ते अंतिम माल में परिलक्षित होता है। परिणामस्वरूप, उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों के लिए मध्यम गुणवत्ता वाले उत्पाद निम्न से उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों की ओर संक्रमण का प्रतिनिधित्व करते हैं। पारंपरिक उपभोक्ता वस्तुओं में निम्न गुणवत्ता वाली श्रृंखलाओं और अपेक्षाकृत नए उद्योगों (जैसे इलेक्ट्रॉनिक्स और टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुएं) में मध्यम गुणवत्ता वाली श्रृंखलाओं की प्रधानता के साथ ये गुणवत्ता श्रृंखलाएं हर क्षेत्र (कृषि, उद्योग, सेवाएं) और हर उद्योग (वस्त्र, आवास) में मौजूद हैं।

निम्न गुणवत्ता वाली आपूर्ति श्रृंखलाएं असंगठित और अनौपचारिक क्षेत्रों से जुड़ी हैं, जबकि उच्च गुणवत्ता वाली आपूर्ति श्रृंखलाएं कॉर्पोरेट क्षेत्र से जुड़ी हैं। एसएमई इन दोनों के बीच में आते हैं, जिनमें से अधिकांश मध्यम गुणवत्ता का उत्पादन करते हैं, लेकिन एक ओर निम्न गुणवत्ता और दूसरी ओर उच्च गुणवत्ता का उत्पादन करने वाले एसएमई भी हैं। यह गलत निष्कर्ष किस कारण से आया कि वास्तविक मजदूरी बढ़ाने के लिए औपचारिकीकरण आवश्यक है। हमारा विश्लेषण एक अलग निष्कर्ष पर पहुंचता है; ***जिस कार्य के लिए निम्न एवं मध्यम प्रकार के कौशल की आवश्कता है, उसके कौशल की गुणवत्ता बढ़ाने से बड़े पैमाने पर अनौपचारिक/असंगठित श्रमिकों की मजदूरी में वृद्धि होगी।***

यद्यपि सरकार को अर्थव्यवस्था के औपचारिक/संगठित क्षेत्र का हिस्सा माना जाता है, लेकिन इसमें निम्न गुणवत्ता वाली कई श्रृंखलाएं मौजूद हैं। शहरी शासन और क्षेत्रीय, गैर-शहरी शासन ऐसी दो श्रृंखलाएं हैं जो भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। उच्च मध्यम आय वाले देश के लिए आवश्यक गुणवत्ता श्रृंखला निम्न मध्यम आय वाले देश के लिए आवश्यक गुणवत्ता श्रृंखला से गुणात्मक रूप से भिन्न होती है, जो निम्न आय वाले देश के लिए आवश्यक गुणवत्ता श्रृंखला से भिन्न होती है। हमारी कई स्थानीय शासन श्रृंखलाएं (जैसे शहरी नियोजन, सेवा वितरण एवं रखरखाव, अपराध फोरेंसिक) और क्षेत्रीय-ग्रामीण शासन श्रृंखलाएं (अग्निशमन, पंचायतें) निम्न आय वाले देश के लिए आवश्यक गुणवत्ता स्तर पर अटकी हुई हैं। यह पेपर क्षेत्र विशिष्ट मुद्दों का विश्लेषण करने के बाद, अगले खंडों में शिक्षा, कौशल और गुणवत्ता के मुद्दे पर वापस आएगा।

4.3.2 कृषि एवं ग्रामीण श्रम

भारतीय अर्थव्यवस्था के अद्‌वितीय नकारात्मक पहलुओं में से एक अतीत में देखी गई पारंपरिक आर्थिक विकास पद्‌धति का अनुसरण करने में विफलता है। कृषि से उद्‌योग में रोजगार का स्थानांतरण हुआ, जिसके परिणामस्वरूप कुल सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र से मूल्य वर्धन में गिरावट आई है। श्रमबल का 50% हिस्सा कृषि में बना हुआ है, हालांकि मूल्य वर्धन घटकर सकल घरेलू उत्पाद का 20% हो गया है।[29] इसलिए कृषि में श्रम उत्पादकता का औसत 40% है और मौसमी अल्प-रोजगार एक बड़ी समस्या बनी हुई है।[30] सामाजिक बाधाओं के कारण श्रमबल में महिलाओं की भागीदारी कम है, यह शहरी क्षेत्रों की तुलना में भी कम है और पूर्वाग्रह ग्रामीण क्षेत्रों में कहीं अधिक बाधक हैं।

कृषि के सभी पहलुओं (इनपुट, भूमि, कृषि प्रबंधन, उत्पादन बिक्री) पर नियंत्रण जारी रहने के कारण संरचनात्मक परिवर्तन नहीं हो पा रहा है, जिसने नवाचार और विविधीकरण को बाधित किया है। सब्सिडी की नीतियों ने भूजल, बिजली और प्रदूषणकारी उर्वरक के अत्यधिक उपयोग तथा कृषि अपशिष्ट के कम उपयोग (और परिणामस्वरूप खुले में जलाने) को बढ़ावा दिया है। सुधार रुक गए हैं, लेकिन 2050 तक संरचनात्मक रूप से रूपांतरित ग्रामीण अर्थव्यवस्था का निर्माण करने के लिए इन्हें तार्किक अंजाम तक ले जाना होगा।

नई फसलों और गैर-फसल कृषि के सृजन के लिए कृषि और संबद्‌ध उत्पादों में घरेलू व्यापार के नियंत्रण को हटाना जरूरी है। दक्षिण भारत के कुछ राज्यों ने पहले ही रास्ता तैयार कर लिया है। निर्यात योग्य वस्तुओं में निवेश के प्रयोजनार्थ कृषि वस्तुओं के लिए स्थिर निर्यात-आयात नीति की आवश्यकता है, जिसमें तदर्थ प्रतिबंधों के स्थान पर टैरिफ संरक्षण एवं निर्यात शुल्क लागू किया जाए, ताकि वैश्विक कीमतों में होने वाले व्यापक उतार-चढ़ाव से बचा जा सके। ग्रामीण और अर्ध-ग्रामीण क्षेत्रों में वाणिज्य और उद्‌योग के फलने-फूलने के लिए, किसानों के लिए भूमि को गैर-कृषि उपयोग में परिवर्तित करना तथा उसे उद्‌यमियों को किराये पर देना या बेचना आसान होना चाहिए। राजमार्ग और सड़कें विकास के मार्ग हैं, इनके निर्माण के लिए भूमि अधिग्रहण आसान होना चाहिए तथा निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए लैंड पूलिंग होनी चाहिए।

सार्वजनिक वस्तुओं के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे जैसे सड़क, अनुसंधान एवं विकास, कृषि विस्तार, 24x7 बिजली, दूरसंचार केबल, डिजिटल डेटा कनेक्टिविटी, जल आपूर्ति ग्रिड, जल निकासी और टिकाऊ कृषि के लिए भूजल पुनर्भरण प्रणालियों का उन्नयन करके इन सुधारों को संपूरित किया जाना चाहिए। गरीबी उन्मूलन के लिए ग्रामीण अर्थव्यवस्था का रूपांतरण आवश्यक है।

कृषि के आधुनिकीकरण और विविधीकरण के साथ-साथ निम्न कुशल, श्रम प्रधान विनिर्माण के तीव्र विकास को भी बढ़ावा देना होगा, ताकि केंद्रीय स्थल के गरीब क्षेत्रों के ग्रामीण क्षेत्रों में अकुशल और कम शिक्षित आबादी को काम पर लगाया जा सके। खेत से बाज़ार तक आपूर्ति श्रृंखला की गुणवत्ता

[29] दो-तिहाई आबादी कृषि पर निर्भर है।

[30] बुवाई के समय श्रम की अधिकतम मांग होती है तथा कटाई के समय मांग थोड़ी कम होती है, हालांकि मशीनीकरण के कारण यह मांग कम हो गई है। फसल बढ़ने की अधिकांश अवधि के दौरान प्रच्छन्न बेरोजगारी या अल्परोजगार की स्थिति बनी रहती है।

बहुत निम्न है। इसका एक कारण नौकरी कौशल की खराब गुणवत्ता है। बुनियादी शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाया जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर 100% छात्र पढ़ सकें। ग्रामीण क्षेत्रों के लिए उपयुक्त रोजगार कौशल, जैसे कृषि प्रसंस्करण, कृषि एवं कृषि सेवाएं, लॉजिस्टिक्स, निर्माण और रखरखाव आदि का सृजन किया जाना चाहिए। ऐसा करने का टिकाऊ और लागत प्रभावी तरीका शिक्षकों, शिक्षण सहायकों और छात्रों के लिए सार्वभौमिक डिजिटल कनेक्टिविटी और ऑनलाइन शैक्षिक सेवाएं प्रदान करना है। कई नौकरी कौशल ऐसे हैं जो ऑनलाइन भी प्रदान किए जा सकते हैं।

4.3.3 अवसंरचना

भारत में राष्ट्रीय बहुविध परिवहन और लॉजिस्टिक्स प्रणाली होगी जो लागत, पारगमन और प्रतिवर्तन समय के संदर्भ में एशिया में सर्वश्रेष्ठ प्रणाली के समान होगी। सड़कों/राजमार्गों, बंदरगाहों, हवाई अड्डों, जलमार्गों, रेल लाइनों को एचआईसी के मानकों और गुणवत्ता के अनुरूप उन्नत किया जाएगा। गहरे पानी वाले एक या दो बंदरगाह होंगे जो सबसे बड़े कंटेनर शिप को ग्रहण कर सकेंगे। विद्युत उत्पादन, वितरण और पारेषण के कार्यों को बुद्धिमान प्रणालियों द्वारा अनुकूलित किया जाएगा, जो विदेशी साइबर हमलों से पूरी तरह से अलग हैं। रेलवे लाइनों और सिग्नलिंग सिस्टम, गैस और तेल की पाइपलाइनों, बिजली के सामान को सामान्य वाहक के सिद्धांत पर चलाया जाएगा, जिसमें क्रमशः ट्रेन सेवाएं चलाने, तेल और गैस तथा बिजली के परिवहन के लिए सभी आपूर्तिकर्ताओं के लिए खुली पहुंच होगी। बिजली का उत्पादन परमाणु ईंधन, सौर एवं पवन, तथा हाइड्रोजन ईंधन पर अधिक निर्भर होगा।

उत्पादकता में तेजी से वृद्धि के लिए सार्वभौमिक ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी आवश्यक है, क्योंकि डिजिटल अवसंरचना में लाभ की दर सड़कों और राजमार्गों की तुलना में कहीं अधिक है। सभी ब्लॉकों और तालुकों/तहसीलों तक वेब/इंटरनेट कनेक्टिविटी के लिए फाइबर-ऑप्टिक लैंडलाइन की राष्ट्रीय आधारशिला का उद्देश्य अच्छा है। भारत के तटीय विशेष आर्थिक क्षेत्र सहित 99% भौगोलिक कवरेज के लिए मोबाइल/डिजिटल नेटवर्क हासिल किया जाएगा। हम एक ऐसे दूरसंचार और 6जी अवसंरचना की परिकल्पना करते हैं जो शत्रुतापूर्ण और विद्वेशपूर्ण देशों और अंतर्राष्ट्रीय माफिया ऑपरेटरों से पूरी तरह सुरक्षित हो।

स्वच्छ भारत मिशन के पहले चरण में खुले में शौच को कम करने के लिए घरों में शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराने पर ध्यान केंद्रित किया गया। हर घर जल मिशन का उद्देश्य जल जनित बीमारियों की घटनाओं को कम करने के लिए परिवारों को स्वच्छ जल उपलब्ध कराना है। स्वच्छ भारत के अगले चरण में राज्य एवं राष्ट्रीय जल ग्रिड, सीवेज ग्रिड और ठोस अपशिष्ट ग्रिड का निर्माण करने के लिए प्रणालीगत दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए। प्रत्येक शहरी और ग्रामीण परिवार तथा प्रत्येक गांव और कस्बे में आधुनिक सीवेज और ठोस अपशिष्ट संग्रह प्रणाली होगी, जो राज्य की रिसाइक्लिंग और खतरनाक अपशिष्ट निपटान प्रणाली से जुड़ी होगी। इन उपायों से पर्यावरणीय आंत्रविकृति (एन्टोपैथी) समाप्त हो जाएगी, जो भारत में बाल कुपोषण का मुख्य कारण है।

4.3.4 विनिर्माण

कृषि और विनिर्माण के संबंध में संरचनात्मक परिवर्तन का ऐतिहासिक पैटर्न सभी महाद्वीपों में उल्लेखनीय रूप से समान रहा है। सकल घरेलू उत्पाद और कुल रोजगार में विनिर्माण का हिस्सा कृषि में गिरावट के साथ बढ़ा, चरम पर पहुंचा और उसके बाद उसमें गिरावट आई। हालाँकि, विवरण में अंतर था। यूरोप और अमेरिका में मानक पैटर्न की तुलना में, लैटिन अमेरिका में शिखर पहले और कम था, जबकि पूर्व और दक्षिण पूर्व में एशिया में यह बाद में और अधिक ऊँचा था।

भारत इस पैटर्न का एक बड़ा अपवाद है, जहां विनिर्माण मूल्य वर्धन और रोजगार की हिस्सेदारी में वृद्धि होती है और फिर जल्दी से स्थिर हो जाती है (और फिर एक उतार-चढ़ाव भरे पैटर्न का अनुसरण करती है)। इसका कारण 1950 से 1980 के दौरान लागू की गई अनेक विनिर्माण विरोधी नीतियां थीं, जिन्हें अगले दो दशकों के दौरान धीरे-धीरे पलटा गया और सुधारा गया।

पिछले दशक के दौरान विनिर्माण को उसके संभावित शिखर तक पुनर्जीवित करने के लिए सकारात्मक नीति और संस्थागत माहौल बनाया गया है। औपचारिक विनिर्माण क्षेत्र ने रोजगार और वास्तविक मजदूरी की वृद्धि दर में क्रमिक वृद्धि के माध्यम से इस बदलते नीतिगत माहौल का जवाब दिया है।[31] रोजगार की प्रवृत्ति वृद्धि दर 2000-01 में लगभग 3.4% से बढ़कर 2021-22 में 3.8% हो गई है (गुलाबी रेखा, **चित्र 10**) और वास्तविक मजदूरी 2000-01 में वृद्धि दर 1.0% से बढ़कर 2021-22 में 2.4% प्रति वर्ष हो गई है (नीली रेखा, **चित्र 10**)।[32]

बुनियादी शिक्षा (कार्यात्मक साक्षरता और गणना) की गुणवत्ता में व्यापक सुधार तथा फैक्टरी में काम करने के लिए ग्रामीण युवाओं का कौशल विकास निम्न एवं अर्ध-कुशल श्रम प्रधान विनिर्माण के तीव्र विकास के लिए एक आवश्यक शर्त है, जिसमें खराद ऑपरेटर, वेल्डर, रिवेटर, स्टैम्पिंग मशीन ऑपरेटर जैसी अर्ध-कुशल नौकरियां शामिल हैं। कानून लचीले न होने के कारण चीन की तुलना में भारतीय विनिर्माण फर्मों का आकार असाधारण रूप से कम है, क्योंकि नई श्रम संहिताओं के प्रभावी होने की तिथि अभी तक अधिसूचित नहीं की गई है। उत्पादन का अत्यधिक उच्च हिस्सा अनौपचारिक क्षेत्र में है, जिनकी आपूर्ति श्रृंखलाएं निम्न गुणवत्ता की हैं, अंतिम माल का उत्पादन सस्ता है क्योंकि वे निम्न गुणवत्ता वाले मध्यवर्ती इनपुट और अकुशल श्रमिकों का उपयोग करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में निम्न गुणवत्ता वाली इन आपूर्ति श्रृंखलाओं के उत्पादन की कोई मांग नहीं है, इसलिए विनिर्मित निर्यात में इनकी हिस्सेदारी कम है।

[31] सांकेतिक मजदूरी की गणना एएसआई से की जाती है और वास्तविक मजदूरी प्राप्त करने के लिए पीएफसीई के लिए निहित अपस्फीतिकारक द्वारा अपस्फीति की जाती है। दीर्घावधि (1950-1 से 2023-4), स्थिर (2010-11) मूल्य और वर्तमान मूल्य श्रृंखला का स्रोत आरबीआई है।

[32] रोजगार = 0.335 0.0002∗ समय, वास्तविक मजदूरी = 0.009 0.0006∗ समय।

चित्र 10 : रोजगार में वृद्धि {श्रमिक मानव-दिन) एवं वास्तविक मजदूरी दर

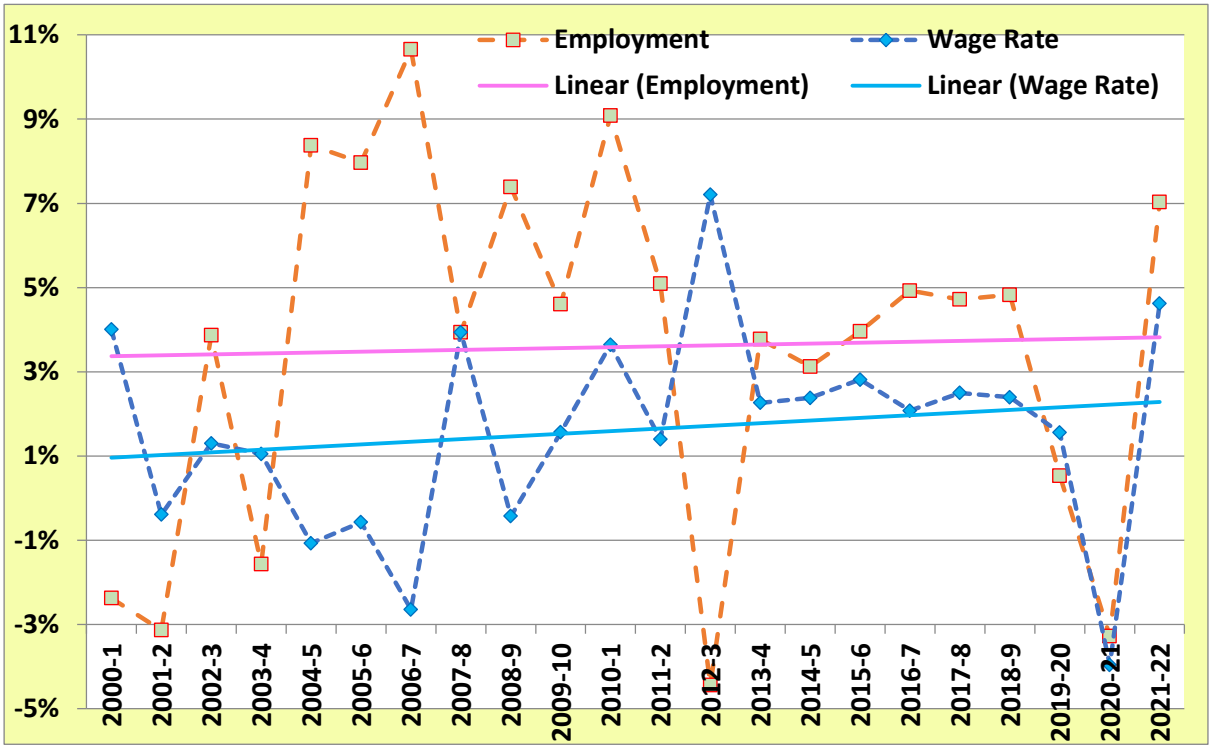

स्रोत : लेखक की गणना विनिर्माण पर एएसआई डेटा और आरबीआई से पीएफसीई की स्थिर और वर्तमान श्रृंखला पर आधारित है।

पीएलआई योजना ने उपभोक्ता वस्तुओं के विनिर्माण के पैमाने को न्यूनतम कुशल पैमाने (एमईएस) तक बढ़ाने की प्रक्रिया शुरू की है। उल्टे एकीकरण को प्रोत्साहित करने के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले बुनियादी ढांचे के साथ विशेष औद्योगिक सम्पदा की स्थापना करना इस प्रक्रिया का अगला चरण है। उदाहरण के लिए, रासायनिक अपशिष्ट के प्रसंस्करण के लिए सामान्य सुविधाएं रासायनिक उद्योग के लिए विनियामक अनुपालन की लागत को कम करेंगी।

तीसरा स्तर विशिष्ट औद्योगिक शहरों का विकास है, जिसमें अतिव्यापी इनपुट आपूर्तिकर्ता, इनपुट सेवाओं और श्रम कौशल का सामान्य सेट होगा, ताकि उल्टे संबंध को सामान्य प्रशिक्षण सुविधाओं और अंततः अनुसंधान एवं विकास तक विस्तारित किया जा सके। प्रतिष्ठा निर्माण और ब्रांडिंग में सुगमता के कारण ऐसे शहरों को गुंजाइश की अर्थव्यवस्था और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों से आगे के संबंध को सुगम बनाने का अतिरिक्त लाभ होता है।

सुधारा हुआ एवं सरलीकृत जीएसटी, सीमा शुल्क टैरिफ संरचना और प्रत्यक्ष कर संहिता सफल औद्योगिक नीति के लिए महत्वपूर्ण पूरक हैं। विदेशी मुद्रा प्रबंधन और ऋण प्रवाह के साथ प्रासंगिक कर प्रणालियों का डिजिटलीकरण और एकीकरण अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के विकास और सेवा की लागत को कम करके निर्यात को सुगम बनाता है। इससे एसएमई को अपने उत्पादन की गुणवत्ता बढ़ाने की महत्वपूर्ण चुनौती पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलेगी।

मांग पक्ष पर, व्यवधान के जोखिम और एक देश से आपूर्ति पर अत्यधिक निर्भरता को कम करने के लिए आपूर्ति श्रृंखलाओं का वैश्विक विविधीकरण भारत के लिए एक पीढ़ी में एक बार मिलने वाला अवसर प्रदान करता है। इस स्तर पर दोहरी व्यापार नीति महत्वपूर्ण है, जो नियंत्रित, अपारदर्शी, उच्च जोखिम वाले और शत्रु देशों तथा शेष विश्व से आयात के बीच अंतर करती है। यह हमारी निर्यात-आयात नीति और सीमा शुल्क संरचना तथा टैरिफ दरों के साथ-साथ मुक्त व्यापार करार, अधिमान्य व्यापार करार और बहुपक्षीय करार जैसे कि क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (आरसीईपी) और ट्रांस-पैसिफिक साझेदारी के लिए व्यापक और प्रगतिशील करार (सीपीटीपीपी) के प्रति हमारे दृष्टिकोण में भी प्रतिबिंबित होना चाहिए।[33]

जैसा कि पिछले खंडों में उल्लेख किया गया है, यदि मुक्त बाजार, खुले, पारदर्शी, लोकतंत्रों (क्वाड+ईयू+यूके) का समूह संयुक्त रूप से एक द्वैतवादी व्यापार और निवेश नीति ढांचे को अपनाए, तो वैश्वीकरण के लाभों को अधिकतम किया जा सकता है और लागतों को न्यूनतम किया जा सकता है।[34] चूंकि व्यापार जोखिम मुख्यतः वस्तु व्यापार तक ही सीमित है, इसलिए पारंपरिक मुक्त व्यापार करार (एफटीए), जिसमें विनिर्मित वस्तुओं पर शून्य टैरिफ होगा, बशर्ते 70-80 प्रतिशत मूल्य वर्धन एफटीए देशों के अंतर्गत हो, एक आदर्श करार है जिसे इस दशक में प्राप्त किया जा सकता है। श्रम गहन और अर्ध-कुशल श्रम गहन वस्तुओं में हमारे तुलनात्मक लाभ को देखते हुए, अत्यधिक आबादी वाले, एशियाई, मध्यम आय वाले देशों के साथ एफटीए की तुलना में श्रम की कमी वाले देशों के साथ एफटीए हमारे लिए अधिक लाभदायक है, जिनमें "व्यापार सृजन" के तत्व की तुलना में "व्यापार विचलन" का घटक बहुत बड़ा है।

यदि विनिर्माण क्षेत्र से संबंधित वस्तुओं, सेवाओं और प्रौद्योगिकी पर ध्यान केंद्रित किया जाए, तो मूल्य श्रृंखला की विविधता भी प्राप्त की जा सकती है क्योंकि फिल्म, पुस्तक जैसी असंबंधित सेवाओं की तुलना में उन सेवाओं के लिए बौद्धिक संपदा करार आसान होंगे जो विनिर्माण को संपूरित करती हैं। पेटेंट और बौद्धिक संपदा करार हमारे लिए हानिकारक नहीं है, यदि विकसित देश पेटेंट की अवधि और उन पीढ़ियों की संख्या पर समझौता करने के लिए तैयार हैं जिन पर उन्हें लागू किया जा सकता है।[35]

4.3.5 सेवाएं

आधुनिक सेवाएं ग्रामीण अर्थव्यवस्था के संरचनात्मक परिवर्तन में ऐतिहासिक रूप से कहीं अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। इस प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए दो मुद्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता होगी। पहला मुद्दा कृषि और ग्रामीण सेवा क्षेत्र में आवश्यक रोजगार कौशल का प्रावधान

[33] ध्यान दें कि आरसीईपी से सीपीटीपीपी काफी अलग है, जिसमें एक ऐसा देश शामिल होता है जिसने विषम व्यापार, प्रौद्योगिकी, निवेश और आर्थिक नीतियों के माध्यम से कई विनिर्मित वस्तुओं के निर्यात पर एकाधिकार कर लिया है। यह टीपीपीपी से भी भिन्न है जिसका प्राथमिक उद्देश्य विषम आईपी करार लागू करना है, जो "उच्च गुणवत्ता वाले करार" की आड़ में गरीब देशों की कीमत पर धनी देशों को लाभ पहुंचाते हैं। इसके विपरीत, कोई भी बहुपक्षीय व्यापार समझौता, जिसमें चीन भी शामिल हो, विनिर्माण एकाधिकार, संभावित आर्थिक दबाव और राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे को और अधिक बढ़ाता है।

[34] क्वाड = संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, भारत, ऑस्ट्रेलिया से मिलकर बना समूह।

[35] लंबी अवधि के तथा बहुस्तरीय/बहुपीढ़ीगत पेटेंट बौद्धिक संपदा के धनी, शुद्ध निर्यातकों के पक्ष में होते हैं, जबकि छोटे, अधिक सीमित करार बौद्धिक संपदा के गरीब, शुद्ध आयातकों के पक्ष में होते हैं।

है, और दूसरा घर से बाहर काम करने वाली महिलाओं पर सामाजिक बाधाएं हैं। इनका निर्माण केवल अच्छी बुनियादी शिक्षा की नींव पर ही किया जा सकता है। सार्वजनिक संस्था को विश्व स्तर पर परिभाषित 5000-6000 तकनीकी कौशल के लिए मानक प्रख्यापित करना चाहिए। फिर निजी क्षेत्र के सहयोग से प्रमाण पत्र और कौशल प्रदान करने की एक व्यापक प्रणाली बनाई जानी चाहिए। डिजिटल और ऑनलाइन सेवा क्रांति का उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और रोजगार कौशल में प्रशिक्षण के प्रावधान को आगे बढ़ाने और महिलाओं को घर से काम करने के लिए डिजिटल अवसंरचना प्रदान करने के लिए किया जा सकता है।

महामारी घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय यात्रा और पर्यटन के लिए एक बड़ा झटका रही है। अगले कुछ वर्षों में इस सदमे से उबर लिया जाएगा। भारत का पर्यटन बाज़ार बहुत खराब तरीके से विकसित हुआ है और इसके परिणामस्वरूप इसमें ऐसी अपार संभावनाएं हैं जिनका दोहन नहीं किया गया है। भारत की विशाल भौगोलिक, मानवीय, सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता को देखते हुए यहां चिकित्सा, धार्मिक और प्राकृतिक संसाधन पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। इस लगभग अछूते क्षेत्र को देखते हुए, पर्यावरणीय दृष्टि से टिकाऊ, हरित पर्यटन के विकास पर उचित ध्यान दिया जाना चाहिए।

सेवाएं निम्न से मध्यम से उच्च तक के कौशल की पूरी श्रृंखला के साथ संभावित नौकरियों की एक श्रृंखला के लिए अवसर प्रदान करती हैं, जिनमें से प्रत्येक में दक्षता के कई स्तर होते हैं। मध्यम स्तर के कौशल (जैसे निर्माण के लिए) का सृजन एवं उपयोग अपेक्षाकृत उपेक्षित रहा है और इस पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। यहां तक कि निम्न मध्यम कौशल भी ऐसे अवसर प्रदान करते हैं जिनका दोहन नहीं किया गया है (उदाहरण के लिए, आरोग्यता, प्राथमिक और पूर्व-विद्यालय शिक्षा, प्राथमिक देखभाल, बुजुर्ग देखभाल)।

इलेक्ट्रॉनिक रूप से संचालित सेवाएं (ई-सेवाएं) सेवा व्यापार का ऐसा हिस्सा है जो सबसे तेजी से बढ़ रहा है। पिछले कुछ वर्षों में इसमें 250% से अधिक की वृद्धि हुई है। सौभाग्य से, इन (व्यावसायिक) सेवाओं में भारत की हिस्सेदारी बढ़ रही है। अगले दशक में, एचआईडीसी में जनसांख्यिकीय गिरावट और आव्रजन विरोधी भावना सामाजिक (स्वास्थ्य, शिक्षा, सरकारी) और व्यक्तिगत सेवाओं के विघटन और उनसे संबंधित ई-सेवाओं के विकास को बढ़ावा देगी। हमें इन सेवाओं को आकर्षित करने में सक्रिय भूमिका निभाना चाहिए। इसके लिए अमेरिका, यूरोपीय संघ आदि में सरकारी नियमों और सरकारी प्रथाओं में बदलाव की आवश्यकता है, ताकि (क) सेवाओं का विघटन और भारत से ऑनलाइन प्रावधान, (ख) चिकित्सा पर्यटन के पैकेजों के माध्यम से भारत में सर्जरी जैसी भौतिक सेवाओं का प्रावधान हो सके।

कार्यबल में शिक्षित, विवाहित महिलाओं की भागीदारी को सुगम बनाने के लिए भारत में घर से काम करने की सक्रिय व्यवस्था होनी चाहिए। विश्व में सेवाओं की ऑनलाइन आपूर्ति को प्रोत्साहित करने के लिए इसमें कहीं से भी काम करने की नीति भी होनी चाहिए। बाधाओं को दूर करें (जैसे, स्वीकार्य व्यय के लिए कर नीति) और जहां आवश्यक हो, प्रोत्साहन प्रदान करें।

सामाजिक सेवाएं

शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में प्रदान की जाने वाली शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य सेवाओं की गुणवत्ता में बहुत बड़ा अंतर है। कस्बों में जीवन की सामान्य गुणवत्ता तथा बेहतर कौशल वाले व्यक्तियों को वहां रोजगार पाने का उपलब्ध अवसर इसका एक महत्वपूर्ण कारण है। यदि सरकारी क्षेत्र में कार्यरत कुशल व्यक्तियों (डॉक्टर, शिक्षक, नर्स) को ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने के लिए निर्दिष्ट किया जाता है, तो आमतौर पर उनकी अनुपस्थिति का स्तर उच्च होता है। इसका परिणाम यह है कि शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य और शिक्षा सेवाओं की गुणवत्ता खराब है। सभी गांवों में डिजिटल कनेक्टिविटी के साथ-साथ निदान और उपचार के लिए विशेषज्ञ प्रणालियों की उपलब्धता तथा शिक्षण सामग्री और शिक्षण सहायक सामग्री और उपकरणों का प्रावधान कम शिक्षित या कम प्रशिक्षित स्वास्थ्य और शिक्षा प्रदाताओं को सेवा की गुणवत्ता में व्यापक सुधार करने में मदद कर सकता है।

स्वास्थ्य में विशेषज्ञ एआई प्रणालियों (डिजिटल डॉक्टर सुशारता या डिजिटल वैद पतंजलि) और **शिक्षा और कौशल में विशेषज्ञ एआई प्रणालियों** (डिजिटल प्रोफेसर द्रोण या गुरु एकलव्य या ई-आचार्य) तक ऑनलाइन पहुंच प्रदान करने के लिए मिशन शुरू किया जा सकता है। ये सुविधाएं प्रत्येक पंचायत, प्रत्येक प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय और स्वास्थ्य केन्द्र में उपलब्ध होनी चाहिए![36]

अविवाहित महिलाओं और पुरुषों (अविवाहित, तलाकशुदा या सदैव अविवाहित) के बीच शिक्षा, वेतन और एलएफपीआर का अंतर कम हो रहा है। हालाँकि, विवाहित पुरुषों और महिलाओं के बीच एलएफपीआर का अंतर अभी भी बहुत बड़ा है। इसका एक कारण यह है समाज द्वारा उन पर बच्चों और वृद्धों के देखभाल की जिम्मेदारी थोपी गई है। केंद्र सरकार और राज्य सरकारों को बाल देखभाल और वृद्ध देखभाल के लिए बाजार के सृजन को प्रोत्साहित करना चाहिए। जैसे-जैसे भारत में वृद्ध लोगों की संख्या बढ़ती जाएगी, वृद्ध देखभाल उत्तरोत्तर अधिक महत्वपूर्ण होता जाएगा।

मातृत्व और गतिशीलता इसके दो अन्य कारण हैं। सर्वेक्षणों से पता चलता है कि महिलाओं की अपनी प्राथमिकता होती है कि वे घर से कार्यस्थल तक कितनी दूरी तक यात्रा करना चाहती हैं। अधिकतम 20 मिनट की यात्रा को प्राथमिकता दी जाती है, हालांकि कुछ महिलाएं यात्रा के लिए अधिक समय भी खर्च करने को तैयार रहती हैं। सरकार निम्नलिखित को प्रोत्साहित कर सकती है: (i) कम्पनियों के अंदर और बाहर क्रेच का निर्माण, (ii) गांवों से कारखाना परिसर तक कम्पनी परिवहन का प्रावधान, (iii) उद्योग परिसर के भीतर महिलाओं के लिए कम्पनी आवास का प्रावधान, (iv) सार्वजनिक परिवहन और घर/कार्यस्थल के बीच अंतिम छोर तक सम्पर्क, और (v) मातृत्व अवकाश की नीतियां।

[36] शिक्षा के लिए दीक्षा नामक एक अच्छा कार्यक्रम पहले से ही मौजूद है, लेकिन प्री-स्कूल और एफएलएन के लिए दीक्षा जूनियर की आवश्यकता है। अधिक शिक्षण सहायक सामग्री, पूरक शिक्षण सामग्री और आभासी विज्ञान प्रयोगों की भी आवश्यकता है।

5. ज्ञान अर्थव्यवस्था: विकास चालकों को सशक्त बनाना

नवाचार और उद्यमशीलता भारत की ज्ञान अर्थव्यवस्था की कुंजी होगी, जिसके लिए भारत सरकार की स्टैंड-अप इंडिया, स्टार्ट-अप इंडिया पहल द्वारा नींव पहले ही रखी जा रही है, जो रोजगार सृजन में तकनीकी स्टार्ट-अप और नए उद्यमियों को केंद्रीय भूमिका प्रदान कर रही है। नवप्रवर्तन की परिकल्पना न केवल (विनिर्माण) प्रौद्योगिकी के अग्रिम मोर्चे पर की गई है, बल्कि अल्पविकसित अर्थव्यवस्था के निचले पायदान पर भी की गई है; उदाहरण के लिए "ग्रामीण उद्यमियों" द्वारा कृषि, ग्रामीण विनिर्माण और सेवाओं में परिवर्तन लाने के लिए नवप्रवर्तन तथा "सामाजिक उद्यमियों" द्वारा गुणवत्ता से समझौता किए बिना 1.6 अरब लोगों के बाजार तक पहुंचने के लिए नवप्रवर्तन। हाइब्रिड भौतिक-डिजिटल (फिजिटल) प्रणालियों में नवप्रवर्तन, जो मानव संपर्क के सामाजिक मूल्य और वेब-आधारित सेवाओं की लागत प्रभावशीलता को संतुलित करता है। नवोन्मेषी उद्यमिता का आधार अच्छी शिक्षा, सीखने, सोचने, प्रश्न करने, समाधान ढूंढने और जोखिम लेने की क्षमता है।[37] दूसरा स्तंभ प्रतिस्पर्धी अर्थव्यवस्था है, जिसमें अल्पाधिकारियों के पास वीटो पावर नहीं होती है, यह भी नवाचारों के फलित होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्थापित अल्पाधिकारवादी, जिनके मुनाफे को नये आविष्कारों से खतरा होता है, सीधे हस्तक्षेप करके या नियामक कब्जे या राजनीतिक प्रतिष्ठान के साथ मिलीभगत के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से उन्हें फलने-फूलने और फैलने से रोक सकते हैं।[38] नीति निर्माताओं और नियामकों को इसके प्रति सतर्क रहना चाहिए तथा संस्थाओं को भी ऐसी कार्रवाइयों को विफल करने के लिए सतर्क रहना चाहिए।

उच्च शिक्षा और अनुसंधान प्रणाली में हाल ही में शुरू किया गया सुधार केवल पहला कदम है। सम्पूर्ण अधिसंरचना का डिजाइन फिर से बनाना होगा। ज्ञान अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए राज्य सरकारों के अधीन कृषि अनुसंधान प्रणाली सहित सरकारी अनुसंधान संस्थानों में और सुधार महत्वपूर्ण है। सफल अंतरिक्ष आयोग की तर्ज पर रक्षा अनुसंधान एवं विकास आयोग स्थापित करके सामरिक एवं रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रणाली में सुधार करने की आवश्यकता है। ऐसा आयोग बुनियादी अनुसंधान, उच्च स्तरीय प्रोफेसरों/शिक्षकों के प्रशिक्षण से लेकर प्रोटोटाइप विकसित करने और उन्हें उत्पादन में मदद करने तक भविष्य की प्रौद्योगिकियों की पहचान और विकास करेगा। इसमें हाइपरसोनिक वाहन, उपग्रह रक्षा प्रणाली और उच्च शक्ति वाले लेजर जैसी विशुद्ध रक्षा प्रणालियों से लेकर सेमीकंडक्टर, रोबोट, स्वायत्त वाहन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, विशेषज्ञ प्रणालियां और साइबर उपकरण जैसी दोहरे उपयोग वाली वस्तुएं शामिल होंगी।

भारतीय अनुसंधान प्रणालियों और भारतीय विश्वविद्यालय के एसटीईएम विभागों को विकसित देशों के विश्वविद्यालयों और अनुसंधान प्रयोगशालाओं में किए जा रहे अनुसंधान से जोड़कर उनकी वैश्विक शिक्षा को मजबूत करने तथा उन्हें नए स्टार्ट-अप में शामिल करने की आवश्यकता है।

नई और संशोधित दवाओं के निजी विकास और उनके परीक्षण और ट्रायल को बहाल करने के लिए चिकित्सा और औषधि अनुसंधान प्रणाली में व्यापक बदलाव की आवश्यकता है। नई चिकित्सा

[37] प्रमाणिकतावाद के विपरीत, यह डिग्री या स्कूल प्रमाण पत्र के आधार पर नौकरी पाने पर केंद्रित है।

[38] फिलिप अघियन और अन्य ने अपनी पुस्तक, "क्रिएटिव डिस्ट्रक्शन" में शोध-आधारित सलाह प्रदान की है।

प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी आवश्यक होगी। आयुर्वेद और यूनानी जैसी पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों और योग जैसी निवारक (शारीरिक और मानसिक) स्वास्थ्य प्रणालियों पर उचित ध्यान दिया जाना चाहिए और उनका समर्थन किया जाना चाहिए।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था, जहां दो तिहाई से अधिक आबादी रहती है और जहां कार्यबल का आधा हिस्सा कार्यरत है, में परिवर्तन लाने तथा गरीबी और कुपोषण को समाप्त करने के लिए कृषि अनुसंधान और विस्तार, बुनियादी शिक्षा और जन कौशल विकास महत्वपूर्ण है। तार्किक विश्लेषण और वैज्ञानिक पद्धति में प्रशिक्षण, भारत और विश्व में उपलब्ध सूचना और ज्ञान तक पहुंच तथा स्थानीय समस्याओं के समाधान के लिए स्थानीय स्टार्ट-अप/नवाचार के लिए उचित प्रोत्साहन इस अर्थव्यवस्था का रूपांतरण करने में मदद करेंगे।

औषधि, फार्मास्यूटिकल्स और चिकित्सा उपकरण क्षेत्र उन कुछ विनिर्माण क्षेत्रों में से एक है जो अभी भी मूल्य नियंत्रण के अधीन हैं।[39] 1990 के दशक और 2000 के दशक पूर्वार्ध के दौरान किए गए सुधारों की श्रृंखला को तब से उलट दिया गया है और यहां तक कि नए सुधार भी जोड़े गए हैं। यह अत्यधिक द्वैधता से भी ग्रस्त है, जहां दवाओं और फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्र की बड़ी कंपनियों को अत्यधिक विनियमन का सामना करना पड़ता है, जबकि छोटे, अनौपचारिक उत्पादक अक्सर नियामक के गुणवत्ता मानदंडों से बच निकलते हैं। अगले 30 वर्षों के दौरान चिकित्सा और फार्मास्यूटिकल्स के क्षेत्र में नई खोजों की अपार संभावनाओं को देखते हुए, अनुसंधान एवं विकास, औषधि परीक्षण एवं ट्रायल, उत्पादन और विपणन से जुड़ी संपूर्ण विनियामक प्रणाली को आधुनिक बनाकर इसे पेशेवर खाद्य एवं *औषधि प्रशासन* में परिवर्तित करने की आवश्यकता है।

5.1 शिक्षा

भारत में जनसांख्यिकीय लाभांश के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है और यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता का उल्लेख किया गया है कि इसे वास्तविकता में परिवर्तित किया जाए। इसके लिए बुनियादी शिक्षा (कार्यात्मक साक्षरता और गणना) और रोजगार कौशल पर राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।[40]

यहां तक कि निम्न स्तर की नौकरियों के लिए भी निर्देशों को पढ़ने, समझने और उनका पालन करने की क्षमता एक पूर्वापेक्षा है। शोध से पता चलता है कि प्राथमिक स्तर के अंत में 45.3% बच्चे पढ़ने, लिखने और अंकगणित (एफएलएन) में कुशल नहीं हैं (पंक्ति 1-2, **तालिका 5**)। निम्न मध्यम से लेकर उच्च मध्यम कौशल वाली नौकरियों के लिए अवर या उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर पर पढ़ने, लिखने, बोलने और समझने में उच्च स्तर की दक्षता की आवश्यकता होगी। प्राथमिक और माध्यमिक दोनों स्तर की शिक्षा में हमारा प्रदर्शन प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के स्तर पर अपेक्षा से भी खराब है **(तालिका 5)**।

[39] तेल और गैस क्षेत्र ही एकमात्र अन्य क्षेत्र है।

[40] शिक्षा को संविधान की राज्य सूची में रखा गया था तथा यह 1996 तक वहीं रही, क्योंकि शिक्षा 1960 के दशक में राज्यों द्वारा स्थापित प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के माध्यम से पंचायत और नगरपालिका स्तर पर प्रदान की जानी थी। शिक्षा को राज्य सूची से हटाकर समवर्ती सूची में लाने का एकमात्र कारण राज्यों में नीति, मानक और प्रमाणन में राष्ट्रीय एकरूपता लाना था।

तालिका 5 : तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षा की पहुंच और उपलब्धि

Education; Actual & Expected based on cross-country regression						
		India		Predicted value of Indicator		
		Gap	Actual	2022	2031-32	2047-48
				India Now	India UMIC	India HIC
	Minimum reading proficiency (end of primary %)					
1	Total	-6.1	59.8	53.7	44.5	21.0
	Adult Literacy rate (% of people ≥ 15)					
2	Total	-7.9	76.0	83.9	92.0	
	School enrollment, (% gross)#					
3	Secondary	5.0	78.8	73.8	83.9	
4	Tertiary	-0.6	31.6	32.2	41.7	60.8
	Educational attainment, Primary 25+ (% pop.)					
5	Total	-6.3	62.8	69.1	78.9	99.2
6	Male	-1.8	71.8	73.6	82.3	100
7	Female	-11.2	53.9	65.1	75.8	97.5
	Educational attainment, Lower Sec. 25+ (% pop.)					
8	Total	-2.8	49.8	52.5	62.5	82.5
9	Male	1.6	58.7	57.1	66.0	84.0
10	Female	-8.6	41.0	49.6	59.8	80.4
	Educational attainment, Upper Sec. 25+ (% pop.)					
11	Total	-5.7	31.6	37.3	46.8	66.1
12	Male	-1.9	37.8	39.7	48.2	65.6
13	Female	-9.9	25.5	35.4	45.4	65.6
	Educational attainment, Bachelor's 25+ (% pop.)					
14	Total	0.0	12.0	12.0	15.6	22.9
15	Male	5.6	14.6	8.9	11.6	19.9
16	Female	-2.0	9.8	11.8	15.8	24.1
Data: World Development Indicators (WDI), 2022						
Note: Gap = Actual -predicted (based on cross-country regression)						
* For "min reading proficiency" India data is for 2017 : PcGdp(2017)=$ 6112						

पिछड़े राज्यों को इस अंतर को ठीक करने तथा 2031-32 तक यूएमआईसी शीर्षक वाले कॉलम के अंतर्गत दर्शाए गए स्तरों तक पहुंचने (या उससे आगे निकलने) तथा 2047-48 तक एचआईसी शीर्षक वाले कॉलम के अंतर्गत दर्शाए गए स्तरों तक पहुंचने (या उससे आगे निकलने) की आवश्यकता है। परिणामों और क्षमता की पहले जो उपेक्षा हुई है उनको विशेष प्लेटफार्मों के माध्यम से ठीक करने की कोशिश की गई है, जैसे निपुण (समझ और गणना के साथ पढ़ने में दक्षता के लिए राष्ट्रीय पहल) कार्यात्मक साक्षरता और गणना (3आर) के लिए एक कोर प्रदान करता है जिसे मजेदार तरीके से सीखने, समाजीकरण और संयम के मॉड्यूल शामिल करने के लिए बढ़ाया / विस्तारित किया जा सकता है; मंच को पूर्व-विद्यालय और प्राथमिक शिक्षा में सभी हितधारकों [शिक्षकों, अभिभावकों, छात्रों, स्कूल प्रशासकों] के लिए सूचना और ज्ञान प्रदान करना चाहिए। अन्य महत्वपूर्ण सोशल

प्लेटफॉर्मों की तरह, यह क्लाउड आधारित, मॉड्यूलर होना चाहिए तथा राज्यों को विभिन्न मॉड्यूलों को चुनने और अनुकूलित करने की छूट होनी चाहिए। क्षमता निर्माण के लिए निष्ठा (स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल) भी प्रासंगिक है।

प्रथम इनमें से कुछ विधियों का प्रयोग उत्तर प्रदेश तथा अन्य राज्यों में कर रहा है, लेकिन इन्हें रिकार्ड किया जा सकता है तथा अधिक व्यापक रूप से प्रयोग किया जा सकता है। अन्य देशों में भी "सेसम स्ट्रीट" जैसे सफल टीवी/वीडियो कार्यक्रमों के उदाहरण हैं, जिनसे हम सीख सकते हैं और अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषाई परिस्थितियों के अनुसार उन्हें अनुकूलित कर सकते हैं।

सूचना युग में, नई अर्थव्यवस्था का अधिकांश भाग डिजिटल दुनिया से संबंधित है। इनमें शिक्षा और कौशल प्रदान करने की भावी प्रणालियाँ शामिल होंगी। टेली-शिक्षा में नवाचार और हाइब्रिड डिजिटल-फिजिकल (फिजिटल) प्रणालियों का विकास महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। तीन स्तरीय वितरण प्रणाली। (1) सभी भाषाओं में हर कक्षा/स्तर पर पाठ्यक्रमों का डिज़ाइन, (2) पूरक सेवाओं का कार्यान्वयन और निरंतर प्रावधान (आभासी प्रयोग, प्रशिक्षण, परीक्षण, परामर्श सहित), और (3) स्थानीय शिक्षण सहायक जो उस समाज और संस्कृति के अभ्यस्त हों जिसमें बच्चे रहते हैं।

शिक्षा के अन्य पहलू जो प्रासंगिक और महत्वपूर्ण बने रहेंगे, इस प्रकार हैं: सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा (पोषण, स्वच्छता, सफाई), सामाजिक, नागरिक और नैतिक जिम्मेदारी, तथा शिक्षकों को शिक्षणशास्त्र (अर्थात, कैसे पढ़ाया जाए) की शिक्षा देना, जो शिक्षा की गुणवत्ता और बड़ी संख्या में छात्रों के कौशल विकास के लिए महत्वपूर्ण है।[41]

5.2 डिजिटल शिक्षक (ई-आचार्य)

तालिका 5 यह दर्शाती है कि भारत की प्राथमिक और माध्यमिक पूर्णता दर पीपीपी पर प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के हमारे स्तर पर किसी देश के लिए हमारी अपेक्षा से कम है। समस्या का एक हिस्सा यह है कि 45% छात्र पढ़ने और लिखने में समर्थ हुए बिना ही प्राथमिक विद्यालय पूरा कर लेते हैं, जिससे अगले स्तर पर सीखना लगभग असंभव हो जाता है। दूसरी समस्या यह है कि राज्य सरकार द्वारा नियुक्त शिक्षक ग्रामीण क्षेत्रों में पदस्थापित होना पसंद नहीं करते है, जहां जीवन-यापन की स्थितियां आमतौर पर शहरी क्षेत्रों की तुलना में निम्न होती हैं, इसलिए वे वहां अध्यापन से बचने या उसे न्यूनतम करने के लिए हरसंभव प्रयास करते हैं। इस स्थिति को ठीक करने के लिए कई कार्य किए गए, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। तीसरी समस्या यह है कि शिक्षक प्रशिक्षण में शिक्षण की प्रभावी विधियों और सामग्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका की उपेक्षा की जाती है।

विशेषज्ञ एआई प्री-स्कूल से लेकर हाई स्कूल तक अध्यापन और सीखने की सभी कक्षाओं के लिए इन समस्याओं को हल कर सकता है। इस प्रकार की विशेषज्ञ प्रणाली को अनेक कार्यों के लिए डिजाइन किया जा सकता है, जैसे योग्य शिक्षकों को शिक्षण सहायक सामग्री और सामग्री उपलब्ध कराना, ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय शिक्षण सहायकों को शिक्षक स्तर पर कार्य करने के लिए निर्देशित करना तथा पिछड़ रहे छात्रों को आगे बढ़ने में सीधे मदद करना या उन्नत छात्रों को प्रोत्साहित करना। केंद्र

[41] नागरिकों, चाहे वे वृद्ध हों या युवा, पुरुष हों या महिला, को आधारभूत साक्षरता और गणना (एफएलएन) की शिक्षा दी जाएगी।

सरकार और राज्य सरकारों को डिजिटल प्रोफेसर या ई-गुरु को डिजाइन करने और बनाए रखने के लिए एक गैर सरकारी संगठन की स्थापना करनी चाहिए। ई-गुरु बहुभाषी होना चाहिए, राज्य और स्थानीय भौतिक एवं सामाजिक वातावरण के अनुसार परिवर्तन करने में सक्षम होना चाहिए तथा निजी और गैर सरकारी संगठनों द्वारा डिजाइन किए गए शिक्षण उपकरणों को इसके शीर्ष पर स्तरित करने की अनुमति होनी चाहिए।

5.3 रोजगार और नौकरी कौशल

कौशल और नौकरी एक ही मुद्दा के दो पहलू हैं। ऋण उपलब्धता की तरह, नौकरी कौशल की उपलब्धता भी नौकरियों, उत्पादकता और वास्तविक मजदूरी की सतत वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है। नौकरी कौशल के लिए बाजार में विषमतापूर्ण सूचना और नैतिक जोखिम होता है, जो ऋण बाजारों के समान (परन्तु समरूप नहीं) होता है। कौशल बाजार अत्यधिक विखंडित हैं तथा उप-बाजारों का अभाव, अपूर्णता और अकुशलता इनकी विशेषताएं हैं, लगभग वैसे ही जैसे आधी सदी पहले ऋण बाजार थे।

बाजार के मांग पक्ष पर मौजूद आर्थिक एजेंट वही हैं जो ऋण बाजार के मांग पक्ष पर मौजूद हैं: ये औपचारिक और अनौपचारिक क्षेत्रों में विभाजित हैं; औपचारिक क्षेत्र के भीतर निगम और बड़ी असंगठित फर्मों की अलग-अलग विशेषताएं हैं। इसी प्रकार, अनौपचारिक क्षेत्र में छोटी फर्मों, सूक्ष्म उद्यमों और स्वरोजगार करने वालों की आवश्यकताओं और क्षमताओं के बीच बड़ा अंतर है।

आपूर्ति पक्ष और भी जटिल है, क्योंकि कार्यशील आयु वर्ग की आबादी का प्रत्येक सदस्य कुशल श्रम का संभावित आपूर्तिकर्ता है तथा साक्षरता, शिक्षा की गुणवत्ता और अर्जित कार्य कौशल के मामले में हर कोई एक दूसरे से भिन्न है। इस विविधता और विभिन्न क्षेत्रों और विभिन्न उद्योगों में विभिन्न प्रकार की नौकरियों के लिए आवश्यक कौशल के बारे में जानकारी/ज्ञान की कमी को देखते हुए, कौशल बाजार के कामकाज में सुधार के लिए दो संबंधित सेवाएं महत्वपूर्ण हैं: कौशल प्रदाता (सरकारी संस्थान, सोसायटी और लाभ न कमाने वाले कॉलेज और निजी प्रशिक्षण संस्थान) जो नौकरी कौशल प्रदान करते हैं, और मध्यस्थ जो नौकरी चाहने वालों के कौशल को नियोक्ता द्वारा अपेक्षित कौशल से मिलाते हैं। सूचना की विषमताओं को कम करने और कौशल के लिए कुशल बाजारों का निर्माण करने के लिए इन चारों के बीच संपर्क महत्वपूर्ण है।

कौशल उद्योग अविश्वसनीय रूप से जटिल है। इस जटिलता के कई कारण हैं। (क) हमारी कार्यशील आयु वाली आबादी का विशाल आकार, (ख) विशाल अनौपचारिक क्षेत्र, जिसकी विशेषता घरेलू उद्यमों में स्वरोजगार, अल्परोजगार और प्रच्छन्न रोजगार (ग), विभिन्न राज्यों में विभिन्न अग्रणी क्षेत्र (जैसे, कृषि, विनिर्माण, पारंपरिक और गैर-पारंपरिक सेवाएं)। (घ) बड़ी, बहुस्तरीय अनौपचारिक उत्पादन प्रणाली को देखते हुए मांग पक्ष भी उतना ही जटिल है।

कौशल के अनेक प्रकार, स्तर और प्रदाताओं के साथ, कौशल प्रदान करना एक बहुआयामी समस्या है। जटिल कौशल उद्योग का अत्यंत सरलीकृत चित्रण **चित्र 11** में दर्शाया गया है। यहाँ तीन अक्ष हैं जो फर्म के आकार, औपचारिकता की डिग्री और प्रकार (अकुशल से अर्ध-कुशल से उच्च कौशल तक) के संदर्भ में कौशल की आवश्यकताओं और निम्न से मध्यम से शीर्ष तक क्षमता स्तर का प्रतिनिधित्व

करते हैं। सबसे भीतरी क्षेत्र में बाजार मौजूद नहीं है, इसलिए राज्य सरकारों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। सबसे बाहरी क्षेत्र में बाजार यथोचित रूप से कुशल हैं और सरकार की भूमिका उनके कामकाज को सुगम बनाना है। मध्य क्षेत्र में, आंतरिक स्तर पर सरकार के साथ साझेदारी में तथा बाहरी स्तर पर निजी क्षेत्र के साथ साझेदारी में कौशल सुधार में सहायता करने के लिए गैर सरकारी संगठनों की बड़ी भूमिका है।

चित्र 11 : नौकरी कौशल त्रि-आयामी समस्या है

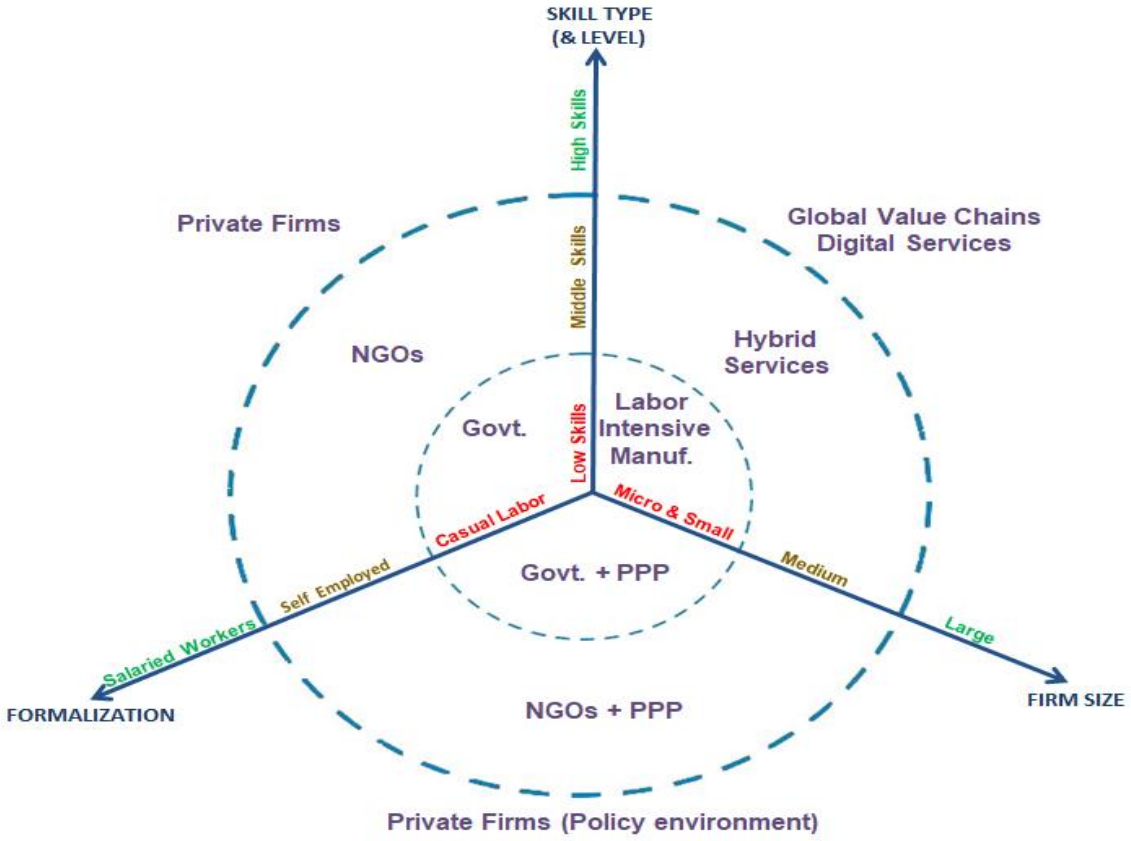

स्रोत : लेखक का चित्रण बाजार सहभागियों और हितधारकों के साथ बातचीत पर आधारित है

व्यापक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य से, अधिकांश श्रमिक अकुशल नौकरियों से निम्न कुशल नौकरियों, मध्यम कुशल नौकरियों (यूएमआईसी) और अंततः उच्च कुशल नौकरियों (एचआईसी) में चले जाएंगे। हालांकि, वैश्विक और भारतीय जनसांख्यिकी यह संकेत देती है कि भारत उच्च आय वाले विकसित देशों (एचआईडीसी) को कौशल की पूरी श्रृंखला (निम्न, मध्यम, उच्च) प्रदान कर सकता है, चाहे वह भौतिक रूप से हो या ऑनलाइन। इसलिए, "भारत के लिए कौशल, विश्व के लिए कौशल" एक महान अवसर है। कौशल उद्योग (निजी, गैर सरकारी संगठन, सार्वजनिक क्षेत्र) इन अवसरों को साकार करने और चुनौतियों का सामना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह स्पष्ट नहीं है कि क्या केन्द्र सरकार और राज्य सरकारें चुनौतियों से निपटने और अवसर का लाभ उठाने के लिए पूरी तरह से जागरूक और तैयार हैं या नहीं!

5.3.1 श्रमबल, श्रमिक और बेरोजगारी

समावेशी विकास का एक प्रमुख पहलू नौकरियों और रोजगार के अवसरों में वृद्धि है। सर्वेक्षण डिजाइन में परिवर्तन, निजी वाणिज्यिक डेटा संगठनों के उदय और महामारी संबंधी व्यवधानों के परिणामस्वरूप रोजगार और मजदूरी के बारे में काफी भ्रम पैदा हो गया है। इस खंड का उद्देश्य पिछले दशक में उभरे रुझानों (नौकरियों की मांग और आपूर्ति में) को समझना है, ताकि भविष्य के लिए नीतिगत सबक तैयार किए जा सकें।

अनौपचारिक क्षेत्र की नौकरियों की बहुत अधिक हिस्सेदारी वाली अर्थव्यवस्था में, इस क्षेत्र पर उपलब्ध मामूली आंकड़ों के आधार पर, रोजगार परिदृश्य की तस्वीर से शुरुआत करना आवश्यक है। श्रम बल रोजगार सर्वेक्षण की नई श्रृंखला *कृषि वर्ष* (एवाई) 2017-18 से 2022-23 (एवाई 23 = जुलाई 2022 से जून 2023) के लिए श्रम बल डेटा की एक सुसंगत श्रृंखला प्रदान करती है। ये श्रम बल भागीदारी दर में प्रति वर्ष 3.1% (2020-21 से 2.7%) और श्रमिक जनसंख्या अनुपात में प्रति वर्ष 3.7% (2020-21 से 3.1%) वृद्धि की प्रवृत्ति और बेरोजगारी दर में गिरावट की प्रवृत्ति दर्शाते हैं (पंक्ति 1, 4, 8, **तालिका 6**)।

तालिका 6 : श्रमबल की भागीदारी (एलएफपीआर), श्रमिक आबादी (डब्ल्यूपीआर) और बेरोजगारी (यूआर)

	Employment indicators (LFPR, WPR, UR) for Ages >=15 years							Compound annual gr	
		AY18	AY19	AY20	AY21	AY22	AY23	ay23/ay18	ay23/ay20
	Usual status (US)								
1	LFPR(persons)	49.8	50.2	53.5	54.9	55.2	57.9	3.1	2.7
2	LFPR(female)	23.3	24.5	30.0	32.5	32.8	37.0	9.7	7.2
3	LFPR(male))	75.8	75.5	53.9	77.0	77.2	78.5	0.7	13.4
4	WPR(persons)	46.8	47.3	50.9	52.6	52.9	56.0	3.7	3.2
5	WPR(female)	22.0	23.3	28.7	31.4	31.7	35.9	10.3	7.7
6	WPR(male))	71.2	71.0	73.0	73.5	73.8	76.0	1.3	1.4
7	WPR(15-29)	31.4	31.5	34.7	36.1	36.8	40.1	5.0	4.9
8	UR(persons)	6.0	5.8	4.8	4.0	4.1	3.2	-11.8	-12.6
9	UR(female)	5.6	5.1	4.2	3.5	3.3	2.9	-12.3	-11.6
10	UR(male))	6.1	6.0	5.0	4.5	4.4	3.3	-11.6	-12.9
	Current Weekly status (CWS)								
11	LFPR(all)	na	na	51.2	51.8	51.7	54.6		2.2
12	LFPR(female)	na	na	26.3	27.5	27.2	31.6		6.3
13	WPR(all)	44.1	44.3	46.7	47.5	48.3	51.8	3.3	3.5
14	WPR(female)	na	na	24.4	25.7	25.6	30.0		7.1
15	UR (all)	8.9	8.8	8.8	7.5	6.6	5.1	-10.5	-16.6
16	UR(female)	na	8.7	7.3	6.6	5.8	5.1		-11.3
	Source: Periodic Labour force Survey (PLFS) 2017-18 to 2022-23.								

श्रमिक जनसंख्या में वृद्धि की प्रवृत्ति **(चित्र 12)** दर्शाती है कि हाल के दिनों में जनसंख्या की तुलना में नौकरियां तेजी से बढ़ रही हैं।

चित्र 12 : सामान्य राज्यों (यूएस) और वर्तमान साप्ताहिक स्थिति (सीडब्लूएस) के अनुसार श्रमिक-जनसंख्या अनुपात

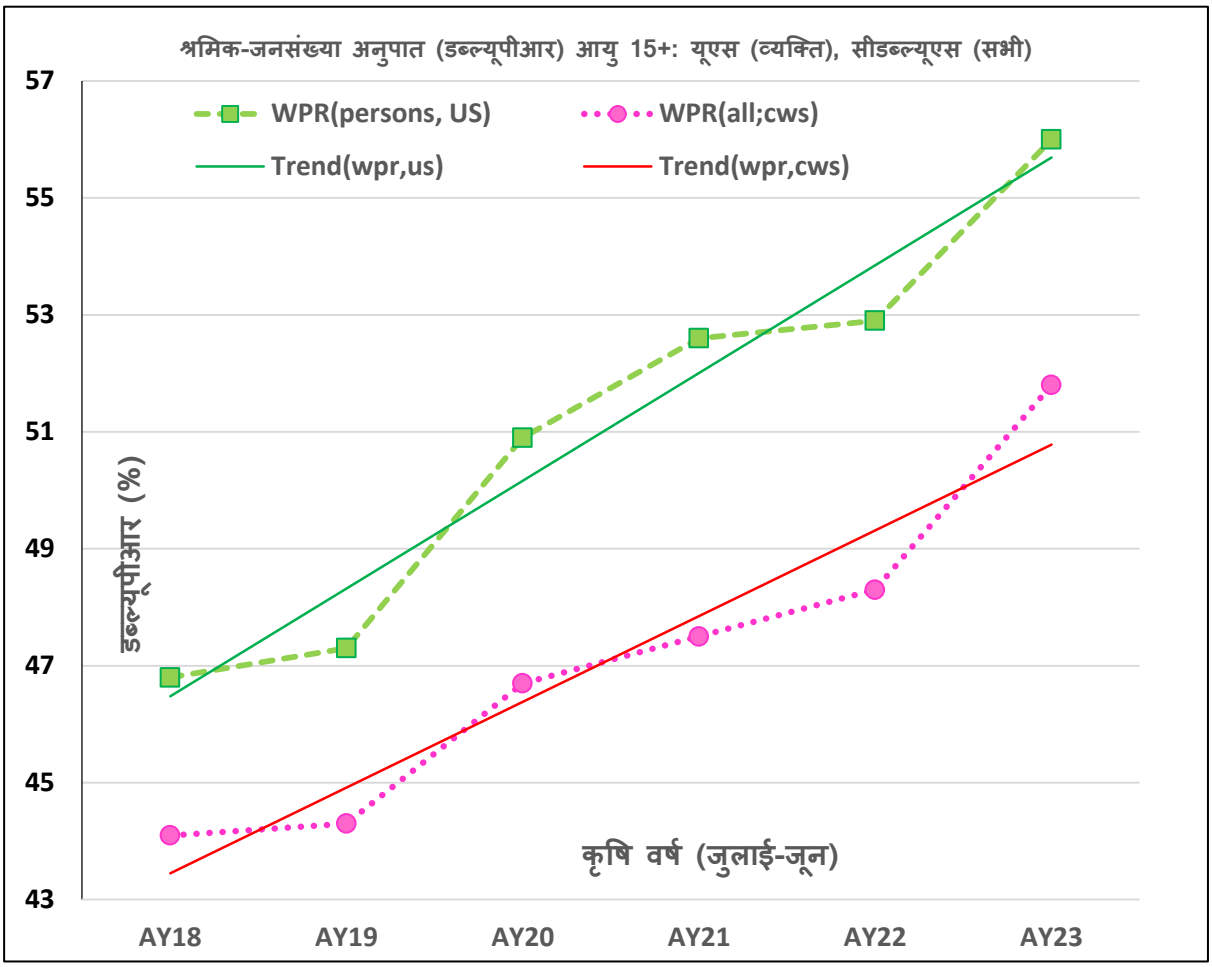

वर्तमान साप्ताहिक स्टेटस के अनुसार श्रमिक-जनसंख्या अनुपात की वृद्धि दर 2018-19 से 2022-23 के लिए 3.3% प्रति वर्ष और 2020-21 से 2022-23 के लिए 3.5% प्रति वर्ष है (पंक्ति 13, **तालिका 6**)। इन छह वर्षों के दौरान जनसंख्या वृद्धि दर औसतन लगभग 1.1% प्रति वर्ष रही, जबकि 2018-19 से 2022-23 के दौरान रोजगार औसतन 4.4% प्रति वर्ष की दर से बढ़ा है।

वर्तमान साप्ताहिक स्टेटस (पंक्ति 13) के संदर्भ में रोजगार की वृद्धि दर, जो औपचारिक अर्थव्यवस्था में रोजगार की अवधारणा के करीब है, सामान्य स्टेटस की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ी है (पंक्ति 4, **तालिका 6)**। इस अवधि के दौरान रोजगार सृजन स्पष्ट रूप से जनसंख्या और कार्यशील आयु वाली जनसंख्या में वृद्धि की तुलना में अधिक तेज रहा है। इस रोजगार सृजन का अधिकांश हिस्सा महिला श्रमिकों के लिए रहा है, जिसमें महिला एलएफपीआर वर्ष 2017-18 में 23.3% से बढ़कर 2022-23 में 37% हो गई है (पंक्ति 2) और इसी अवधि के दौरान डब्ल्यूपीआर 22% से बढ़कर 35.9% हो गई है (पंक्ति 5, **तालिका 6**)।

विश्व विकास संकेतकों में निहित आईएलओ मॉडल डेटा हमें लंबी अवधि में श्रमिक जनसंख्या अनुपात न बताकर केवल श्रम बल भागीदारी दर बताता है। 1990 के दशक के सुधारों के बाद श्रम बल भागीदारी दर तेजी से बढ़ी, जो 2000 में चरम पर थी। अगले दशक के दौरान, जिसे कुछ लोगों ने नीतिगत सुधारों के संदर्भ में "गंवाया हुआ दशक" कहा गया, एलएफपीआर वस्तुतः स्थिर थी। महामारी के बाद के वर्षों में सुधार में एक और तेजी देखी गई तथा इन वर्षों में सुधार की पहलों में भी तेजी देखी गई **(चित्र 13)**। गोल्डार, भल्ला और अन्य द्वारा पीएलएफएस इकाई स्तर के आंकड़ों के विस्तृत विश्लेषण से संकेत मिलता है कि महामारी की पहली लहर के बाद महिला नौकरियों, ग्रामीण क्षेत्रों में नौकरियों और विनिर्माण क्षेत्र में नौकरियों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

चित्र 13 : भारत की श्रमबल भागीदारी दर

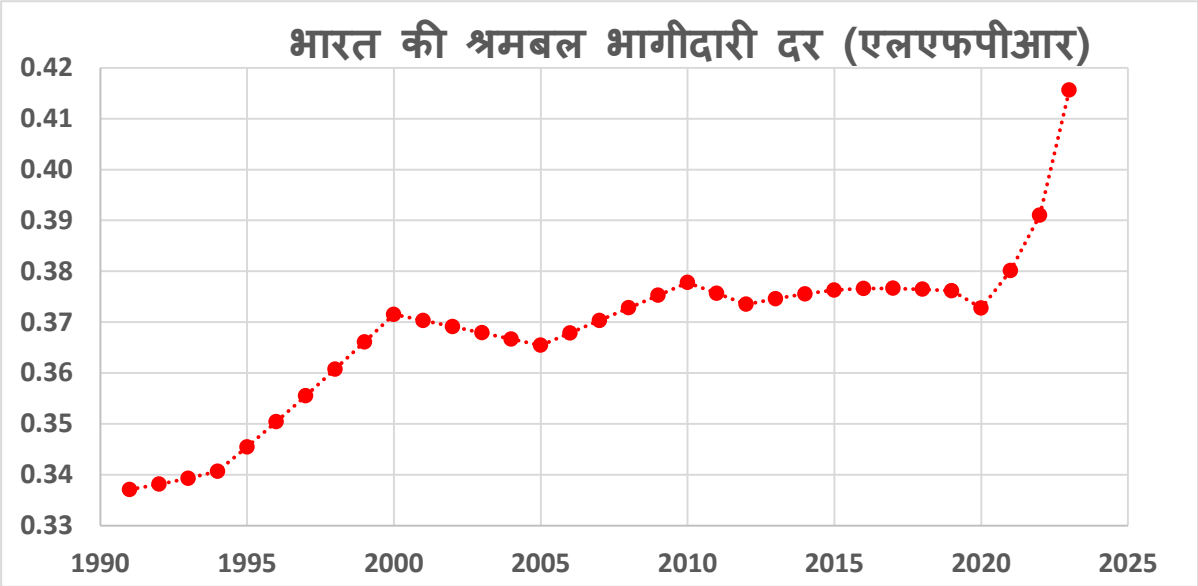

स्रोत : लेखक की गणना रोजगार और जनसंख्या पर विश्व विकास संकेतकों के डेटा पर आधारित है।

5.3.2 मजदूरी वृद्धि

2017-18 से 2022-23 के बीच वास्तविक मजदूरी का विकास हमें श्रम उत्पादकता और डब्ल्यूपीआर में बदलाव के साथ-साथ मांग-आपूर्ति संतुलन के बारे में संकेत देता है। महामारी और अन्य बाहरी झटकों के बावजूद, इस अवधि के दौरान नौकरियों में प्रति वर्ष औसतन 4.4% की वृद्धि हुई है, जबकि भारित औसत वास्तविक मजदूरी में प्रति वर्ष 0.6% की वृद्धि हुई है **(तालिका 7)**।[42] वास्तविक मजदूरी में सबसे तीव्र वृद्धि (2.8% प्रति वर्ष) आकस्मिक श्रम के लिए है, जबकि नौकरी में वृद्धि धीमी (0.6% प्रति वर्ष) है, जो आपूर्ति की तुलना में मांग की अधिकता के मद्देनजर आकस्मिक श्रम की उत्पादकता में वृद्धि को दर्शाता है (कॉलम 1, **तालिका 7,** और **चित्र 14** में आकस्मिक शीर्षक वाली पंक्तियाँ)। विस्तृत आंकड़े दर्शाते हैं कि सभी शिक्षा श्रेणियों, सभी परिभाषित

[42] नौकरी में वृद्धि 3.4% डब्ल्यूपीआर वृद्धि और 1% जनसंख्या वृद्धि का योग है। समग्र मजदूरी वृद्धि तीन प्रकार के श्रमिकों की मजदूरी का श्रमिक भारित योग है।

उद्योगों तथा क्लर्कों और पेशेवरों को छोड़कर सभी व्यवसायों में आकस्मिक श्रमिकों की वास्तविक मजदूरी में वृद्धि हुई है।

तालिका 7 : नौकरियों में वृद्धि, श्रमिक आबादी अनुपात और प्रकार के अनुसार वास्तविक मजदूरी

Employment/jobs (WPR) and real wages- ages 15-64, usual status(us)							
	Monthly wages in const 2017-18 prices (CPI deflator)						
Agricultural year (jun-jul)	**2017-18**	**2018-19**	**2019-20**	**2020-21**	**2021-22**	**2022-23**	**Gr rt (%) Ay23/Ay18**
Casual Workers	5964	6192	6286	6375	6745	6862	**2.8**
(gr rt)		3.8	1.5	1.4	5.7	1.7	2.8
Salaried workers	15589	15761	15763	15331	15586	15314	-0.4
(gr rt)		1.1	0.0	-2.8	1.6	-1.8	-0.4
Self employed	10033	10571	9698	9352	9833	10320	**0.6**
(gr rt)		5.2	-8.6	-3.6	5.0	4.8	0.6
Wtd Avg wage	10288	10666	10312	10006	10367	10611	**0.6**
	Ratio of type of worker to population						
Casual Workers	11.5	11.6	11.6	11.7	11.6	11.9	**0.6**
(gr rt)		0.5	0.4	0.4	-0.9	2.6	0.6
Salaried workers	10.6	10.6	11.5	11.3	10.9	11.4	**1.5**
(gr rt)		0.5	7.9	-1.3	-3.7	4.3	1.5
Self employed	24.2	24.3	25.9	27.6	28.4	31.3	**5.3**
(gr rt)		0.3	6.3	6.4	2.9	9.8	5.1
All workers	46.3	46.5	49.0	50.6	50.9	54.6	**3.4**
Source: Authors calc based on nominal wage & worker ratio's from Bhalla et al(2024)							
Real wages calc by author using monthly CPI (2012)-average AY(july-june)							

चित्र 14 : आकस्मिक श्रमिकों की बढ़ती मांग, वास्तविक मजदूरी और नौकरी उत्पादकता

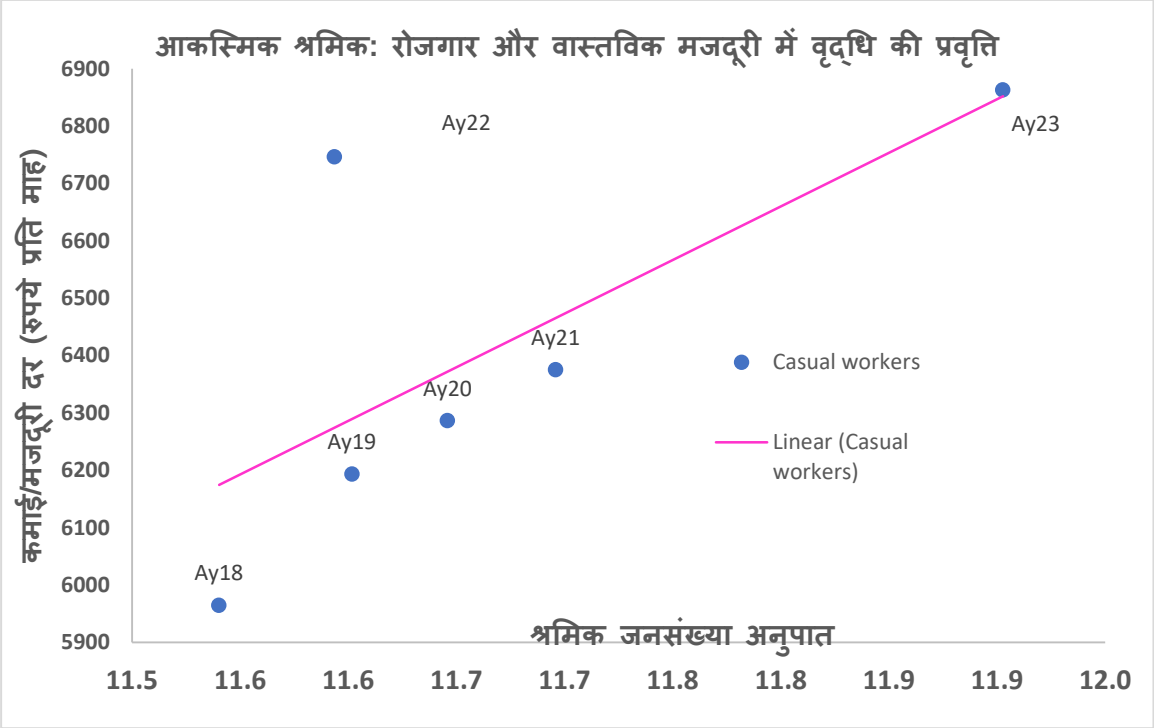

डेटा: पीएलएफएस, यूनिट रिकॉर्ड डेटा और सीपीआई। लेखक की गणना भल्ला, भसीन और दास (2024) द्वारा बनाई गई तालिकाओं पर आधारित है

वेतनभोगी श्रमिकों की तुलना में आकस्मिक श्रमिकों की मजदूरी का अनुपात 2017-18 में 38% से बढ़कर 2022-23 में 45% हो गया है, जो इस लोकप्रिय धारणा का खंडन करता है कि आकस्मिक श्रमिकों की हिस्सेदारी मुख्य रूप से दिहाड़ी और वेतनभोगी नौकरियों की अनुपलब्धता के कारण बढ़ रही है।

स्वरोजगार में रोजगार वृद्धि सबसे तेज, प्रति वर्ष 5.1% की साधारण औसत पर (अंतिम बिंदुओं के बीच चक्रवृद्धि दर 5.3% प्रति वर्ष है) रही है, साथ ही वास्तविक मजदूरी में 0.6% प्रति वर्ष की मामूली वृद्धि हुई है (कॉलम 1, **तालिका 7** में स्वरोजगार वाली पंक्तियाँ)। महामारी के दौरान उद्योग, शिक्षा और व्यवसायों में स्व-नियोजित श्रमिकों की वास्तविक आय में तेजी से गिरावट आई, लेकिन अब यह सुधार की राह पर है (**चित्र 15**)।[43] इससे पता चलता है कि 2017-18 से 2022-23 के दौरान, श्रमिकों की आपूर्ति ने श्रमिक उत्पादकता को कम किए बिना उनकी सेवाओं की बढ़ती मांग के साथ तालमेल बनाए रखा है।

[43] कृषि वर्ष 2020-21 में केवल कुछ व्यवसाय अर्थात शिल्प, कुशल कृषि श्रमिक और "प्राथमिक व्यवसाय" अपवाद थे।

चित्र 15 : स्व-नियोजित: रोजगार वृद्धि, वास्तविक मजदूरी में मामूली सुधार

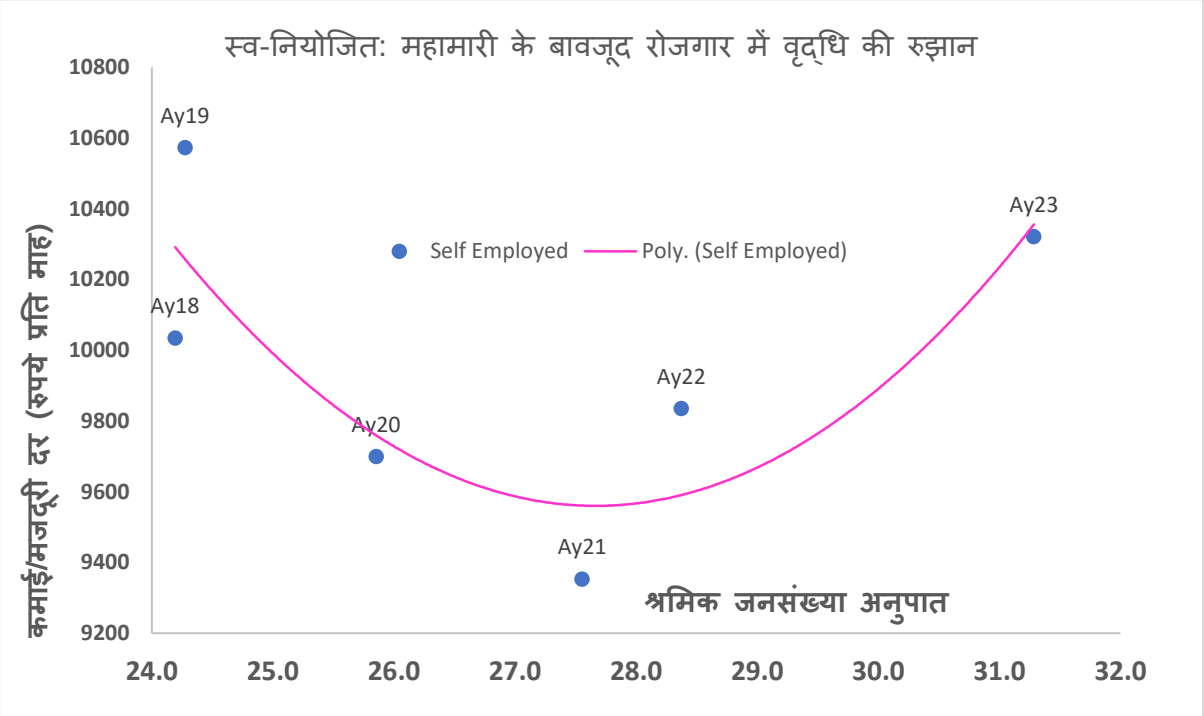

स्रोत: जैसा कि पिछले चित्र में दिखाया गया है

सबसे बड़ा आश्चर्य यह है कि 2018-19 से 2022-23 के बीच औपचारिक रोजगार के दोगुने होने (जैसा कि ईपीएफओ द्वारा मापा गया है) के बावजूद, दिहाड़ी और वेतनभोगी श्रमिकों की मांग उनकी वास्तविक मजदूरी के साथ-साथ उनकी आपूर्ति के सापेक्ष कम हो गई है। सभी दिहाड़ी और वेतनभोगी मजदूरों के लिए वास्तविक मजदूरी में गिरावट के पैटर्न से पता चलता है कि 2022-23 में महामारी की दो लहरों, वैश्विक आपूर्ति में व्यवधान और वस्तुओं की कीमतों में अस्थिरता ने इसमें भूमिका निभाई है, लेकिन विभिन्न उद्योगों और व्यवसायों में प्रभाव का समय अलग-अलग रहा होगा (**चित्र 16** और **तालिका 7**)। चूंकि नियमित श्रमिक औसतन सबसे अधिक कुशल होते हैं, इससे *कौशल अधिग्रहण और कौशल की मांग और आपूर्ति के बीच मिलान में भी समस्या* का संकेत मिलता है। शिक्षा और व्यवसाय के आधार पर वास्तविक मजदूरी पर विस्तृत आंकड़े इस परिकल्पना की पुष्टि करते प्रतीत होते हैं।

चित्र 16 : दिहाड़ी और वेतनभोगी मजदूरों पर महामारी और बाहरी झटकों का प्रभाव

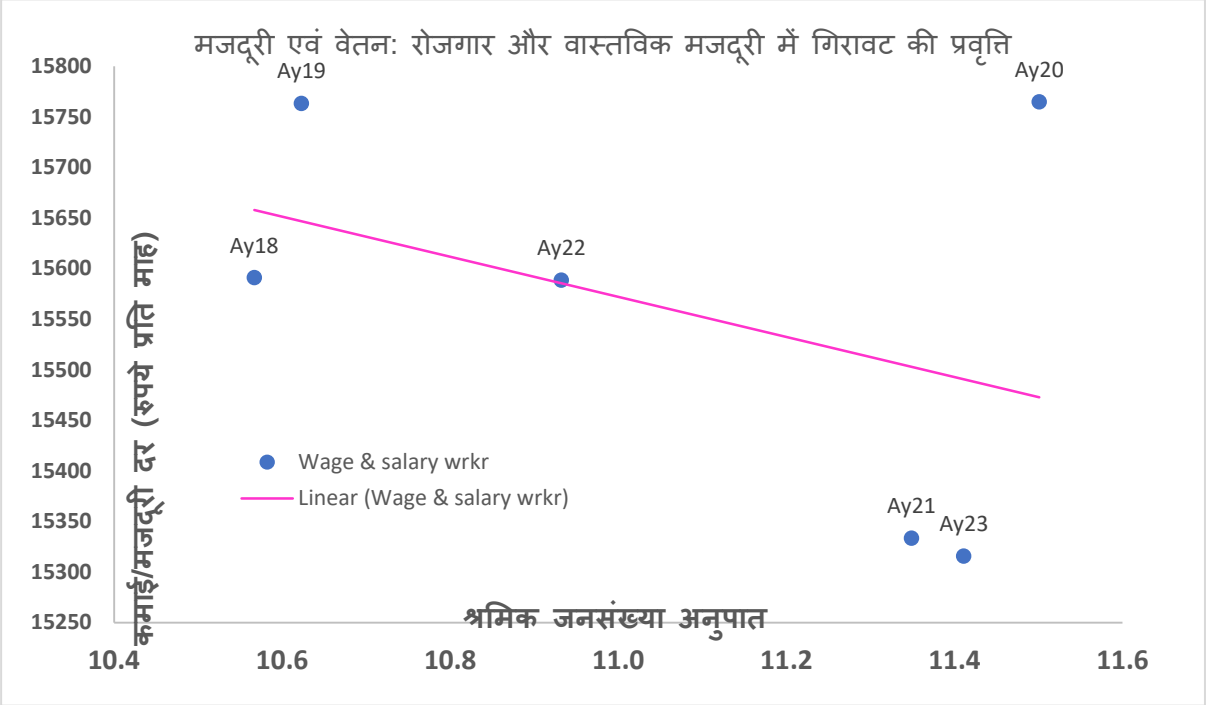

स्रोत: जैसा कि पिछले चित्र में दिखाया गया है।

वेतनभोगी श्रमिकों में वास्तविक मजदूरी केवल "स्नातकोत्तर और उससे ऊपर" तथा "प्राथमिक से नीचे" के लिए बढ़ी है।[44] इसी प्रकार, इन छह वर्षों के दौरान व्यवसाय की 10 श्रेणियों में से केवल कानून निर्माताओं (सांसदों, विधायकों आदि) और संयंत्र एवं मशीनरी श्रमिकों के लिए वास्तविक मजदूरी में वृद्धि हुई है तथा उद्योग के छह वर्गीकरणों में से केवल कृषि और सेवा-1 के लिए वास्तविक मजदूरी में वृद्धि हुई है।[45] नौकरी कौशल एवं मिलान प्रणाली की कमजोरी का एक अन्य संकेतक यह है कि पेशेवर (और क्लर्क) ही एकमात्र ऐसा व्यवसाय है जिसमें हर प्रकार के श्रमिक - स्व-नियोजित, वेतनभोगी और आकस्मिक - के वास्तविक वेतन में गिरावट आई है।[46]

विकसित देशों में फर्म द्वारा प्रदान किया गया प्रशिक्षण श्रमिक उत्पादकता और नियमित वेतनभोगी कर्मचारियों की वास्तविक मजदूरी में वृद्धि का एक महत्वपूर्ण पहलू है। मा, निकैब और विडार्ट (2019) ने पाया कि "रिपोर्ट की गई सभी वयस्क शिक्षा का 73% नौकरी से संबंधित प्रशिक्षण से मेल खाता है और यह सभी प्रशिक्षण सभी देशों की फर्मों द्वारा वित्त पोषित होता है।" इसके अलावा, "फर्म द्वारा प्रदान किया गया प्रशिक्षण क्रॉस-काउंटी वेतन वृद्धि अंतर के लगभग 43% और क्रॉस-कंट्री आय अंतर के 10% के लिए जिम्मेदार है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि फर्मों के प्रशिक्षुता और

[44] अशिक्षित और प्राथमिक शिक्षा से नीचे के वेतनभोगी श्रमिकों की वास्तविक मजदूरी में भी वृद्धि हुई है। ये संभवतः शहरी घरों में काम करने वाले लोग हैं।

[45] लेखक की गणना डॉ. सुरजीत सिंह भल्ला के सारांश वेतन डेटा पर आधारित है, जो विभिन्न पीएलएफएस दौर 2017-18 से 2022-23 तक के यूनिट स्तर के डेटा पर आधारित है। पीएलएफएस में "कानून निर्माता" व्यवसाय की एक श्रेणी है।

[46] क्लर्कों का स्थान सॉफ्टवेयर ले रहे हैं; उन्हें सॉफ्टवेयर टूल्स और इंटरनेट सर्च इंजन में प्रशिक्षित करके डिजिटल सहायक बनाया जा सकता है।

श्रमिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में आने वाली सभी बाधाओं को दूर किया जाए तथा इसके लिए अनुकूल प्रोत्साहन संरचना बनाई जाए ताकि वे अपनी आवश्यकता से अधिक श्रमिकों को प्रशिक्षित करें।[47]

5.3.3 ग्रामीण रोजगार एवं मजदूरी

ग्रामीण श्रमिकों को उपलब्ध श्रेणियों में विभाजित करने पर, हम पाते हैं कि नवंबर 2013 से नवंबर 2023 की अवधि में वास्तविक मजदूरी की सबसे तेज़ वृद्धि (2.4% प्रति वर्ष) हस्तशिल्प श्रमिकों की है **तालिका 8**)। चूंकि कई घरेलू श्रमिक स्व-नियोजित होते हैं, इसलिए यह आंकड़ा **तालिका 7** के आंकड़ों के अनुरूप प्रतीत होता है। गैर-कृषि व्यवसायों की सूची जिनमें वास्तविक मजदूरी घट रही है (**तालिका 8**), यह सुझाव देती है कि या तो उनके द्वारा बनाए जाने वाले कुछ उत्पाद (बीड़ी, बुने हुए सामान, बांस की टोकरियाँ, कृषि उपकरण) या उनके कुछ पारंपरिक कौशल (निर्माण सेवाएँ), या दोनों अपेक्षाकृत अप्रचलित हो रहे हैं। उदाहरण के लिए, यदि प्लास्टिक के सामान ग्रामीण बाजार में प्रवेश कर गए, तो लकड़ी के स्टूल, बेड (चारपाई), धातु की बाल्टियाँ और मग तथा अन्य पारंपरिक वस्तुओं की मांग खत्म हो सकती है। हालांकि, घर के दरवाजे आदि बनाने में बढ़ई की मांग पर अभी असर नहीं पड़ेगा।

तालिका 8: ग्रामीण गैर-खेतिहर मजदूरों की वास्तविक मजदूरी

Real wages, Rural, self-employed, non-agricultural, male workers				
Gr Rt (compound, annual): Nov'13 to Nov'23		**Obsolesence**		
Occupation	Real Gr Rt	Skills	Product	Competition
Handicraft Workers	2.4	No	No	Quality upgrade
Blacksmith	0.2	Partial	less	Agri implements
Mason	0.0	Partial	less	Type of housing
Carpenter	-0.2	Partial	More	Plastic products
Electrician	-0.5	Yes	No	Quality
Plumbers	-0.8	Yes	No	Quality
Bamboo,Cane basket weavers	-1.8	Yes	Yes	New prds/material
Weavers	-4.1	Yes	Yes	New prds/material
Data: Labor Bureau, Dept of Labor & Dept of Statistics(CPI). Authors calculations.				

इसी प्रकार, विद्युत एवं प्लंबिंग के नए उत्पाद (इलेक्ट्रॉनिक स्विच, प्लास्टिक पाइप) भी हो सकते हैं, जिन्हें पारंपरिक इलेक्ट्रीशियन एवं प्लंबर नहीं संभाल सकते, इसलिए जब तक वे उन्हें संभालने के लिए अपने कौशल को उन्नत नहीं करते, तब तक उनकी वास्तविक मजदूरी में गिरावट आएगी। टोकरियों और अन्य उत्पादों के पारंपरिक बुनकर, उत्पाद और कौशल दोनों के अप्रचलित हो जाने से प्रभावित हो सकते हैं।

कृषि वर्ष 2018 से 2023 तक के लिए श्रम ब्यूरो के आंकड़ों से पता चलता है कि एक व्यवसाय को छोड़कर, पुरुषों की तुलना में ग्रामीण महिलाओं की मजदूरी अधिक तेजी से बढ़ी है। न्यूनतम तथा उच्चतम महिला/पुरुष वेतन अनुपात में सुधार हुआ है; क्रमशः 0.49 से 0.84 तथा 0.61 से 0.90

[47] श्रमिकों को प्रशिक्षित करने के लिए पारिवारिक एवं लघु उद्यमों के पास न तो वित्त है और न ही कौशल। यदि बड़ी कंपनियां अपनी आवश्यकता से अधिक श्रमिकों को प्रशिक्षित करती हैं, तो अतिरिक्त श्रमिक एमएसएमई के लिए उपलब्ध हो जाते हैं और उनकी उत्पादकता एवं दक्षता में सुधार करने में मदद करते हैं।

तक। विभिन्न व्यवसायों में मजदूरी का अंतर पुरुषों के लिए काफी कम हुआ है, जबकि महिलाओं के लिए मामूली रूप से कम हुआ है।

कृषि वर्ष 2018 से 2023 के दौरान ग्रामीण महिलाओं की श्रम बल भागीदारी दर (एलएफपीआर) में वृद्धि (जिसे कई अर्थशास्त्रियों ने नोट किया है) अकुशल कृषि (विभिन्न व्यवसायों में प्रति वर्ष 0.9% से 1.5%) और कम कौशल वाली कृषि (विभिन्न व्यवसायों में 0.4% से 0.8%) में वास्तविक मजदूरी में धीमी वृद्धि के लिए आंशिक रूप से जिम्मेदार हो सकती है (**तालिका 9**)।[48]

तालिका 9 : 2013 से 2023 तक खेतिहर मजदूरों की वास्तविक मजदूरी में वृद्धि

Growth rate (%) of Real wages of Rural, male workers:Nov2013 to Nov2023	
Occupation	Real Gr Rt
General Agricultural Labourers(incl Watering, Irrigation workers)	1.5
Picking Workers(Tea, Cotton, Tobacco, othr commercial crops)	1.2
Sweeping / Cleaning Workers	0.9
Packaging Labourers	0.8
Harvesting/Winnowing/ Threshing workers	0.6
Animal husbandry workers (incl Poultry, dairy & Herdsman)	0.5
Sowing (incl Planting/Transplanting/Weeding) workers	0.4
Source: Authors calculations based on PLFS & CPI rural	

5.3.4 युवा रोजगार एवं नौकरी खोज

युवा बेरोजगारी एक अन्य क्षेत्र है जिसके बारे में काफी गलतफहमी है। युवाओं, शिक्षित युवाओं, जिन्होंने अपनी सामान्य शिक्षा (उच्चतर माध्यमिक विद्यालय या कॉलेज की डिग्री) पूरी कर ली है, के बीच उच्च बेरोजगारी दर को समझने के लिए ***खोज बेरोजगारी*** की अवधारणा महत्वपूर्ण है। सूचना में गंभीर विषमताओं के कारण कुशल नौकरियों के लिए भारतीय बाजार त्रुटिपूर्ण और अपूर्ण हैं। जो छात्र कॉलेज या यहां तक कि उच्चतर माध्यमिक शिक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं, उन्हें यह पता नहीं होता कि वे जिस नौकरी की तलाश कर रहे हैं, उसके लिए कौन से कौशल आवश्यक हैं और वे यह गलत धारणा बना लेते हैं कि वे इन आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। संभावित नियोक्ताओं को यह नहीं पता होता है कि आवेदकों पास जो डिग्री/प्रमाणपत्र हैं, उनके पीछे किस गुणवत्ता की शिक्षा है तथा वे जिस नौकरी को भरने का प्रयास कर रहे हैं, उसके लिए वास्तव में आवश्यक कौशल प्राप्त करने की उनकी क्षमता क्या है।[49] नौकरी चाहने वालों में से कुछ धीरे-धीरे उस नौकरी की वास्तविक आवश्यकताओं को सीख लेते हैं तथा अपनी क्षमताओं और नौकरी कौशल के अनुसार अपनी अपेक्षाओं को समायोजित कर लेते हैं। इसलिए, स्नातक होने के बाद बेरोजगारी दर बहुत अधिक होती है और धीरे-धीरे सामान्य बेरोजगारी स्तर तक गिर जाती है। छात्र आमतौर पर 17 से 21 वर्ष की आयु के बीच अपनी स्कूली शिक्षा या बुनियादी कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर लेते हैं, इसलिए 19-22 आयु वर्ग में बेरोजगारी दर सबसे अधिक 17.6% (सीडब्ल्यूएस) है। इसके बाद यह 23-26 आयु वर्ग में घटकर

[48] कई ग्रामीण व्यवसायों में महिलाओं की संख्या इतनी कम है कि प्रतिनिधि नमूना प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इसलिए हम रोजगार और मजदूरी की रुझान का पता लगाने के लिए (प्रमुख आयु) पुरुषों का उपयोग करते हैं।

[49] जैसे वे लोग जो प्रतियोगी परीक्षाओं में बार-बार असफल होने के बावजूद वर्षों तक कोचिंग लेते रहते हैं।

13.3% हो जाती है और फिर 27-29 आयु वर्ग में और अधिक तेजी से घटकर 5.6% हो जाती है (**चित्र 17**)। यह दर 2022-23 में 4.2% की कुल बेरोजगारी दर से 1.4 प्रतिशत अधिक है।

चित्र 17: खोज बेरोज़गारी - आयु समूहों के अनुसार युवा बेरोज़गारी दर

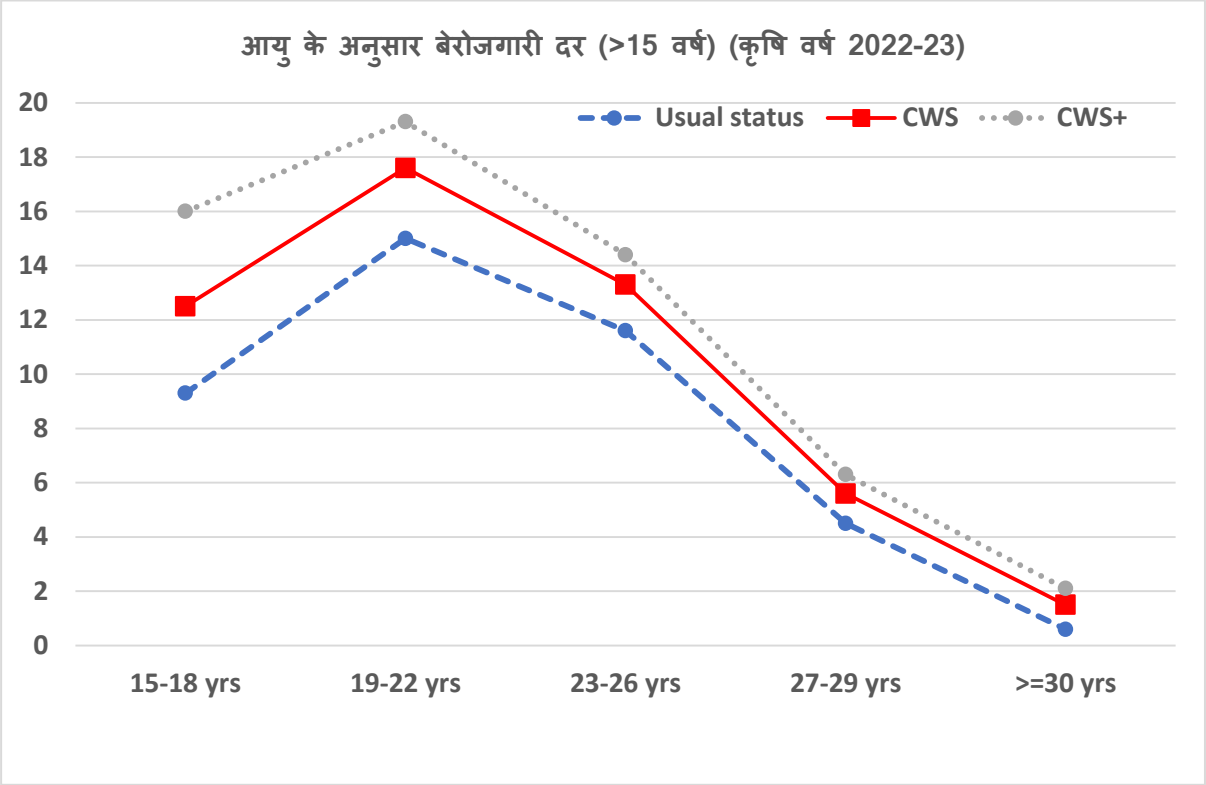

स्रोत: जैसा कि पिछले चित्र में दिखाया गया है।

जैसे-जैसे कॉलेज में नामांकन बढ़ता है, युवा कार्यबल से निकल जाते हैं और इसलिए वे बेरोजगार नहीं रहते। इससे कॉलेज आयु वर्ग में बेरोजगारी दर कम हो जाती है। जैसे ही ये युवा स्नातक बनते हैं, वे उच्च योग्यता और बढ़ी हुई अपेक्षाओं के साथ कार्यबल में शामिल हो जाते हैं, चाहे उनके पास कोई नौकरी कौशल हो या न हो।[50] इस प्रकार, कॉलेज शिक्षित युवाओं के बढ़ते प्रतिशत के साथ खोज बेरोजगारी भी बढ़ती है। इसलिए बीए के बाद के आयु समूहों में बेरोजगारी की दर बढ़ जाती है। परिवर्तनों का यह क्रम गैर-महामारी वाले तीन वर्षों अर्थात कृषि वर्ष 2018-19, कृषि वर्ष 2021-22 और कृषि वर्ष 2022-23 के लिए **चित्र 18** में दर्शाए गए पहले दो आयु समूहों से स्पष्ट है। कौशल विकास की अनेक चुनौतियों में से एक चुनौती सभी हितधारकों (छात्र, नियोक्ता, कौशल प्रदाता और कौशल विनिमय/कौशल मिलानकर्ता) के बीच सूचना के प्रवाह में सुधार करना है।

[50] उदाहरण के लिए, सरकारी और विभागीय सार्वजनिक उपक्रमों जैसे रेलवे में नौकरियों में औसत उत्पादकता कम होने के बावजूद बाजार दरों की तुलना में अधिक वेतन मिलता है तथा नौकरी की सुरक्षा भी अधिक होती है। इसलिए, निजी क्षेत्र में समान कार्य कौशल की आवश्यकताओं वाली नौकरियों की तुलना में सरकारी नौकरियों की मांग अधिक है। सरकार या सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों/सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों में गैर-आईएएस नौकरी पाना एक लॉटरी की तरह है, जिसमें न्यूनतम योग्यता की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले सभी लोग भाग लेना चाहते हैं। इसकी लागत का भुगतान खोज बेरोजगारी के रूप में किया जाता है।

चित्र 18 : जैसे-जैसे कॉलेज शिक्षितों का प्रतिशत बढ़ता है, खोज रोजगार की माँग बदलता है

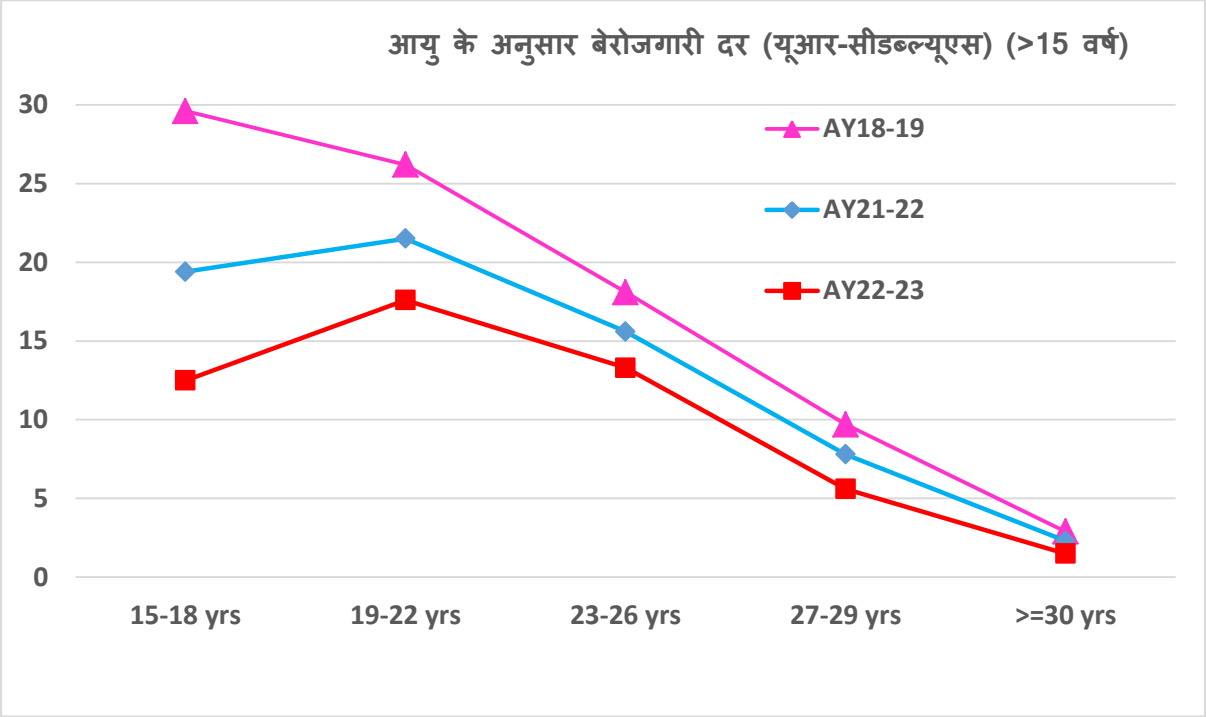

स्रोत: जैसा कि पिछले चित्र में दिखाया गया है।

5.3.5 शिक्षित श्रमबल की उपलब्धता

बुनियादी शिक्षा प्राप्त कार्यशील आयु वर्ग की 52.6 प्रतिशत आबादी वर्तमान में श्रम बल में है। इंटरमीडिएट शिक्षा के लिए यह संख्या 45.2% और उन्नत शिक्षा के लिए 63.5% है **(तालिका 10)**। इसका अर्थ यह है कि इंटरमीडिएट योग्यता वाले पुरुष और महिला श्रमिकों तथा बुनियादी या उन्नत शिक्षा वाली महिलाओं की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए श्रम बल का तेजी से विस्तार हो सकता है। जैसा कि पहले दिखाया गया है **(तालिका 5)**, नए स्नातकों की आपूर्ति भी अधिक थी।

तालिका 10 : अर्थव्यवस्था के तीव्र विस्तार के लिए शिक्षित श्रम की संभावित आपूर्ति

Educational status of labour force (% of population)					
	India		Predicted value of Indicator		
	Gap	Actual	2022	2031-32	2047-48
			India Now	India UMIC	India HIC
Labor force with basic education (%)					
Total	0.9	52.6	51.7	49.7	45.7
Male	13.7	75.8	62.1	60.2	56.2
Female	-15.4	24.8	40.2	38.0	33.4
Labor force with Intermediate education (%)					
Total	-15.2	45.2	60.4	60.9	62.8
Male	-4.3	64.6	68.9	70.0	72.3
Female	-31.1	18.7	49.7	51.3	54.4
Labor force with advance education (%)					
Total	-9.9	63.5	73.3	74.7	77.53
Male	4.6	84.5	79.9	80.8	82.5
Female	-32.6	35.4	68.0	69.9	73.9
Labour Force,					
Total	-0.03	0.39	0.42	0.44	0.49
Source: World Development Indicators			Note: Gap(2022) = Actual - Predicted		
Prediction is based on cross country regression with PcGdp PPP(2017 pr)					

5.4 डिजिटल कौशल (ई-गुरु)

मोटे तौर पर कौशल दो प्रकार के होते हैं। ऐसे कौशल जिनमें भौतिक सामग्रियों पर काम करने की आवश्यकता होती है और ऐसे कौशल जिनमें अधिकतर मानसिक कार्य या डिजाइन जैसी अमूर्त चीजों पर काम करने की आवश्यकता होती है। पहले कौशल के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण सुविधा में प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है, जहां प्रशिक्षण के लिए उपयोग की जाने वाली सामग्री, उपकरण, उपस्कर और मशीनरी उपलब्ध हो। प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाने, सामग्री की आवश्यकता को कम करने तथा उच्च पूंजी लागत लगाकर प्रशिक्षण को बढ़ाने के लिए कुछ हद तक सिमुलेटरों का उपयोग किया जा सकता है।

दूसरे कौशल के लिए पुस्तकों, कलम और कागज और कंप्यूटर की आवश्यकता होती है और यह किसी भी कोचिंग सेंटर या माध्यमिक विद्यालय या इंटर कॉलेज में संचालित किया जा सकता है, चाहे वह सरकारी, गैर सरकारी संगठनों या निजी क्षेत्र द्वारा चलाया जाता हो। इस मामले में प्रशिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए डिजिटल या ई-प्रशिक्षक का उपयोग किया जा सकता है, कम प्रशिक्षित प्रशिक्षकों को जोड़कर इसे आसानी से बढ़ाया जा सकता है तथा यहां तक कि घर बैठे छात्र को सीधे प्रशिक्षण भी प्रदान किया जा सकता है। इन कौशलों में प्रशिक्षण की मांग अपेक्षाकृत अधिक है, क्योंकि समाज का झुकाव सफेदपोश नौकरियों की ओर है। परिणामस्वरूप, माता-पिता सक्षम शिक्षकों और बुनियादी कंप्यूटर और प्रोग्राम को किराए पर लेने के लिए आवश्यक फीस का भुगतान करने को तैयार हैं। मुख्य चुनौती कौशल और नौकरियों की व्यापक श्रृंखला के बारे में जानकारी का अभाव है, जो शिक्षा (खेल, कला और शिल्प सहित), स्वास्थ्य (निवारक, पोषण, मानसिक, शारीरिक और

मानसिक चिकित्सा सहित) जैसे क्षेत्रों में प्रमाणन और मानकीकरण, प्रशिक्षण और नियुक्ति के लिए बाजार प्रणाली के माध्यम से उत्पन्न की जा सकती है। विभिन्न प्रकार के गैर सरकारी संगठन ऐसे बाजारों को बनाने और चलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, जब तक कि उनमें लाभप्रदता प्रदर्शित न हो जाए और वे निजी क्षेत्र के लिए आकर्षक न हो जाएं।

विनिर्माण, निर्माण, स्थापना, संयोजन, मरम्मत एवं रखरखाव तथा लॉजिस्टिक्स में ब्लू कॉलर जॉब के संबंध में चुनौती कहीं अधिक बड़ी है! भारतीय मध्यम वर्ग, यहां तक कि इसमें जो सबसे निचले स्तर पर हैं वे भी, ऐसे कामों में रुचि नहीं लेता जिनमें हाथों और बाजुओं से शारीरिक श्रम करना पड़ता है। इन क्षेत्रों में कुछ व्यवसायों में मांग और आपूर्ति के बीच पहले से ही अंतर है और यदि विनिर्माण और निर्माण की गति अपेक्षा के अनुरूप बढ़ती है, तो यह अंतर और बढ़ेगा। इसके लिए कौशल संस्थानों को भौगोलिक दृष्टि से संभावित स्रोतों (गरीब ग्रामीण क्षेत्रों) और कौशल के उपयोगकर्ताओं (छोटे शहरों और राजमार्गों के किनारे औद्योगिक इकाइयों) के करीब लाने की आवश्यकता है और साथ ही कंपनियों को जोड़ने वाले सूचना नेटवर्क और सूचना मंच का निर्माण करने की आवश्यकता है, जो इन दोनों को कौशल प्रशिक्षकों (ई-गुरु) और सरकारी एजेंसियों के साथ लाए, जिससे शारीरिक कौशल में उत्कृष्टता को पुरस्कृत करके ब्लू-कॉलर जॉब की छवि बदलने में मदद मिल सकती है।

यदि श्रम बल के स्व-नियोजित खंड में उत्पादकता, वास्तविक मजदूरी और आय में वृद्धि करनी है, तो अनौपचारिक क्षेत्र में और इसके लिए उपलब्ध कौशल की गुणवत्ता को भी उन्नत करना होगा। डिजिटल प्रशिक्षकों और ई-गुरुओं के निर्माण से दूरदराज के गांवों सहित देश भर में गरीब और कम शिक्षित बच्चों तक पहुंच बढ़ाने में मदद मिल सकती है। ये वेल्डिंग, खराद कार्य, मिलिंग और ड्रिलिंग के लिए सिमुलेटर पर श्रमिकों के प्रशिक्षण का भी निर्देशन कर सकते हैं

5.5 ज्ञान स्टैक

तालिका 5 से पता चला कि एक क्षेत्र जिसमें भारत अपनी प्रति व्यक्ति आय के सापेक्ष अच्छा प्रदर्शन कर रहा है, वह है उच्च शिक्षा (स्नातक की डिग्री)। पुरुष स्नातकों के संबंध में यह प्रदर्शन और भी बेहतर है, जिनकी श्रम बाजार में भागीदारी वर्तमान में महिलाओं की तुलना में बहुत अधिक है। सूचना युग में ज्ञान अर्थव्यवस्था के सृजन को सुगम बनाने के लिए सरकार बहुआयामी ज्ञान विनिमय का सृजन करेगी, जिसमें अनुसंधान एवं विकास, शिक्षा और कौशल विकास जैसे कई उप-स्टैक शामिल होंगे। ज्ञान स्टैक में एक डिजिटल लाइब्रेरी, पेटेंट की लाइब्रेरी और स्वदेशी ज्ञान की लाइब्रेरी होगी।

आरएंडडी उप-स्टैक में सभी प्रकाशित भारतीय शोधों को सूचीबद्ध करने और उन तक पहुंच बनाने तथा समीक्षित और असमीक्षित भारतीय शोध लेखों के डिजिटल प्रकाशन का प्रावधान होगा। यह प्रणाली सरकार के सभी उच्च शिक्षा और अनुसंधान संसाधनों को भी एक साथ लाएगी। इसमें एक नालेज एक्सचेंज भी होगा, जिसमें शिक्षाविदों, थिंक टैंकों और शोधकर्ताओं के बीच मुक्त आदान-प्रदान और मूल्य आधारित ज्ञान सेवाओं के विपणन का प्रावधान भी होगा।

दूसरा आयाम सार्वजनिक शिक्षा उप-स्टैक होगा, जो केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के टेली-शिक्षा, ई-लर्निंग और ई-कौशल से जुड़े प्रयासों को एक साथ लाएगा।[51] इस स्टैक के आधार पर शिक्षकों की शिक्षा और प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए एक केंद्रीय सरकारी प्रणाली होगी। अगला स्तर स्कूली शिक्षा और कौशल विकास के लिए राज्य सरकार का होगा, जो राज्य में राज्य सरकार के प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, महाविद्यालय और प्रशिक्षण केन्द्र को जोड़ता है तथा उन तक पहुंच प्रदान करता है। शीर्ष स्तर में ई-लर्निंग के लिए वस्तुएं और सेवाएं प्रदान करने वाले सभी गैर सरकारी संगठन, निजी कंपनियां, शिक्षक और प्रशिक्षक शामिल होंगे।

6. शासन एवं लोक कल्याण

हम 2050 के ऐसे भारत की कल्पना करते हैं जिसमें 1960 और 1970 के दशक के लाइसेंस-कोटा-परमिट राज की यादें तथा आर्थिक विकास से जुड़ी नौकरशाही का पाखंडी रवैया पूरी तरह मिट चुका होगा। उम्मीद है कि समाजवादी नौकरशाही, जो कभी बड़े देशों में कुख्यात थी, भ्रष्टाचार-मुक्त, कुशल और मददगार नौकरशाही के मॉडल के रूप में सिंगापुर का स्थान ले लेगी।

हम एक ऐसे भारत की कल्पना करते हैं जिसमें प्रत्येक सरकारी अधिकारी का मूल्यांकन उत्पादक रोजगारों में निरंतर वृद्धि में उसके योगदान के आधार पर किया जाएगा तथा आर्थिक विकास को धीमा करने वाली प्रत्येक कार्रवाई को डिजिटल रूप से रिकॉर्ड किया जाएगा, ताकि एक बड़ा डेटा बेस तैयार किया जा सके, जिसका विश्लेषण एआई विशेषज्ञ प्रणालियों का उपयोग करके किया जा सके तथा प्रस्तावित सुधारात्मक कार्रवाई को क्रियान्वित किया जा सके।

कर नौकरशाही, जिसे कभी सबसे खराब माना जाता था, अब दुनिया की सबसे सरल, सबसे तर्कसंगत प्रणाली चलाएगी, जिसमें टैक्स रिटर्न दाखिल करने के लिए बहुत कम लोगों को अपने सीए या वकील की मदद की आवश्यकता होगी। आयकर अधिनियम 23 अध्यायों और 298 धाराओं से घटकर कुछ दसियों पृष्ठों वाला प्रत्यक्ष कर संहिता बन जाएगा, जिसका विश्व भर में अध्ययन और अनुकरण किया जाएगा। जीएसटी इतना सरल और कुशल होगा कि अमेरिका के आइवी लीग कॉलेजों के प्रबंधन पाठ्यक्रमों में इसका अध्ययन किया जाएगा। सीमा शुल्क टैरिफ 5% का एकसमान टैरिफ होगा जो विश्व में सबसे कम होगा। यहां तक कि कृषि भी इतनी कुशल हो जाएगी कि उसे क्यूआर और उच्च टैरिफ दर के रूप में विशेष संरक्षण की आवश्यकता नहीं होगी।

26,400 आर्थिक कानूनों में आपराधिक दंड को घटाकर दसवें हिस्से से भी कम कर दिया जाएगा और सभी आर्थिक कानूनों को युक्तिसंगत बनाया जाएगा, उनकी संख्या कम की जाएगी तथा उन्हें चार श्रम संहिताओं की तर्ज पर वर्तमान कानूनों के 5वें से 10वें हिस्से में एकीकृत किया जाएगा।

हमारा मानना है कि भारत विनियामक अनुपालन में आसानी (ईओआरसी), व्यापार करने में आसानी (ईओडीबी) और जीवनयापन में आसानी (ईओएल) के मामले में शीर्ष 10 देशों में शामिल होगा।

[51] एक व्यापक शिक्षा स्टैक के निर्माण के लिए टेली-शिक्षा में इसरो के अनुभव का उपयोग किया जा सकता है।

6.1 सरकारी स्टैक

सभी नियमों एवं विनियमों, प्रपत्रों एवं अनुपालन प्रक्रियाओं का व्यापक डिजिटलीकरण इस प्रक्रिया को काफी सुगम बनाएगा। इससे अनुपालन एकीकृत हो जाएगा तथा सरकार के विभिन्न स्तरों, सरकार के विभिन्न विभागों और विभिन्न विनियामकों के समक्ष एक ही सूचना को बार-बार दाखिल करने की समस्या समाप्त हो जाएगी। दाखिल करने के पश्चात विनियमों की यादृच्छिक लेखा परीक्षा। प्रोत्साहन संगत, एकीकृत कर-कल्याण प्रणाली (एनआईटी)। कानूनों, न्यायिक सेवाओं, निर्णयों, गिरफ्तारी, अभियोजन और दोषसिद्धि के डेटाबेस, जेल की आबादी का डिजिटलीकरण संस्थागत सुधार का एक महत्वपूर्ण पहलू है। (क) कानून, न्यायालय, न्यायपालिका, (ख) पुलिस, जांच, अभियोजन, (ग) जेल को शामिल करते हुए शासन के डिजिटलीकरण को आधुनिक प्रबंधन, प्रक्रियाओं की पुनः इंजीनियरिंग, तकनीकी क्षमताओं के विकास और नए उपकरणों के अधिग्रहण से संपूरित करना होगा।[52]

संघ और राज्य स्तर पर सरकार-सार्वजनिक संपर्क के डिजिटलीकरण के लिए अनेक, विविध, असमन्वित प्रयास किए जा रहे हैं तथा प्रत्येक प्रयास को शून्य से शुरू करना होगा और सीखते हुए आगे बढ़ना होगा। एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस के प्रावधान द्वारा लागत और प्रयास को कम करके इनकी गति तेज की जा सकती है। "यूनिवर्सल गवर्नेंस इंटरफेस (जीपीआई)" सरकारी विभागों और जनता के बीच और साथ ही सरकार के विभिन्न स्तरों और विभागों के बीच बातचीत के लिए आधार के रूप में कार्य करेगा। यह जीवन को आसान बनाने और व्यापार को आसान बनाने की दिशा में एक बड़ी छलांग होगी, जो वित्तीय क्षेत्र में यूपीआई के बराबर होगी।

6.2 गरीबी और वितरण

विश्व बैंक की गरीबी संबंधी परिभाषाएँ विभिन्न देशों में गरीबी की दरों की तुलना करने के लिए एक समान मानक उपलब्ध कराने के लिए तैयार की गई हैं। एक बेंचमार्क (1.9 डॉलर प्रति दिन प्रति व्यक्ति) निम्न आय वाले देशों के लिए है और दूसरा (3.2 डॉलर प्रति दिन प्रति व्यक्ति) मध्यम आय वाले देशों के लिए है। भारत में पूर्ण गरीबी (1.9 डॉलर) लगभग समाप्त हो चुकी है **(तालिका 11)**। मध्यम आय (3.2 डॉलर) वाले देशों में गरीबी दर 2011-12 में 53.6% से तेजी से कम होकर 2022-23 में **21.8%** हो जाएगी **(तालिका 11)**।

[52] जैसे कि डीएनए प्रयोगशाला, फिंगर प्रिंटिंग, बयानों की रिकॉर्डिंग।

तालिका 11: उपभोग के आधार पर भारत की गरीबी दर (एचसीआर) और गिनी

Poverty in India: Head Count ratio (HCR)						
				BBV (**2019-20**)		
	2011-12	**2022-23**	**Change**	Average	GDP	SDP
In 2011–12 prices						
$1.9 PPP/day/person						
All India	12.2%	2.3%	-9.9%	1.8%	1.4%	2.2%
Rural	12.6%	2.6%	-10.0%			
Urban	10.7%	1.4%	-9.3%			
$3.2 PPP/day/person						
All India	53.6%	21.8%	-31.8%	20.9%	18.5%	23.3%
Rural	59.7%	24.0%	-35.7%			
Urban	40.1%	15.6%	-24.5%			
Tendulkar Poverty line ($2.15 PPP) in 2017-18 prices						
All India		2.4%				
Rural		2.7%				
Urban		1.7%				
Gini Co-efficient						
Total						31.4
Rural	28.7	27.0	-1.7			
Urban	36.7	31.9	-4.8			
Note: International poverty lines as defined in 2011-12 prices & exchange rate						
Source: Bhalla & Bhasin, Economic & political weekly, July 13, 2024, Vol LIX, No. 28.						
Calculations of GINI by author based on HECS 2011-12 & 2022-03						

यह जनसंख्या के उस प्रतिशत का सबसे सटीक माप है जो अभी भी नकारात्मक आय के झटकों के प्रति संवेदनशील है। व्यक्तिगत आयकर के साथ एकीकृत शुद्ध आय हस्तांतरण प्रणाली के माध्यम से, 2035 तक 3.2 डॉलर प्रति दिन की गरीबी वस्तुतः समाप्त हो जाएगी। आधार नंबर के 100% कवरेज से यह सुनिश्चित हो जाएगा कि न तो एक भी व्यक्ति (पुरुष, महिला या बच्चा) वंचित रहे और न ही आय अर्जित करने वाला कोई भी व्यक्ति अपने हिस्से का कर चुकाने में असफल हो। उच्च मध्यम आय वाले देशों में परिभाषित गरीबी तब तक समाप्त हो जाएगी जब तक भारत उच्च प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद और अधिक कुशल कर हस्तांतरण प्रणाली के संयोजन के माध्यम से उच्च आय वाला देश बन जाएगा।

इसके तीन निहितार्थ हैं: (1) यह कि गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम कारगर रहे हैं और अब समय आ गया है कि कल्याणकारी नीतियों का ध्यान बुनियादी जरूरतों से हटाकर निम्न मध्यम वर्ग (वास्तविक और संभावित दोनों) के सशक्तिकरण पर केंद्रित किया जाए। (2) राज्यों को शहरीकरण और शहरी अर्थव्यवस्था के प्रमुख तत्वों, जैसे कि गैर-झुग्गी आधारित, किराये के आवास, सार्वजनिक परिवहन और औद्योगिक संपदाओं/कारखानों में श्रमिक आवास की उपलब्धता पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। (3) श्रमिकों की अपवर्ड गतिशीलता को सुगम बनाने के लिए स्कूली शिक्षा और नौकरी कौशल की गुणवत्ता में बहुत सुधार करने की आवश्यकता है। (4) हमें सूक्ष्म (स्व-नियोजित)

और छोटे उद्यमियों के प्रबंधन कौशल और प्रौद्योगिकी को उन्नत करने के लिए उनके लिए सूचना और ज्ञान के प्रावधान को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

उपभोग/आय वितरण पर कल्याणकारी नीतियों के प्रभाव को मापने की पारंपरिक विधि का उपयोग या तो गिनी गुणांक जैसे सारांश उपाय के लिए है, या उपभोग/आय के संचयी वितरण को देखने के लिए है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के लिए 2011-12 से 2022-23 के बीच उपभोग वितरण के गिनी माप में सुधार हुआ है **(तालिका 12)**।[53] 2022-23 के लिए शहरी उपभोग के लिए संचयी वितरण स्टोकेस्टिक रूप से 2011-12 के लिए हावी है।[54] उपभोक्ताओं के 20% से 30% वर्ग को छोड़कर, ग्रामीण उपभोग के वितरण के लिए भी यही सच है **(तालिका 12)**। इसका सबसे संभावित कारण राज्यों के ग्रामीण स्कूलों (प्राथमिक और माध्यमिक) में खराब गुणवत्ता वाली शिक्षा है, साथ ही नौकरी कौशल हासिल करने के अवसरों के कम होने के कारण भी ऐसा है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में गुणवत्ता के अंतर को कम करने के लिए ई-शिक्षा और ई-कौशल के विस्तार की बहुत गुंजाइश है।

डेटा यह भी दर्शाता है कि 2011-12 से 2022-23 के बीच शीर्ष 5% से निचले 5% उपभोक्ताओं के उपभोग का अनुपात ग्रामीण क्षेत्रों में 8.6 से घटकर 7.3 और शहरी क्षेत्रों में 14.7 से घटकर 10 हो गया है। जो उपाय इसे और बेहतर बना सकते हैं वे हैं, (1) उच्च टैरिफ के माध्यम से चयनित पूंजी गहन उद्योगों द्वारा उत्पादित व्यापार योग्य वस्तुओं के संरक्षण को कम करना, (2) यह ध्यान में रखते हुए कि कई संसाधनों के लिए आरक्षित मूल्य शून्य हो सकता है और यह कि अतिरिक्त शुल्क, फीस और प्रभार नीलामी मूल्य को नकारात्मक बना सकते हैं, प्राकृतिक संसाधनों (खनिज, तेल और गैस, स्पेक्ट्रम) को पट्टे पर देने के लिए नीलामी प्रक्रिया की बेहतर डिजाइन। (3) सार्वजनिक वस्तुओं के बुनियादी ढांचे के लिए सब्सिडी नीलामी की बेहतर डिजाइन, साथ ही प्रदर्शन को मापने के लिए बेंचमार्क प्रतिस्पर्धा की शुरुआत। (4) कराधान और विनियमन को सरल बनाकर निगमों के मुकाबले एसएमई और स्टार्टअप के लिए समान अवसर उपलब्ध कराना। [55]

[53]एचसीईएस में दिए गए दशमलव वितरण पर आधारित लेखक की गणना से पता चलता है कि ग्रामीण गिनी में 5% की गिरावट आई है और शहरी गिनी में 9% की गिरावट आई है।

[54]यदि 2022-23 के लिए आबादी के प्रत्येक संचयी हिस्से के लिए संचयी उपभोग वितरण 2011-12 के संचयी उपभोग वितरण से बेहतर है, तो सांख्यिकीय प्रभुत्व है।

[55]शिक्षा प्राप्ति में 0.52 के पीढ़ी दर पीढ़ी औसत सहसंबंध के साथ 1940 से 1985 के दौरान भारत में शैक्षिक गतिशीलता कम थी, जो महत्वपूर्ण निरंतरता का संकेत देता है। हालाँकि, पिता के शैक्षिक वितरण के निचले सिरे पर अंतर-पीढ़ीगत गतिशीलता बढ़ी है, लेकिन वितरण के शीर्ष सिरे पर यह घटी है। शिक्षा सापेक्ष गतिशीलता लड़कियों के लिए बढ़ी है, लेकिन लड़कों के लिए स्पर्शीय है। 1983 से 2005 के बीच एससी/एसटी और गैर-एससी/एसटी के बीच शिक्षा के स्तर, व्यवसाय वितरण, मजदूरी और उपभोग के स्तर में अभिसरण की एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है। 1994 से 2012 के दौरान ग्रामीण भारत में पीढ़ी दर पीढ़ी आय का स्थायित्व अन्य विकासशील देशों की तुलना में कम है। जातियों के बीच का गुणांक यह भी संकेत देता है कि भारत अंतर-जाति समानता की धीरे-धीरे ओर बढ़ रहा है। जेनिकॉट, रे और कोंचा-अरिगाडा (2024), "विकासशील देशों में अपवर्ड गतिशीलता,"

तालिका 12: संचयी उपभोग वितरण

Cumulative consumption distribution				
Share of	Share of Consumption -cumulative			
Consumers	Rural'11-12	Rural'22-23	Urban'11-12	Urban'22-23
0.00	0.00	0.0	0.00	0.0
0.05	0.02	0.02	0.02	0.02
0.10	0.05	0.04	0.04	0.04
0.20	0.13	0.10	0.09	0.09
0.30	0.17	0.17	0.13	0.15
0.40	0.21	0.24	0.17	0.213
0.50	0.32	0.32	0.26	0.290
0.60	0.37	0.41	0.31	0.378
0.70	0.44	0.52	0.37	0.479
0.80	0.59	0.63	0.52	0.597
0.90	0.68	0.78	0.62	0.745
0.95	0.80	0.86	0.75	0.840
1.00	1.00	1.00	1.00	1.00
Source:Authors calc based on decile distribution in HCES(2024)				

6.3 कल्याण स्टैक

भारत की कल्याण प्रणाली संघ सरकार और राज्य सरकारों के बीच विषयों और शक्तियों के संवैधानिक रूप से परिभाषित विभाजन और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए जिम्मेदार विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के हितों की जटिलता को दर्शाती है। जिला स्तर पर राज्य सरकार और केंद्र सरकार के 250 से 350 अलग-अलग कार्यक्रम हैं, जो अलग-अलग समस्याओं के लिए अलग-अलग तरीकों से गरीबों और जरूरतमंदों की मदद करने के लिए बनाए गए हैं, फिर भी कई लोग ऐसे हैं जिनको एक भी कार्यक्रम का लाभ नहीं मिलता है, जबकि कई अन्य लोग कई अयोग्य लाभों से बच निकलते हैं। कल्याण स्टैक इन सभी कार्यक्रमों को एक डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर रखेगा जहाँ हर कोई यह देख सकता है कि ये कार्यक्रम क्या हैं और किसके लिए हैं! आधार आईडी से जुड़ा, वर्चुअल इंटीग्रेटेड स्मार्ट कार्ड (वीआईएससी), जो आधार के ऊपर स्तरित किया गया है, स्टैक में रखे गए सभी कार्यक्रमों के लिए प्रत्येक व्यक्ति की पात्रता दिखाएगा।[56]

अगला कदम प्रत्यक्ष *नकद अंतरण प्रणाली (डीसीटी)* का निर्माण होगा, जो किसी भी महामारी, प्राकृतिक या मानव निर्मित आपदा से प्रभावित किसी भी नागरिक के हाथों में नकदी (मोबाइल वॉलेट) पहुंचा सकता है, जैसे ही आपदा से प्रभावित लोगों की पहचान हो जाती है।

सरलीकरण का अंतिम चरण प्रोत्साहन संगत, *शुद्ध आय अंतरण प्रणाली (एनआईटी)* होगी जो व्यक्तिगत आयकर प्रणाली के साथ एकीकृत होगी जिसमें एक निश्चित सीमा से कम आय वाले

[56]जिसमें राज्य सरकार के प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक स्वास्थ्य केंद्रों और प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में प्रदान की जाने वाली निःशुल्क स्कूली शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ शामिल हैं। व्यक्ति के आधार नंबर की सुरक्षा और वीआईएससी/कल्याण पहचान संख्या की विशिष्टता सुनिश्चित करने के लिए, इसे डेटाबेस में आधार नंबर से जोड़ा जाएगा।

वयस्कों को इस आधार पर भुगतान प्राप्त होगा कि वे इस सीमा से कितने नीचे हैं। ऐसा नकारात्मक आयकर 1 लाख रुपये की आय पर 10% से शुरू हो सकता है और 75,000 रुपये से नीचे 20% और 50,000 रुपये से नीचे 30% तक बढ़ सकता है।[57] आधार सभी वयस्क नागरिकों को इस एकीकृत एनआईटी प्रणाली में लाने के लिए एक विशिष्ट अभिज्ञापक प्रदान करता है, हालांकि आधार की सुरक्षा और संरक्षा की रक्षा के लिए सार्वजनिक डोमेन में पैन/विन (कल्याण पहचान संख्या) का उपयोग किया जा सकता है।

6.4 सार्वजनिक स्वास्थ्य

संविधान के निर्माताओं ने संविधान की राज्य, समवर्ती और संघ सूची को बनाने के लिए सहायकता के सिद्धांत का उपयोग किया और *"सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वच्छता; अस्पताल और औषधालय"* को राज्य सूची में उचित रूप से रखा था, जिसके परिणामस्वरूप राज्य द्वारा संचालित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी), माध्यमिक स्वास्थ्य केंद्रों (एसएचसी), और तृतीयक स्वास्थ्य संस्थानों का निर्माण हुआ। हालांकि शिक्षाविदों एवं स्वास्थ्य विशेषज्ञों और राज्य सरकारों के बीच एक अजीबोगरीब विसंगति है। आजाद भारत के 75 वर्षों में, पूर्ववर्ती ने शायद ही कभी अपने संबंधित राज्य में स्वास्थ्य परिणामों के लिए उत्तरवर्ती को जवाबदेह ठहराया है![58] इसका परिणाम सार्वजनिक स्वास्थ्य की उपेक्षा और लोगों के स्वास्थ्य की ऐसी स्थिति है जो कि हमारे जैसे प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के स्तर वाले देशों के लिए जो होनी चाहिए, उससे कम है।

कई शोध अध्ययनों से पता चला है कि खुले में शौच के कारण भारत और अन्य निम्न मध्यम आय वाले देशों (एलएमआईसी) के बीच बाल कुपोषण [बौनापन (उम्र के हिसाब से कद), कम वजन (उम्र के हिसाब से वजन)] में बड़ा अंतर है। कुछ लोगों ने इसे खराब सीवेज और सफाई व्यवस्था से जोड़ा है, जैसे कि झुग्गी-झोपड़ियों और छोटे शहरों में। इनमें से अधिकांश अध्ययनों ने खुले में शौच को सफाई/सीवरेज तक पहुंच और उनकी गुणवत्ता के मापदंड के रूप में इस्तेमाल किया है। एनएफएचएस 4 और 5 के आंकड़ों पर आधारित अपने अंतर-राज्यीय विश्लेषण में, हमने स्वच्छता प्रणाली तक पहुंच और उसकी गुणवत्ता के कई अन्य मापदंडों का उपयोग किया है, जैसे कि अपरिष्कृत स्वच्छता सुविधा, साझा और गैर-साझा सुविधाओं का उपयोग, जो पाइप वाली सीवर लाइन या सेप्टिक टैंक से जुड़ी हैं या नहीं। परिणाम इस बात की पुष्टि करते हैं कि खुले में शौच बच्चों (5 वर्ष से कम) में बौनेपी (आयु के अनुसार कद) और कम वजन (आयु के अनुसार वजन) में अंतर-राज्यीय भिन्नता को समझाने में एक महत्वपूर्ण कारक है और यह कि स्वच्छता प्रणाली की गुणवत्ता भी मायने रखती है (**तालिका 13**)। इसके अलावा, प्रति व्यक्ति आय (पीसीएनएसडी) बाल कुपोषण के लिए महत्वपूर्ण नहीं है।[59] स्तनपान, विटामिन की खुराक और श्वसन रोग जैसी अन्य बीमारी जैसे अन्य कारक बाल कुपोषण (बौनेपन और कम वजन) में सांख्यिकीय रूप से अंतर-राज्यीय भिन्नता के महत्वपूर्ण निर्धारक नहीं हैं।

---

[57]आयकर की तरह, आय हस्तांतरण घर/परिवार पर आधारित न होकर व्यक्तिगत होगा। अंततः दो नाबालिग बच्चों के लिए बोनस भुगतान हो सकता है जिसे माताओं के शुद्ध आय हस्तांतरण में जोड़ा जा सकता है।

[58]यही बात शिक्षा और राज्यों को सौंपी गई अन्य सामाजिक सेवाओं (जैसे विकलांगों और बेरोजगारों के लिए राहत) पर भी लागू होती है।

[59] पहले अंतर का उपयोग करके अधिक कठोर विश्लेषण इन परिणामों की पुष्टि करता है।

तालिका 13 भारत में बौनापन, कम वजन और दुर्बलता के निर्धारक के रूप में सीवेज और स्वच्छता

Panel regression of Child malnutrition on Sanitation & sewage systems					
	Dependent variables are in first difference				
Independent variables (first difference)	**Stunted**	**Under weight**	**Stunted**	**Under weight**	**Open defecation**
(S.E. in brackets)					
Non-shared sanitary system	-0.093**	-0.15***	-0.11**	-0.17***	-0.84***
	(0.035)	(0.035)	(0.044)	(0.043)	(0.11)
Shared disposal sanitary system	-0.94***	-1.06***	-0.88***	-1.01***	-0.09
	(0.29)	(0.28)	(0.301)	(0.29)	(0.92)
X= Actual OD- Predicted OD	0.15**	0.18***	0.15**	0.19***	
	(0.06)	(0.06)	(0.061)	(0.06)	
PCNSDP			0.000032	0.000032	
			(0.000034)	(0.000033)	
R squared	0.45	0.60	0.47	0.61	0.68
Adjusted R squared	0.39	0.55	0.38	0.55	0.65
No. of observations	29	29	29	29	29
Note: * =p < 0.10; ** = p < 0.05; ***= p <0.01.					
Data source: NFHS 4 and 5					

हमें इस अंतर को खत्म करने और पेयजल, स्वच्छता और *सीवेज सिस्टम* में उच्च मध्यम आय वाले देश के मानकों तक पहुंचने के लिए शहरी और अर्ध-शहरी सीवेज संग्रह, प्रसंस्करण और पुनर्चक्रण प्रणालियों में बहुत बड़े बदलाव की आवश्यकता है (2031-32 और यूएमआईसी शीर्षक वाला कॉलम, **तालिका 14 तालिका 1**)।

भारत को उच्च मध्यम आय (यूएमआईसी) या विकसित देश (एचआईसी) जैसा दिखने और महसूस करने के लिए तीन प्रमुख सार्वजनिक वस्तुओं की आवश्यकता है: एक राष्ट्रीय जल ग्रिड, एक राष्ट्रीय ठोस अपशिष्ट ग्रिड और एक राष्ट्रीय सीवेज ग्रिड। राष्ट्रीय जल ग्रिड को देश में हर जगह, सभी उपभोक्ताओं के लिए हर समय पर्याप्त पानी सुनिश्चित करना चाहिए। राष्ट्रीय ठोस अपशिष्ट को ठोस अपशिष्ट के सार्वभौमिक संग्रह और पुनर्चक्रण के लिए डिज़ाइन किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय सीवेज ग्रिड को देश के हर शहर और कस्बे में सीवेज सिस्टम, सीवेज के संग्रह (सेप्टिक टैंकों से भी) और उसके प्रसंस्करण और सुरक्षित निपटान का सुनिश्चय करना चाहिए।

तालिका 14: सार्वजनिक स्वास्थ्य की मूल बातें - पेयजल, स्वच्छता और सीवेज

	Table: Access to Public Goods & services (% of population)					
		India		Predicted value of Indicator		
		Gap	Actual	2022	2031-32	2047-48
				India: $7096	UMIC: $11500	HIC: $30500
	Least Basic Drinking Water (%)					
1	Total	6.9	93.3	86.4	94.1	
2	Rural	12.9	91.9	79.0	87.9	
	Safely managed drinking water (%)					
3	Rural	24.1	66.0	41.9	53.9	78.1
	Least Basic Sanitation Services (%)					
4	Total	6.9	78.4	71.5	84.3	
5	Rural	10.9	74.9	63.8	76.5	
	Safely managed Sanitation Services (%)					
6	Total	6.2	52.1	45.9	55.5	74.9
7	Urban	-3.9	42.7	46.6	55.4	73.5
8	Rural	23.9	57.4	33.5	42.9	70.7
	Open Defecation (% of pop.)					
9	Total	3.7	11.1	7.4	3.1	
10	Urban	-1.9	0.6	2.5	1.3	
11	Rural	4.7	17.0	12.3	6.3	
	Hand washing facilities (%)					
12	Total	13.6	76.3	62.6	75.8	
13	Rural	13.4	70.0	56.6	69.1	94.5
	Data: World Development Indicators (WDI), 2022					
	Predicted value is estimated from a regression,					
	with Gap = Actual-predicted					

जन्म के समय जीवन प्रत्याशा स्वास्थ्य परिणामों का सारांश माप है। पुरुषों के लिए जीवन प्रत्याशा हमारे प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के अनुरूप है, लेकिन महिलाओं की जीवन प्रत्याशा क्रॉस-कंट्री रिग्रेशन के कारण पूर्वानुमानित से कम है। यह संभवतः उच्च महिला मृत्यु दर (**तालिका 15**) के कारण है। इसके अलावा, यह आंशिक रूप से इस कारण से है कि महिलाओं की स्वास्थ्य आपात स्थितियों को पुरुषों को प्रभावित करने वाली आपात स्थितियों की तुलना में कम गंभीरता से लिया जाता है। परिवार के शिक्षित सदस्यों और अनौपचारिक स्वास्थ्य प्रदाताओं द्वारा विशेषज्ञ प्रणालियों के उपयोग के माध्यम से महिलाओं को प्रदान किए जाने वाले स्वास्थ्य देखभाल की गुणवत्ता को उन्नत किया जा सकता है। यह ग्रामीण क्षेत्रों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। हमें जीवन प्रत्याशा और मृत्यु दर में इन अंतरों को ठीक करने तथा 2031-32 तक यूएमआईसी शीर्षक वाले कॉलम के अंतर्गत दर्शाए गए स्तरों तक पहुंचना होगा (या उससे आगे निकलना होगा) तथा 2047-48 तक एचआईसी शीर्षक वाले कॉलम के अंतर्गत दर्शाए गए स्तरों तक पहुंचने (या उससे आगे निकलने) की आवश्यकता है।

तालिका 15: स्वास्थ्य परिणाम - जीवन प्रत्याशा और मृत्यु दर

	Life expectancy & mortality in comparitive perspective					
		India		Predicted value of Indicator		
		Gap	Actual	2021	2031-32	2047-48
				India: $6677	UMIC: $11500	HIC: $30500
	Life Expectancy at birth (yrs)					
1	Total	-1.0	67.2	68.2	71.2	76.5
2	Male	0.1	65.8	65.6	68.6	73.8
3	Female	-1.9	68.9	70.8	73.9	79.4
	Mortality (Nos per 1000)					
4	Infant	6.8	25.5	18.7	12.2	5.6
5	Male	6.6	254	247	211	147
6	Female	19.0	186	167	136	79
	Undernourishment (% of pop.)					
7	Total	7.3	16.6	9.3	6.4	3.3
	Data: World Development Indicators (WDI), 2021					
	Cross country Regression of each indicator on PCGDPppp(2017$)					
	Predicted value is from regtression: Gap = actual -predicted					

6.5 डिजिटल डॉक्टर (ई-वैद)

टेलीमेडिसिन भारत की विशाल आबादी को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में केंद्रीय भूमिका निभाएगी। इसमें शामिल होंगे, (क) सीधे रोगी तक निदान और दवा वितरण, (ख) सार्वजनिक और निजी डॉक्टरों/क्लिनिकों/अस्पतालों के लिए ज्ञान संसाधन, (ग) सीधे रोगी तक (डीटीपी) निदान और नुस्खा सेवाएं और दवाओं का वितरण। (घ) हाइब्रिड प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (पैथोलॉजी, एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड), माध्यमिक स्वास्थ्य केंद्र (सीटी, छोटी सर्जरी), तृतीयक स्वास्थ्य केंद्र (एमआरआई, बड़ी सर्जरी, दुर्लभ रोग)।

निजी स्वास्थ्य प्रदाताओं द्वारा दी जाने वाली सलाह की गुणवत्ता में व्यापक असमानता है, ग्रामीण स्वास्थ्य प्रदाताओं की स्थिति औसतन बहुत खराब है, जिसमें ऐसे स्वास्थ्य संबंधी नुस्खे देना भी शामिल है, जो रोग में सुधार करने के बजाय उसे और बदतर बना देते हैं। यद्यपि सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली द्वारा प्रदान की जाने वाली सलाह की औसत गुणवत्ता कुछ हद तक बेहतर है, विशेष रूप से गंभीर बीमारियों के लिए, फिर भी गुणवत्ता में व्यापक भिन्नता है। दोनों प्रकार के स्वास्थ्य प्रदाताओं को बहुभाषी डिजिटल डॉक्टर की उपलब्धता से बहुत लाभ हो सकता है, जो केमिस्ट से लेकर जीपी तक सभी स्वास्थ्य प्रदाताओं द्वारा प्रदान किए जाने वाले निदान और उपचार की गुणवत्ता में सुधार करने में उनकी मदद कर सकता है। इस तरह के विशेषज्ञ निदान और उपचार के लिए डेटाबेस पहले से ही उन्नत देशों में और कुछ हद तक भारत में भी मौजूद है। केंद्र सरकार और राज्य सरकारों को मिलकर एक गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) का गठन करना चाहिए, जिसका कार्य भारत के 1.4 अरब लोगों के लिए विशेषज्ञ एआई डॉक्टर तैयार करना और उसे बनाए रखना हो। इससे 5 से 10 वर्षों के भीतर औसत भारतीय के स्वास्थ्य में बदलाव आ सकता है।

भारत स्वास्थ्य स्टैक और सार्वजनिक स्वास्थ्य स्टैक के विकास में अग्रणी भूमिका निभाएगा। स्वास्थ्य स्टैक सार्वजनिक-निजी सहयोग के लिए एक अद्वितीय नवाचार है, जिसमें सरकार डिजिटल स्वास्थ्य के लिए सार्वजनिक वस्तु अवसंरचना के डिजाइन और विकास को वित्त पोषित करती है, जिस पर स्वास्थ्य, चिकित्सा और चिकित्सा उपकरणों की पूरी श्रृंखला अपने उत्पादों और सेवाओं को स्थापित कर सकती है।

महामारी ने हमें सार्वजनिक स्वास्थ्य स्टैक की आवश्यकता के प्रति भी सचेत किया है, जो स्वास्थ्य स्टैक को प्रतिबिंबित करेगा या इसका एक विशेष उप-समूह होगा, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करेगा। भविष्य में फैलने वाली महामारियों से निपटने के लिए महामारी अधिनियम 1987 की भी समीक्षा और पुनर्गठन की आवश्यकता है। आपदा प्रबंधन अधिनियम उन आपदाओं के लिए अधिक उपयुक्त है जो मानव और संपत्ति को भौतिक क्षति पहुंचाती हैं।

6.6 समुदाय और सामाजिक स्टैक

सोशल मीडिया अल्पकालिक सामाजिक-राजनीतिक विमर्श और टकराव की अभिव्यक्ति तथा दीर्घकालिक मानसिक और सामाजिक विकास के संदर्भ में समाज को आकार देने में बढ़ती भूमिका निभा रहा है। भारत के लोकतांत्रिक समाज को न केवल इस माध्यम को विनियमित करना चाहिए, बल्कि वाणिज्यिक, लाभ संचालित मीडिया के लिए एक स्वस्थ, सकारात्मक विकल्प के लिए बुनियादी ढांचा भी उपलब्ध कराना चाहिए। हम एक विकसित भारतीय, बहुसांस्कृतिक, बहुभाषी, बहुधार्मिक, लिंग-तटस्थ और बाल-सुरक्षित सामाजिक स्टैक की कल्पना करते हैं, जो भारतीय समुदाय और पारिवारिक मूल्यों पर आधारित हो। एक सोशल मीडिया या सामुदायिक मीडिया स्टैक, जो सुरक्षित ऑनलाइन बातचीत के लिए आधार आईडी आधारित प्रणाली का उपयोग करता है, साथ ही हाइब्रिड सोशल स्पेस भी है, जहां सामाजिक समूह ऑफलाइन मिल सकते हैं।[60] निजी क्षेत्र विभिन्न आयु समूहों (नाबालिग, युवा, वयस्क, वृद्ध) और हितों (बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, आध्यात्मिक/नैतिक, शारीरिक, मानसिक) के लिए सोशल मीडिया और भौतिक स्थानों की परतें बनाने के लिए एसएम स्टैक का उपयोग कर सकता है।

7. डिजिटल अर्थव्यवस्था: विशेषज्ञ प्रणाली एआई

भारत डिजिटल क्रांति की दहलीज पर है। यह क्रांति उपभोग, उत्पादन, कार्य और सामाजिक संबंधों की प्रकृति को बदल रही है। हमारे दृष्टिकोण से इस क्रांति का उपयोग भूगोल (दूरस्थ और पहाड़ी क्षेत्र) की निरंकुशता, लैंगिक असमानता (कौशल, कार्य में अंतर), अर्ध-सार्वजनिक वस्तुओं में असमानता (ग्रामीण-शहरी शिक्षा-स्वास्थ्य गुणवत्ता) और सूचना विषमता (औपचारिक-अनौपचारिक फर्म, सरकार - नागरिक, आदि) को खत्म करने के लिए किया जा सकता है।

हमारी परिकल्पना है कि 2050 तक भारत विश्व की अग्रणी डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं में से एक होगा। भारत की विशाल जनसंख्या शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास एवं नौकरी मिलान, सरकारी

[60] जो अनिवासी विदेशी आधार के लिए अपात्र हैं, उन्हें मान्यता प्राप्त पासपोर्ट या अन्य मान्यता प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय दस्तावेज़ के आधार पर विशिष्ट पहचान संख्या (यूआईडी) जारी की जा सकती है।

सेवाओं, वित्त और व्यावसायिक सेवाओं के लिए हाइब्रिड ऑनलाइन-ऑफलाइन (फिजिटल) प्रणालियों के विकास में अग्रणी भूमिका निभाने का अवसर प्रदान करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य की गुणवत्ता में बदलाव के लिए विशेषज्ञ प्रणालियाँ पहले से ही मौजूद हैं। विशिष्ट एआई, विशिष्ट डेटाबेस के साथ मिलकर, वे शहरी गुणवत्ता वाली सेवाएं ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध करा सकते हैं, और अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता वाली सेवाएं सबसे छोटे शहरों में उपलब्ध करा सकते हैं। सामाजिक उद्यमी राज्य सरकारों और डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (डीपीआई) के सहयोग से ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण सेवाएं प्रदान करने और सफल सामाजिक परियोजनाओं को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

डिजिटल अर्थव्यवस्था के लिए नियामक प्रणालियाँ और नियामक: डेटा निजता, डेटा सुरक्षा, (यौन) शिकारियों से सुरक्षा, घृणास्पद भाषण/हिंसा/हत्या/सामूहिक हत्या के लिए उकसावा, सूचना युद्ध (देश, गैर-राज्य विचारक), वैश्विक माफिया/ड्रग कार्टेल। डिजिटल अर्थव्यवस्था के अर्थशास्त्र में ऐसी विशेषताएं हैं जो वस्तुओं और सेवाओं या यहां तक कि वित्तीय अर्थव्यवस्था में भी नहीं देखी जाती हैं, जैसे कि दायरे की अर्थव्यवस्था, नेटवर्क बाह्यताएं और मनोवैज्ञानिक नियंत्रण एवं सूचना युद्ध। विनियामक नियमों में इन खतरों तथा क्षेत्रीय अल्पाधिकारों और सेवा एकाधिकारों के विकास के विरुद्ध कार्रवाई सुनिश्चित होनी चाहिए।

डिजिटल अर्थव्यवस्था के लिए सार्वजनिक वस्तु अवसंरचना: भारत नेट (भारत के प्रत्येक गांव को जोड़ने वाली फाइबर ऑप्टिक प्रणाली) अवसर की समानता और समावेशी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। निजी मोबाइल फुटप्रिंट जल्द ही 99% भूमि और विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र को कवर करेगा और मोबाइल श्रमिकों और उपभोक्ताओं को उनके निवास और स्थिर कार्यस्थलों के बाहर डिजिटल डेटा सेवाएं प्रदान करेगा। सरकार लाखों भारतीय तकनीकी उद्यमियों को समान अवसर प्रदान करने के लिए ओपन आर्किटेक्चर (जैसे इंडिया स्टैक, फिन स्टैक, यूपीआई, हेल्थ स्टैक, नॉलेज स्टैक) पर आधारित सॉफ्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित करेगी।

देश के प्रत्येक गांव में एक सार्वजनिक सूचना केंद्र होना चाहिए, जो फाइबर ऑप्टिक नेटवर्क के माध्यम से देश के प्रत्येक जिले तक जुड़ा हो, ताकि प्रत्येक नागरिक को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सूचना आधारों, आंकड़ों और ज्ञान आधारों तक वेब-आधारित पहुंच प्राप्त हो सके। ये केंद्र निष्पक्ष और न्यायसंगत आधार पर सरकारी सेवाओं तथा स्वास्थ्य एवं शिक्षा सेवाओं तक सार्वभौमिक डिजिटल पहुंच प्रदान करेंगे। वे व्यावसायिक आधार पर व्यवसायों और व्यक्तियों को कनेक्टिविटी भी प्रदान करेंगे।

7.1 डिजिटल विनियमन

डिजिटल विनियमन के अर्थशास्त्र ने डिजिटल अर्थव्यवस्था के विनियमन के लिए प्रासंगिक चार महत्वपूर्ण तत्वों को उजागर किया है। (1) अर्थव्यवस्था और पैमाना और दायरा ईंट और मोर्टार अर्थव्यवस्था की तुलना में बहुत गहरा और व्यापक है। (2) दूरसंचार प्रणालियों और डिजिटल अर्थव्यवस्था के लिए नेटवर्क बाह्यताएं अद्वितीय हैं। (3) डेटा एक अद्वितीय प्राकृतिक संसाधन है, (4) एल्गोरिदम मनुष्यों की तुलना में तटस्थ और अधिक वस्तुनिष्ठ होने का भ्रम पैदा कर सकते हैं,

लेकिन वे अधिक नहीं तो कम से कम उतने ही पक्षपाती भी हो सकते हैं, जिसका पता लगाना मुश्किल होता है। ये चार तत्व बहु-उत्पाद, बहु-सेवा एकाधिकार की संभावना को बढ़ाते हैं, जो कई देशों तक फैल सकता है। नवाचार को बाधित किए बिना, प्रतिस्पर्धी बाजार सुनिश्चित करने के लिए स्वतंत्र व्यावसायिक विनियमन महत्वपूर्ण है।

7.2 कौशल विनिमय

अनौपचारिक श्रम बाजार व्यक्तिगत संपर्कों और संबंधों के माध्यम से काम करते हैं। आधुनिक अर्थव्यवस्था में नौकरी की आवश्यकताओं का संभावित श्रम बल की शिक्षा और कौशल के साथ बेहतर मिलान आवश्यक है। निजी मध्यस्थ उच्च-स्तरीय नौकरियों को कुशल कर्मियों से मिलाने में अच्छे होते हैं। ऐसी कई नौकरियां हैं जहां अवसर की समानता के लिए डिजिटल रोजगार एक्सचेंज एक आवश्यक शर्त है, विशेष रूप से आदिवासी, दलित और अन्य सामाजिक समूहों के लिए, जो परंपरागत नेटवर्क का हिस्सा नहीं हैं।

ऐसे समूह विशेष रूप से कमजोर होते हैं यदि वे गांवों और ग्रामीण क्षेत्रों में दमनकारी सामाजिक परंपराओं के अधीन होते हैं। सामाजिक बाधाएं महिला रोजगार के खिलाफ और भी अधिक मजबूती से काम कर रही हैं, क्योंकि परिवार की आय बढ़ने के साथ ही ग्रामीण महिलाएं श्रम बल से हट रही हैं। यहां तक कि शिक्षित और प्रशिक्षित शहरी महिलाओं की श्रम बल भागीदारी दर भी शहरी पुरुषों की तुलना में कम है। डिजिटल अर्थव्यवस्था में "घर से काम" का प्रचार और प्रसार उन्हें भेदभावपूर्ण सामाजिक मानदंडों, प्रथाओं और पूर्वाग्रहों से छुटकारा पाने में मदद कर सकता है, जिससे श्रम बल में उनका प्रवेश आसान हो सकता है। इससे भेदभाव से पीड़ित समूहों को डिजिटल माध्यम से नौकरी कौशल हासिल करने के लिए प्रोत्साहित करने में भी मदद मिलेगी। प्रशिक्षण/कौशल ग्रामीण समूहों की दीर्घकालिक श्रम बल भागीदारी दर (एलएफपीआर) बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण होगा। डिजिटल रोजगार कार्यालय से पहुंच प्राप्त करने में मदद मिलेगी। घर से काम करने को आसान बनाने के लिए श्रम कानूनों, नियमों और प्रक्रियाओं में और सुधार करना भी आवश्यक होगा।

केंद्र सरकार ने अनौपचारिक श्रमिकों के लिए ई-श्रम पोर्टल और कौशल विकास तथा मांग और आपूर्ति के मिलान के लिए स्किल इंडिया पोर्टल बनाया है। विभिन्न स्तरों पर इन कार्यों को एकीकृत करने की प्रक्रिया चल रही है। कौशल विकास और जॉब प्लेसमेंट के लिए भी कई निजी प्रयास हो रहे हैं, जिनकी गुणवत्ता अलग-अलग है। कौशल सृजन और उपयोगकर्ता की मांग के अनुरूप कौशल मिलान के लिए एक सार्वभौमिक इंटरफेस की आवश्यकता है, जिस पर निजी क्षेत्र न्यूनतम गुणवत्ता मानकों को बनाए रखते हुए प्रतिस्पर्धा और नवाचार कर सके।

7.2.1 यूएफआई, फिन-स्टैक और फिंटरनेट

हम भारत को मोबाइल वॉलेट, मोबाइल खाते, जमा और ऋण, बीमा और पेंशन, वित्तीय और धन प्रबंधन सेवाएं, निवेश सलाह सहित फिनटेक के अग्रणी प्रदाता के रूप में देखना चाहते हैं। विनियमों में नवाचार को प्रोत्साहित करने और कम जानकारी वाले बचतकर्ताओं के हितों की रक्षा करने की आवश्यकता के बीच संतुलन होना चाहिए। यूनिवर्सल फाइनेंशियल इंटरफेस (यूएफआई) और

फाइनेंशियल स्टैक तथा फिंटरनेट जैसे सार्वजनिक रूप से संचालित नवाचार प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देकर नवाचार को गति देंगे। अंतिम परिकल्पना सभी व्यापार योग्य परिसंपत्तियों के लिए एक डिजिटल सार्वजनिक खाता बही के निर्माण की है, जिसकी शुरुआत उन सभी से होगी जिनके पास पहले से ही कुछ सरकारी या अन्य पंजीकरण प्रणाली (जैसे भूमि या संपत्ति) है, लेकिन वे किसी भी वित्तीय एक्सचेंज में सूचीबद्ध नहीं हैं।

7.3 डिजिटल मार्केट इंटरफ़ेस या मार्केट स्टैक

केन्द्र सरकार ने केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों तथा उनके सहायक संगठनों और सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों द्वारा वस्तुओं और सेवाओं की खरीद के लिए एक बाज़ार बनाया है। ओएनडीसी को समानांतर रूप से बनाया गया है। इन्हें ई-कॉमर्स के लिए यूनिवर्सल मार्केट इंटरफेस (यूएमआई) या मार्केट स्टैक बनाकर एकीकृत किया जा सकता है। ईजीओएम तब बाजार स्टैक के शीर्ष पर एक ऊपरी स्तर हो सकता है, जो यूएमआई की नींव पर निर्मित है। इस तरह के मंच को सार्वजनिक वस्तु अवसंरचना (खुली पहुंच, तटस्थ) के रूप में देखा जा सकता है, जिस पर देश के सुदूर कोनों से एमएसएमई, किसान और सेवा प्रदाता अपने उत्पादों का प्रतिस्पर्धात्मक रूप से विपणन कर सकते हैं। भौगोलिक दृष्टि से ब्रांडेड उत्पादों की आपूर्ति देश एवं विश्व को की जाएगी।

डिजिटल बाज़ार का एक अन्य उप-समूह सामाजिक सेवाओं के लिए बाज़ार होगा, जिसमें ऑनलाइन प्रबंधन और व्यावसायिक सेवाएं (फ्रंट, मिडिल और बैक ऑफिस), व्यावसायिक सेवाएं (फिनटेक, आर्किटेक्चर, डेटा एनालिटिक्स), सामाजिक सेवाएं (स्वास्थ्य/चिकित्सा, शिक्षा/कौशल, कल्याण) और तकनीकी सेवाएं शामिल होंगी।

8. हरित अर्थव्यवस्था

कार्बन उत्सर्जन से प्रेरित जलवायु परिवर्तन के प्रति भारत का एक सर्वांगीण दृष्टिकोण है। यह मुद्दा और इसके संभावित समाधान भारी जोखिम और बड़ी अनिश्चितता से युक्त हैं। निम्न मध्यम आय वाले देश के संसाधनों की सीमाओं को देखते हुए, जोखिम को कम करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि इन संसाधनों को कार्बन न्यूनीकरण के विभिन्न प्रकार के संभावित समाधानों में वितरित किया जाए। इनमें कार्बन-गहन तेल के स्थान पर नवीकरणीय ऊर्जा, आवास, मशीनों और शहरी क्षेत्रों का ऊर्जा-कुशल डिजाइन तथा चावल और गन्ने जैसे स्वस्थ, जल और ऊर्जा-कुशल खाद्य पदार्थों को बढ़ावा देने के वाली जीवन-शैली से जुड़े परिवर्तन शामिल हैं।

हम 2050 में एक हरित अर्थव्यवस्था की कल्पना करते हैं, जिसमें अगले तीस वर्षों के दौरान आर्थिक विकास हर चीज के लिए ऊर्जा कुशल, कार्बन तटस्थ और कम पर्यावरण प्रदूषणकारी डिजाइन तैयार करेगा। हम यह भी चाहते हैं कि पर्यावरण की दृष्टि से कुशल डिजाइन बनाने तथा हजारों स्टार्ट-अप के माध्यम से क्रियान्वित करने के लिए विकसित देश भारतीय युवाओं की एक पीढ़ी को प्रशिक्षित करें और उन्हें वित्त पोषित करें। ये स्टार्ट-अप न केवल भारत में इन डिजाइनों को लागू करेंगे, बल्कि इन्हें शेष विश्व में भी प्रचारित करेंगे।

बड़े पैमाने पर उपभोग के साथ विकसित हुई "फेंकने वाली" उपभोक्ता अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे वापस उस स्थिति में पहुंच जाएगी, जिसमें उपभोक्ता उत्पाद का डिजाइन अधिक मॉड्यूलर होगा। उत्पादों में ऐसी उप-प्रणालियाँ होंगी जिन्हें तब प्रतिस्थापित किया जा सकेगा जब वे तकनीकी रूप से अप्रचलित हो जाएँगी तथा कुछ ऐसी भी होंगी जिनका उपयोग जारी रहेगा क्योंकि उनका उत्पादन और प्रतिस्थापन बहुत अधिक कार्बन गहन या ऊर्जा गहन होगा। मरम्मत और रखरखाव सेवाएं, जो गरीब देशों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं लेकिन अमीर देशों से लगभग गायब हो गई हैं, पुनः वापस आएंगी। भारत मॉड्यूलर हरित उत्पाद डिजाइन में अग्रणी बनेगा, और वे भारत के विशाल ग्रामीण बाजार में पैमाने और दायरे की अर्थव्यवस्था हासिल करेंगे।

निम्न कार्बन, कम प्रदूषणकारी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए प्राथमिक प्रोत्साहन एक नया कार्बन टैक्स होगा, जो तीन मुख्य करों (आयकर, जीएसटी और सीमा शुल्क) से अलग होगा, जो पेट्रोल, डीजल और अन्य प्रदूषणकारी पदार्थों पर उत्पाद शुल्क का स्थान लेगा।[61] संकल्पनात्मक रूप से इससे डी-कार्बोनाइजेशन, प्रदूषण न्यूनीकरण और ऊर्जा दक्षता कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए वित्त पोषण उपलब्ध होगा, साथ ही ग्रामीण डिजिटल कनेक्टिविटी भी उपलब्ध होगी, जिससे भौतिक आवागमन (परिवहन) के स्थान पर डिजिटल संपर्क स्थापित करने में मदद मिलेगी। विभिन्न वस्तुओं में कार्बन की मात्रा और प्रदूषणकारी भार की गणना करने के लिए एक स्वतंत्र पेशेवर पर्यावरण संरक्षण एजेंसी की स्थापना की जाएगी, जिसके आधार पर कर लगाया जाएगा।

भोजन और पानी भारत की हरित अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण तत्व हैं। इसके लिए चीनी और पॉलिश किए हुए चावल और गेहूं जैसी अशुद्ध जल गहन फसलों के अत्यधिक उपभोग से हटकर बाजरा जैसे कम जल गहन और स्वास्थ्यवर्धक अनाजों की ओर कदम बढ़ाना होगा। जल संरक्षण, बचत और पुनर्चक्रण भी पारिस्थितिकी, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन के समग्र दृष्टिकोण के महत्वपूर्ण तत्व हैं।

8.1 परिवहन

पिछले 10 वर्षों के दौरान जन परिवहन प्रणालियों और इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) पर अधिक ध्यान दिया गया है। भौतिक परिवहन के स्थान पर ऑनलाइन लेनदेन, सेवा वितरण; मनोरंजन के स्थान का भौतिक थिएटरों से ऑनलाइन और सोशल मीडिया पर शिफ्ट होना तथा घर से काम करना, आदि परिवहन में प्रयुक्त ऊर्जा को कम करेगा तथा ऑफलाइन शॉपिंग करने के स्थान पर ऑनलाइन ऑर्डर करने पर अनुकूलित डिलीवरी प्रणाली के माध्यम से परिवहन के उपयोग में कमी आएगी। इसी प्रकार सरकारी शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अन्य सेवाओं की ऑनलाइन डिलीवरी भी होगी। हाइड्रोजन के उत्पादन, भंडारण और उपयोग में नवाचार से ऐसे उद्योग और परिवहन में इसके उपयोग की लागत कम हो जाएगी, जहां ग्रिड बिजली का उपयोग नहीं किया जा सकता।

[61] एक बार कार्बन टैक्स लागू हो जाने पर, सामान्य जीएसटी में पेट्रोल और डीजल शामिल हो जाएंगे, जो 75-85% वस्तुओं और सेवाओं पर लागू एकल मानक जीएसटी दर पर होगा।

8.2 ऊर्जा

नवीकरणीय ऊर्जा (सौर, पवन, समुद्री लहर) की पूंजीगत लागत अब जीवाश्म ईंधन से चलने वाले संयंत्रों की तुलना में लगभग आधी है, जो परमाणु संयंत्रों की लगभग आधी है। नवीकरणीय ऊर्जा की परिवर्तनीय लागत निश्चित रूप से जीवाश्म ईंधन और परमाणु का एक अंश है, लेकिन इसके लिए बड़े भंडारण की आवश्यकता होती है, ताकि धूप, हवा और तरंगों की उपलब्धता में दैनिक और मौसमी उतार-चढ़ाव को भी संतुलित किया जा सके, इसलिए वितरित लागत अधिक है, लेकिन फिर भी यह जीवाश्म ईंधन से चलने वाले संयंत्रों की तुलना में सस्ती है। इसके अलावा, गांवों और दूरदराज की बस्तियों में सौर ऊर्जा के विकेन्द्रित उत्पादन और उपयोग से विद्युत पारेषण और वितरण में होने वाले घाटे में कमी आएगी। मरम्मत और रखरखाव सेवाओं सहित सौर उद्योग भारत के धूप वाले, जल की कमी वाले ग्रामीण क्षेत्रों में, जहां भूमि की गुणवत्ता खराब है, एक महत्वपूर्ण उद्योग बन जाएगा। हालांकि सौर क्रांति के लिए भंडारण प्रौद्योगिकी की लागत में नाटकीय कमी की आवश्यकता है, जिससे उत्पादन में बड़े उतार-चढ़ाव को लागत के हिसाब से संतुलित किया जा सकेगा, जिससे अधिकतम मांग के साथ कुशल मिलान संभव होगा और अधिक लचीले लेकिन उच्च कार्बन वाले ईंधनों का उन्मूलन संभव होगा।

8.3 शहरीकरण

शहरी प्रशासन वैधानिक कस्बों तक सीमित है, जो 2011 की जनगणना में शहरी क्षेत्र का 84.5% था। शहरी क्षेत्र में जनगणना कस्बों का हिस्सा 14.4% है। अनुमान है कि शहरीकरण की वृद्धि या क्षेत्रीय धमनियां 1.1% हैं, जिससे 2011 में कुल शहरीकरण लगभग 31.1% हो गया। वर्तमान अनुमान के अनुसार यह एक तिहाई से लेकर 36% तक है। अगले 10 से 20 वर्षों में शहरीकरण में उत्तरोत्तर वृद्धि होने की संभावना है।

शहरी भूमि उपयोग नीति को आर्थिक गतिविधि के विकास के लिए सहायक होना चाहिए, जिसमें कार्य, आवास और सामाजिक गतिविधि का डिजाइन परिवहन और ऊर्जा खपत को न्यूनतम करने के लिए होना चाहिए; कार्बन भार को न्यूनतम करने के लिए शहरी उद्यानों और हरियाली पर उचित ध्यान दिया जाना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर संरचनात्मक प्रवास को समायोजित करने के लिए "प्राकृतिक शहरों" का सुझाव दिया गया है। नदियों के किनारे या उनके निकट स्थित अर्ध-शहरी क्षेत्रों और छोटे कस्बों को 1.5 से 2 मिलियन की आबादी वाले प्राकृतिक शहरों में परिवर्तित किया जा सकता है। स्थानीय भूगोल, मौसम पैटर्न और स्थानीय रूप से उपलब्ध पारंपरिक आवास सामग्री पर आधारित शहरी डिजाइन जलवायु के लिए अनिवार्य है।

यदि चाहते हैं कि हमें उच्च मध्यम आय वाला देश माना जाए, तो शहरी नियोजन और शहरी सेवाओं की गुणवत्ता को उच्च मध्यम आय वाले देश के बराबर बढ़ाया जाना चाहिए। इसके लिए शहरी प्रशासन में क्रांति की आवश्यकता है तथा राज्यों द्वारा आपूर्त की जाने वाली सार्वजनिक और अर्ध-सार्वजनिक वस्तुओं और सेवाओं की गुणवत्ता श्रृंखला की आवश्यकता है।

8.4 आवास

सामूहिक आवास, कार्यालयों और कारखानों तथा निर्माण उद्योग का डिजाइन उस युग से विकसित और प्रचारित हुआ है, जब स्थानीय जलवायु या भूगोल पर बहुत कम ध्यान दिया जाता था। चूंकि भारत वस्तुतः सामूहिक आवास और वाणिज्य की यात्रा के आरंभिक चरण में है, इसलिए यह स्थानीय सामग्रियों और जलवायु/मौसम की स्थितियों पर आधारित डिजाइन में अग्रणी हो सकता है, जिसे सोलर रूफ टॉप, स्मार्ट सेंसर और ऊर्जा नियंत्रण जैसी आधुनिक प्रौद्योगिकी से जोड़ा जा सकता है।

8.5 वृत्ताकार अर्थव्यवस्था: पुनर्चक्रण

पर्यावरण के लिए जीवन शैली (लाइफ) हरित अर्थव्यवस्था के प्रति भारत के समग्र दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण तत्व है। जल, सीवेज, भौतिक अपशिष्ट का पुनर्चक्रण; प्रत्येक के लिए राष्ट्रीय ग्रिड। सभी नदियों और जलमार्गों (जिनमें वे भी शामिल हैं जिन पर "प्राकृतिक शहर" निर्मित किए जा सकते हैं) की सफाई करना, ताकि उन्हें पीने के पानी के लिए उपयुक्त बनाया जा सके। प्रदूषणकारी तरल अपशिष्ट उत्पन्न करने वाली रासायनिक इकाइयों को ऐसे स्थानों पर स्थापित किया जाना चाहिए, जहां मानदंडों को सख्ती से लागू किया जा सके तथा कुशल प्रसंस्करण के लिए सामान्य जल शोधन सुविधाएं स्थापित की जा सकें। अपशिष्ट संग्रहण, प्रसंस्करण और पुनर्चक्रण एक महत्वपूर्ण उद्योग बन जाएगा, जिसमें विभिन्न प्रकार के अपशिष्टों के लिए ई-बाजार होंगे। टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं का डिजाइन उस युग में वापस लौट जाएगा जब इसे मरम्मत योग्य और पुनः उपयोग योग्य बनाया जाता था।

8.6 पर्यावरणीय विनियम

पर्यावरण विनियमन का अत्यधिक राजनीतिकरण हो चुका है तथा यह कानूनी विवादों में उलझा हुआ है। एक पेशेवर पर्यावरण संरक्षण एजेंसी स्थापित करने की आवश्यकता है जो डेटा एकत्र करे, परिकल्पना का परीक्षण करे, तथा विभिन्न नियामक विकल्पों के लाभ और लागत का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रदान करे। इस एजेंसी का अधिदेश सावधानीपूर्वक परिभाषित किया जाना चाहिए। इससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि प्रशासनिक और न्यायिक निर्णय अटकलों और प्रेरित सार्वजनिक अभियानों के बजाय पेशेवर सलाह पर आधारित हों।

8.7 ग्रीन स्टैक

हरित अर्थव्यवस्था के कई विविध, किन्तु परस्पर-संबंधित तत्व हैं। समन्वय सुनिश्चित करने और अंतराल की पहचान करने के लिए, भारत एक ग्रीन स्टैक का निर्माण करेगा, जिसमें हरित अर्थव्यवस्था के सभी तत्व शामिल होंगे। इसमें हरित डिजाइन, हरित उत्पाद और हरित सेवाओं के बाजार शामिल हैं। इसमें जलवायु संबंधी घटनाओं के लिए बीमा बाजार, आपदा निगरानी और प्रबंधन प्रणालियां, आपदा राहत के लिए खुली पहुंच वाली सरकारी और गैर-लाभकारी प्रणालियां, तथा रिकवरी को सुगम बनाने के लिए आपदा राहत संगठन शामिल होंगे। वैकल्पिक रूप से, यह ज्ञान स्टैक के भीतर एक उप-स्टैक भी हो सकता है।

9. सभ्यतागत शक्ति के रूप में भारत

अर्थशास्त्र में "प्रतिस्पर्धात्मक फ्रिंज के साथ द्वैधाधिकार" की अवधारणा है, जिसमें द्वैधाधिकार में दो फर्म संयुक्त रूप से कीमतें निर्धारित करती हैं और प्रतिस्पर्धी फ्रिंज शुद्ध मूल्य ग्रहणकर्ता होते हैं, जिनके पास कोई बाजार शक्ति नहीं होती है। हम 2050 में एक ऐसे विश्व की कल्पना करते हैं जिसे 2035 में "बहुध्रुवीय रिम वाला द्विध्रुवीय विश्व" और 2050 में "बहुध्रुवीय रिम वाला त्रिध्रुवीय विश्व" के रूप में वर्णित किया जा सकेगा। यह लेखक के राष्ट्रीय शक्ति सूचकांक, वीआईपी पर आधारित है, जो आर्थिक शक्ति (वीआईपीई) और सैन्य शक्ति (वीआईपीएम) [62] का एक चरघातांकी भारित सूचकांक है। आर्थिक शक्ति (वीआईपीई) का अनुमानित विकास **चित्र 7** में दर्शाया गया है।

आर्थिक प्रतिस्पर्धा के विपरीत, अंतर-देशीय प्रतिस्पर्धा के चार अलग-अलग आयाम हैं: भूअर्थशास्त्र, प्रौद्योगिकी, सैन्य और भू-राजनीति। हम परिकल्पना करते हैं कि 2035 का विश्व इस अवधारणा का एक भू-राजनीतिक संस्करण होगा, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन द्विध्रुवीय होंगे जो सभी चार क्षेत्रों में अन्य प्रतिस्पर्धियों पर हावी होंगे, और "बहुध्रुवीय क्षेत्र" में 5-6 देश होंगे, जिनका एक या अधिक क्षेत्रों में उच्च स्थान और प्रभाव होगा। उदाहरण के लिए, जापान, जर्मनी, भारत, ब्रिटेन, फ्रांस 6 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल होंगे; भारत, ब्रिटेन, फ्रांस और रूस परमाणु शक्तियां हैं। रूस की अर्थव्यवस्था और सामान्य तकनीकी आधार जापान, जर्मनी, ब्रिटेन और फ्रांस की तुलना में बहुत कमजोर है, लेकिन उसके पास रक्षा प्रौद्योगिकी का बड़ा भंडार है। प्रमुख शक्तियों के लिए इस सूचकांक का विकास **चित्र 19** में दर्शाया गया है।

9.1 रक्षा एवं निवारण

भारत के प्रौद्योगिकी आधार और रक्षा प्रौद्योगिकी आधार में अगले 15 वर्षों में तेजी से वृद्धि होने की परिकल्पना की गई है, ताकि आक्रमण और विदेशी आतंकवाद के खिलाफ बहुस्तरीय निवारण स्थापित किया जा सके। इन स्तरों में सीमा अतिक्रमण/अधिग्रहण और आतंकवादी घुसपैठ (एल1), सीमा क्षेत्र में सीमित युद्ध (एल2), प्रतिबंधित (सीमावर्ती राज्यों में सैन्य अड्डे) युद्ध का निवारण (एल3), पारंपरिक युद्ध का निवारण (एल4) और परमाणु निवारण (एल5) शामिल हैं। हम एक रक्षा पूंजी बजट की कल्पना करते हैं जो बढ़कर सकल घरेलू उत्पाद का 1.5% से 2% तक हो जाएगा ताकि इसे वित्तीय रूप से व्यवहार्य बनाया जा सके, एक रक्षा अनुसंधान एवं विकास आयोग की कल्पना करते हैं जो रणनीतिक प्रौद्योगिकी (एआई) और नई हथियार प्रणालियों का विकास करेगा और एक परिष्कृत उच्च रक्षा प्रबंधन संरचना की कल्पना करते हैं जो प्रत्येक स्तर पर लागत प्रभावी निवारण के लिए मानव संसाधन और हथियारों को ढालेगी और व्यवस्थित करेगी। दोहरे उपयोग वाले उत्पादों और रक्षा प्रणालियों के निजी उत्पादन, विपणन और निर्यात में शेष बाधाओं को भी समाप्त करना होगा।

---

[62] वीआईपी = (वीआईपीई^0.5) * (वीआईपीएम^0.5)। वीआईपीई = [Y/Yus) ^0.5] *[(y/yus) ^0.5, Y = जीडीपी पीपीपी, y = पीसीजीडीपी पीपीपी = जीडीपी पीपीपी/जनसंख्या वीआईपीएम की संरचना वीआईपीई के समान है, लेकिन यह एसआईपीआरआई में रक्षा पर दिए गए बजटीय व्यय पर आधारित है। वीआईपीएम, परमाणु परिसंपत्तियों को छोड़कर, सेना की पूंजीगत परिसंपत्तियों और गैर-पूंजीगत परिसंपत्तियों के माप पर आधारित है।

चित्र 19 : वीआईपी सूचकांक द्वारा मापी गई राष्ट्रीय शक्ति

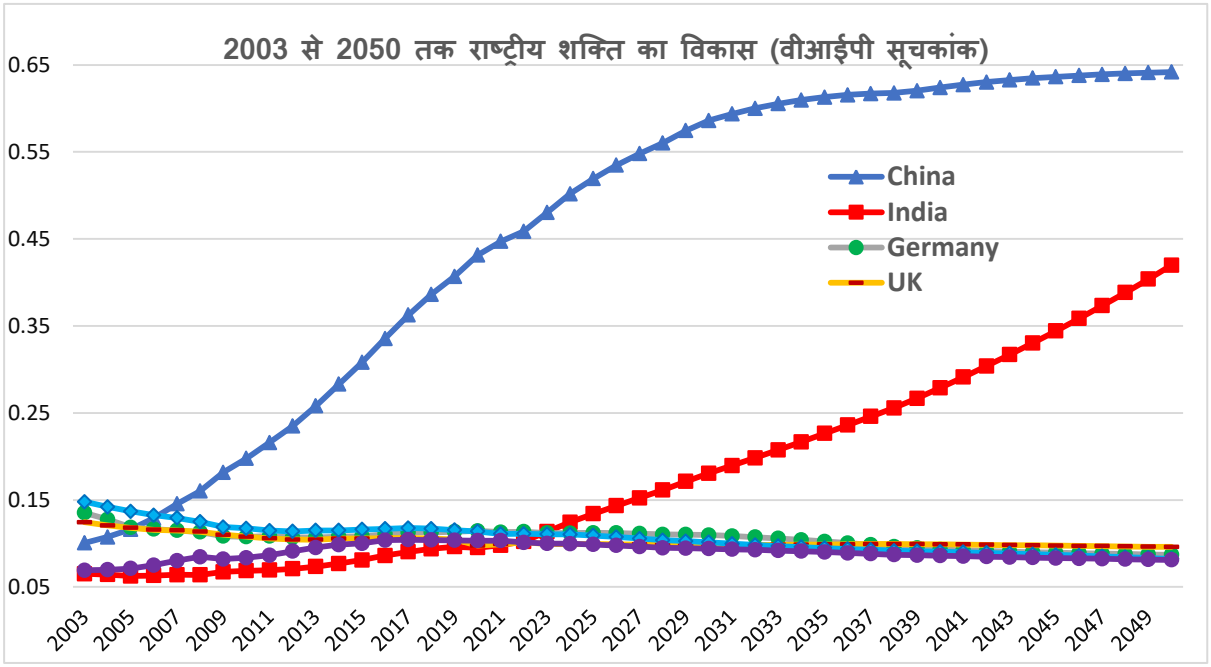

स्रोत : लेखक की गणना डब्ल्यूडीआई और एसआईपीआरआई के डेटा पर आधारित है।

चित्र 20 : वीआईपीएम द्वारा मापी गई सैन्य शक्ति

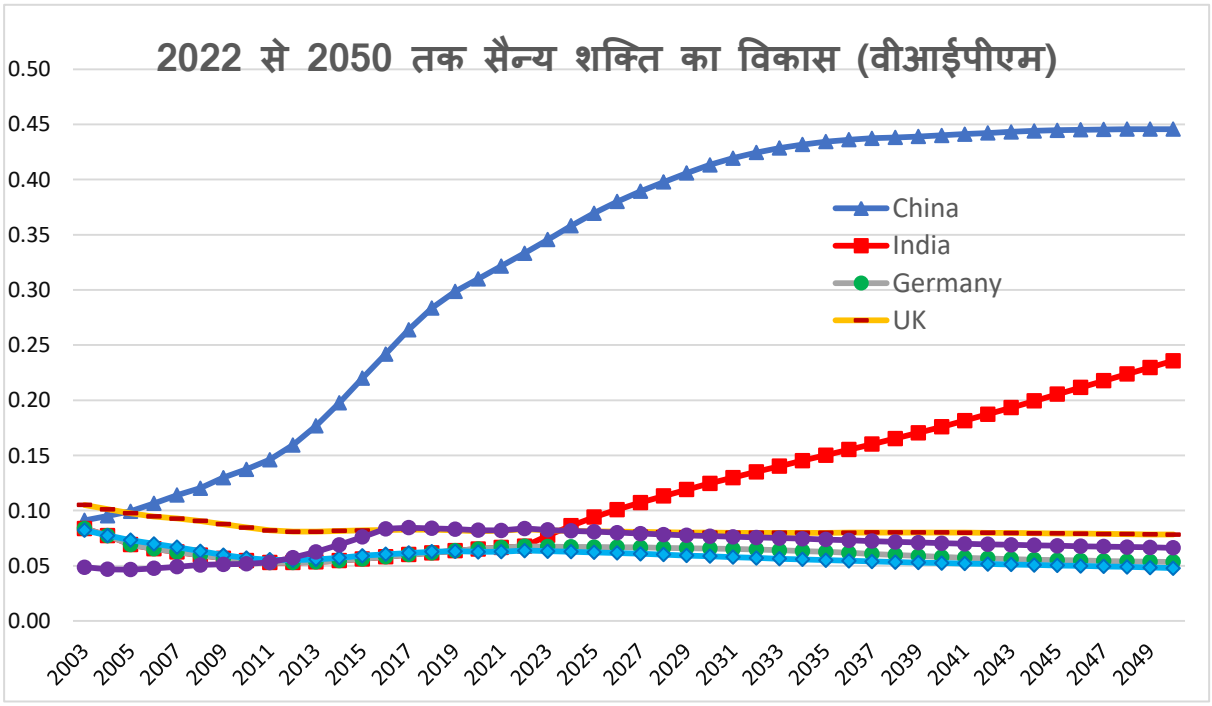

स्रोत : लेखक की गणना डब्ल्यूडीआई और एसआईपीआरआई के डेटा पर आधारित है।

सैन्य शक्ति का अनुमानित विकास, जैसा कि सूचकांक वीआईपीएम द्वारा मापा गया है, **चित्र 20** में दर्शाया गया है।[63]

9.2 बहुध्रुवीय परिधि वाला द्विध्रुवीय विश्व

2035 तक बहुध्रुवीय परिधि वाला एक “द्विध्रुवीय विश्व” उभरेगा। यह कुछ हद तक युद्धोत्तर द्विध्रुवीय विश्व जैसा होगा, लेकिन "तकनीकी वियोजन" के कारण यह प्रौद्योगिकी के संबंध में सबसे अधिक निकट होगा। बहुध्रुवीय परिधि में जापान, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, जर्मनी और भारत शामिल होंगे। भू-आर्थिक ताकत और सदस्य देशों की आर्थिक, व्यापार और प्रौद्योगिकी नीतियों पर प्राधिकार के कारण यूरोपीय संघ भी प्रतिस्पर्धी परिधि का महत्वपूर्ण सदस्य बन सकता है। हालाँकि, इसे फ्रांस, जर्मनी और यूरोपीय संघ के अन्य बड़े सदस्यों की स्वतंत्र भू-रणनीतिक और भू-राजनीतिक भूमिका से उत्पन्न विरोधाभास को हल करना होगा। कोरिया गणराज्य, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और ताइवान जैसी अन्य बड़ी अर्थव्यवस्थाएं भी प्रौद्योगिकी और निवेश में भूमिका निभाएंगी।

9.3 बहुध्रुवीय परिधि वाला त्रिध्रुवीय विश्व

हम वर्ष 2050 तक “बहुध्रुवीय परिधि के साथ त्रिध्रुवीय विश्व” के उद्भव की परिकल्पना करते हैं। यह अनुमान है कि भारत वर्ष 1992-2021 (चित्र 3 और 4) के दौरान शुरू हुए प्रति व्यक्ति जीडीपी अंतर को समाप्त करते हुए चीन के बराबर पहुंच जाएगा। कार्यनीतिक प्रौद्योगिकी अंतर को समाप्त करने के लिए आर्थिक विकास से आवश्यक राजस्व उत्पन्न होगा। इस विशाल अंतर का एक कारण वर्ष 1980-2010 के दौरान विकसित देशों द्वारा पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के प्रति अपनाई गई “अति उदार नीति (ओपन आर्म्ड क्लोज्ड आईज पॉलिसी)” है। ये देश अब समान रूप से उदार भागीदारी के माध्यम से भारत को प्रौद्योगिकी अंतर को समाप्त करने में सहायता करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

वर्ष 2035 तक भारतीय निजी सैन्य औद्योगिक परिसर विकसित करने में उल्लेखनीय प्रगति होगी। फ्रांस, इजरायल, यूके और यूएसए जैसे बड़े निजी रक्षा क्षेत्र वाली मुक्त बाजार अर्थव्यवस्थाओं के साथ सहयोग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। नागरिक और रक्षा क्षेत्रों के लिए आवश्यक "दोहरे उपयोग वाली प्रौद्योगिकियों" के विकास और उत्पादन को संयुक्त रूप से योजनाबद्ध और समन्वित करने की आवश्यकता है ताकि अधिकतम आत्मनिर्भर बना जा सके। वर्ष 2050 तक भारत के पास पूर्ण विकसित निजी सैन्य औद्योगिक प्रणाली होगी जो निजी सैन्य औद्योगिक अमेरिकी कंपनियों के साथ लगभग समान स्तर पर भागीदारी करेगी। भारत के रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र की साझेदारी रूस जैसे देश के साथ जारी रहेगी, जिसके सार्वजनिक क्षेत्र में रक्षा उत्पादन का अधिकांश हिस्सा है।

तकनीकी और डिजिटल फायरवॉल की दक्षता और व्यापकता तथा (क) पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना और उसके सहयोगी एवं साझेदार, और (ख) यूएसए और उसके सहयोगी एवं साझेदार, यह निर्धारित

[63] वीआईपीएम, परमाणु परिसंपत्तियों को छोड़कर, सेना की पूंजीगत परिसंपत्तियों और गैर-पूंजीगत परिसंपत्तियों के माप पर आधारित है। आदर्श रूप से पूंजीगत व्यय को रक्षा परिसंपत्तियों में परिवर्तित किया जाएगा तथा रक्षा राजस्व व्यय से अलग उपयोग किया जाएगा। चूंकि ये एसआईपीआरआई से अलग से उपलब्ध नहीं हैं, इसलिए पूंजीगत व्यय पर लागू होने वाली दर से अधिक मूल्यह्रास दर का उपयोग करके इनके योग का उपयोग उच्च मूल्यह्रास के साथ एक आभासी रक्षा परिसंपत्ति श्रृंखला बनाने के लिए किया गया है।

करेगी कि वर्ष 2050 में यूएसए या चीन अधिक शक्तिशाली (अर्थव्यवस्था, सैन्य, प्रौद्योगिकी) है या नहीं। चीन किसी भी विशेषज्ञ के पूर्वानुमान की तुलना में बहुत तेजी से विकसित हुआ है, क्योंकि किसी ने भी उसके द्वारा अपनाई गई असममित, आर्थिक, व्यापार, प्रौद्योगिकी और निवेश नीतियों की प्रकृति और आयात को नहीं समझा। इन अपारदर्शी नीतियों ने पीआरसी को शेष विश्व से मालगुजारी प्राप्त करने की सुविधा प्रदान की और इस प्रकार वर्ष 1980-2010 के दौरान विकास में लगभग 1/3 का योगदान दिया। इन मालगुजारियों को प्रौद्योगिकीय वियोजन और आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण के माध्यम से पीआरसी के निर्यात एकाधिकार के लिए व्यवहार्य प्रतिस्पर्धा के निर्माण द्वारा समाप्त किया जा सकता है।

9.4 कूटनीति

भारत के राष्ट्रीय हित को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जा रहा है और इसके राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक विकास लक्ष्यों को भारतीय कूटनीति में अधिक स्पष्ट रूप से एकीकृत किया जा रहा है। यह बेहतर होता रहेगा और परिणामतः बेहतर विदेश नीति एवं कार्यों का मार्ग प्रशस्त करेगा। प्रत्येक देश के बहुत-से लक्ष्य होते हैं, जिनमें से कुछ समय और भौगोलिक स्थिति के साथ कार्यों में परिवर्तित हो जाते हैं जो असंगत या यहां तक कि विरोधाभासी प्रतीत होते हैं। भारत के लिए मूल्य महत्वपूर्ण हैं, किंतु सहयोगियों द्वारा मूल्यों के अधिक गंभीर उल्लंघन को मौन रूप से स्वीकार कर, शत्रुओं और विरोधियों की पाखंडपूर्ण आलोचना करने के बजाय मीडिया की चकाचौंध से दूर चुपचाप और लगातार उनका पालन करना बेहतर है। राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, लेकिन दार्शनिक मूल्यों को त्यागा या भुलाया नहीं जाना चाहिए।

भारतीय भू-राजनीति और भू-अर्थशास्त्र में क्वाड की भूमिका के इस दशक में बढ़ने, अगले दशक में स्थिर होने और तीसरे दशक में घटने की संभावना है। विश्व की जनसंख्या में अफ्रीका और मध्य पूर्व की हिस्सेदारी बढ़ने के साथ, अगले दशक के दौरान हिंद महासागर का महत्व तेजी से बढ़ेगा। इस विस्तारित आईओआर क्षेत्र के शांतिपूर्ण विकास को बढ़ावा देने के लिए भारत के ऐतिहासिक संबंधों और विरासत को बढ़ाया और विकसित किया जाना चाहिए।

भारत भू-अर्थशास्त्र और भू-राजनीति में पीआरसी के वित्तीय लाभ की बराबरी नहीं कर सकता। हमें एक महत्वपूर्ण लाभ का उपयोग करना चाहिए जो हमारे पास है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने पीआरसी से इस्लाम को मिटा दिया है और उइगर के खिलाफ नरसंहार किया है। इसके विपरीत, भारत उन मुट्ठी भर देशों में से है, जहाँ कुल जनसंख्या में मुसलमानों का प्रतिशत 70 वर्षों से दशक दर दशक बढ़ा है। यह तर्क तब इस्तेमाल किया जा सकता है और किया जाना चाहिए जब हम 50 मुस्लिम देशों (इंडोनेशिया, मलेशिया, बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नाइजीरिया सहित) में चीन के साथ आमने-सामने हों। इस कथन को ईसाई देशों में मुस्लिम आबादी को भी संबोधित किया जाना चाहिए।[64]

[64]भारत में धार्मिक विभाजन का पेंडुलम सुदूर वामपंथ से दक्षिणपंथ की ओर चला गया है, लेकिन हमारा अनुमान है कि एक दशक में यह पुनः मध्य में स्थित होगा।

9.5 सभ्यतागत राष्ट्र

प्रायः यह प्रश्न पूछा जाता है कि क्या भारत चीन जैसा बन जाएगा? यह प्रश्न शायद ही कभी पूछा जाता है कि क्या भारत अमेरिका जैसा बन जाएगा! [65]दोनों ही प्रश्नों का उत्तर 'कोई नहीं' है। इंडिया अर्थात् भारत एक सभ्यतागत राष्ट्र है जो न तो अमेरिका जैसा होगा जो यूरोपीय औपनिवेशिक परंपराओं का उत्तराधिकारी है और न ही कम्युनिस्ट चीन जैसा जो हान साम्राज्यवादी परंपराओं का उत्तराधिकारी है। सिंधु-गंगा के मैदानों से मिले नए पुरातात्विक साक्ष्यों और यूरेशियन महाद्वीप की विभिन्न सभ्यताओं के आनुवंशिक चिह्नों के आधुनिक आनुवंशिक विश्लेषण से हमें पता चलता है कि ऐसा क्यों है! जब मिस्र की सभ्यता विजय के माध्यम से प्राप्त धन और श्रम के आधार पर महान स्मारकों का निर्माण कर रही थी, तब भारतीय सभ्यता अपनी विशाल आबादी के लिए शहरों के निर्माण, शिल्प विनिर्माण और आंतरिक रूप से तथा अपने उत्तर-पश्चिमी और पश्चिमी पड़ोसियों के साथ व्यापार विकसित करने पर केंद्रित थी। प्राचीन विश्व की अनुमानित एक तिहाई आबादी भारत में थी, एक तिहाई चीन में और शेष आबादी विश्व के अन्य हिस्सों (मेसोपोटामिया, मिस्र, फारस, तुर्की, पूर्वी और मध्य एशिया, इटली, ग्रीस) में बिखरी हुई थी।

एक ऐसे युग में, जिसमें अन्य सभ्यताएं पड़ोसी क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करने और "अन्य" लोगों को गुलाम बनाने में गौरव महसूस करती थीं, भारत के शासक वैदिक संस्कृति, आध्यात्मिक विचारों और सभ्यता को भारतीय उपमहाद्वीप (उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में श्रीलंका तक और पश्चिम में बलूचिस्तान के रेगिस्तान से लेकर भारत के पूर्व में म्यांमार की पहाड़ियों तक) में प्रसार कर रहे थे। [66]प्राचीन विश्व की अनुमानित एक तिहाई आबादी भारत में थी, एक तिहाई चीन में और शेष आबादी विश्व के अन्य हिस्सों (मेसोपोटामिया, मिस्र, फारस, तुर्की, पूर्वी और मध्य एशिया, इटली, ग्रीस) में बिखरी हुई थी।

इंडिया अर्थात् भारत *धर्मनिरपेक्ष आध्यात्मिक-सामाजिक अनुबंध* पर निर्मित है, जिसमें उस समय की सभी जनजातियाँ अपने देवताओं को यज्ञ अग्नि में ले जाती थीं, और हर दूसरी जनजाति के देवताओं को स्वीकार करने के लिए सहमत होती थीं, जिसमें प्रत्येक जनजाति अपने स्वयं के देवता (या किसी भी देवता) की पूजा करने के लिए स्वतंत्र होती थी! आध्यात्मिक-धार्मिक मान्यताओं और बाहरी सभ्यता के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के संदर्भ में यह "हिंदू या भारतीय धर्मनिरपेक्षता" भारतीय सभ्यतागत राष्ट्र की नींव है। आर्थिक क्षेत्र में, भारत विनिर्मित वस्तुओं के उत्पादन या विनिर्मित निर्यात पर एकाधिकार या द्वैधाधिकार नहीं चाहता है। यह केवल विनिर्मित वस्तुओं के उत्पादन में अपने पांचवें स्थान और विनिर्मित वस्तुओं के निर्यात में अपने 15वें स्थान के बीच बड़े अंतर को कम करना चाहता है।

---

[65]अगर पश्चिमी विश्लेषक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं के बयानों को पढ़ते और उनका विश्लेषण करते और उसके इतिहास को समझते, पश्चिमी अज्ञानता से लाभ उठाने वाले निहित स्वार्थों से मुक्त होते, तो उन्हें आश्चर्य नहीं होता। यही बात भारत पर भी लागू होती है; पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण से लाभ उठाने वाले निहित स्वार्थों की बात सुनने के बजाय, शासकों ने 75 वर्षों से क्या कहा है, इसे पढ़ें और समझें।

[66]राजाओं, महाराजाओं और सम्राटों के बीच अधिकांश आंतरिक युद्ध, उन लोगों के बीच हुए जिन्होंने वैदिक अध्यात्मवाद और सिद्धांतों के अपने पसंदीदा तत्वों को स्वीकार किया और बढ़ावा दिया, और सभी ने विद्वानों और गुरुओं द्वारा निर्धारित युद्ध के नियमों का पालन किया!

10. नीतिगत विजन: रोजगार सृजनकर्ताओं को बंधनमुक्त करना

1990 के दशक के सुधारों के बाद, वर्ष 2004-2013 के दौरान आर्थिक सुधारों की गति में स्पष्ट मंदी देखी गई। [67]पिछले दस वर्षों में निरंतर, तीव्र समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किए गए आर्थिक सुधारों में तेज़ी देखी गई है। इनमें से कुछ सुधार अधूरे रह गए हैं, दूसरों को परिणामों के आधार पर परिष्कृत करने की आवश्यकता है, और अन्य के संबंध में नई चुनौतियों का समाधान करने के लिए विचार करने की आवश्यकता है। इस खंड में अगले पाँच वर्षों में आवश्यक कुछ नीतिगत और संस्थागत सुधारों को उजागर किया गया है।

चार परिवर्तनकारी सुधार शुरू किए गए हैं, लेकिन अधूरे रह गए हैं। ये - (1) बहुत-से श्रम कानूनों को एकीकृत करने और प्रतिस्थापित करने के लिए चार श्रम संहिताएँ, (2) कृषि कानूनों में सुधार, विशेष रूप से कृषि वस्तुओं के अंतर-राज्यीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से संबंधित कानून, (3) सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और वित्तीय संस्थानों के निजीकरण के लिए कार्यनीतिक औद्योगिक नीति, और (4) भूमि कानूनों में सुधार, ताकि भूमि पूलिंग व्यवस्था के माध्यम से अवसंरचना विकास के लिए अधिग्रहण को तेज़ और निष्पक्ष बनाया जा सके, और संरचनात्मक परिवर्तन एवं उत्पादक विकास को बढ़ावा देने के लिए भूमि उपयोग को बदलना संभव हो सके। एक बार ये पूरे हो जाने के बाद, वर्ष 2010 के सुधार, दायरे और महत्वाकांक्षा में यकीनन 1990 के दशक के सुधारों से प्रतिस्पर्धा करेंगे।

तीन नए परिवर्तनकारी नीति सुधार जो शासन प्रणालियों को सरल और स्वचालित बनाएंगे, और शिक्षा, कौशल और नौकरी कौशल मिलान और स्वास्थ्य और कल्याण की गुणवत्ता में अप्रत्याशित और तीव्र सुधार करने के लिए *एआई विशेषज्ञ प्रणालियों* के तीन उपयोग : (1) पूरी तरह से निष्पक्ष, विशेषज्ञ एआई प्रणाली ***ई- कौटिल्य*** द्वारा भुगतान, संग्रह, कर भुगतान की निगरानी और चोरी और भ्रष्टाचार का पता लगाने के लिए जीएसटी, आयकर और आयात-निर्यात शुल्कों का एक अभूतपूर्व सरलीकरण और एकीकरण। (2) एक सरकारी सार्वजनिक इंटरफ़ेस (जीपीआई), जो सभी अंतर-सरकारी (केंद्र और राज्य सरकारों के मंत्रालय / विभाग) और सरकार-सार्वजनिक संवाद को एकीकृत करता है, और एक डिजिटल एआई विशेषज्ञ, ***ई-चाणक्य को*** सभी आर्थिक कानूनों, नियमों और विनियमों के अनुपालन को सरल बनाने की सुविधा प्रदान करता है। (3) ई-मनु नामक एक एआई निर्णायक, जो मुकदमेबाजी को सुलझाने की लागत और समय को अप्रत्याशित रूप से कम करता है, (4) स्कूली शिक्षा के लिए एक डिजिटल एआई विशेषज्ञ प्रणाली, ***ई-आचार्य***, जो शिक्षकों को शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने और विभिन्न क्षमताओं वाले छात्रों को उनकी शिक्षा में सुधार करने में मदद कर सकती है (5) एक डिजिटल डॉक्टर, निदान के लिए ***ई-वैद***, औषधियों का नुस्खा और सर्जरी या उच्च स्तर के मूल्यांकन के लिए संदर्भ, जो कंपाउंडर से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में सामान्य चिकित्सक तक सभी स्वास्थ्य प्रदाताओं के साथ-साथ शिक्षित रोगियों की मदद करेगा, ताकि स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने वाली सलाह से बचा जा सके और भारत में स्वास्थ्य परिणामों की गुणवत्ता में अप्रत्याशित रूप से सुधार हो सके। (6) नौकरी कौशल के निर्माण और नौकरी कौशल की मांग और आपूर्ति के मिलान के लिए इको-सिस्टम भारत में अत्यधिक खंडित और *अविकसित* है। नौकरी कौशल सृजन में सुधार के

[67]सुधारों की गति में मंदी के बावजूद, 1990 के दशक के सुधारों के विलंबित प्रभाव के कारण 2000 के दशक में आर्थिक वृद्धि काफी अधिक रही। सुधार अवकाश और उदार राजकोषीय मौद्रिक नीति का प्रभाव 2010-2014 तक महसूस किया गया।

लिए सरकार द्वारा बहुत-से सफल प्रयास किए गए हैं। किंतु, इस त्रि-कोणीय बाजार को एकीकृत करने के लिए आवश्यक एक हाइब्रिड भौतिक-डिजीटल प्रणाली के सृजन हेतु, अनेक स्तरों पर, अत्यधिक बल देने की आवश्यकता है। एक विशेषज्ञ एआई प्रणाली **ई-गुरु** इसका एक डिजीटल तत्व होगा।

आर्थिक विकास में तेजी लाना और इसे तीन दशकों तक बनाए रखना उपरोक्त विजन को प्राप्त करने की कुंजी है। तीव्र विकास उच्च राजस्व का स्रोत है, जो सरकार द्वारा हार्ड और सॉफ्ट अवसंरचना विकास का निधियन करेगा और कम सुविधा प्राप्त लोगों की देखभाल करने वाली कल्याणकारी प्रणाली बनाने के लिए संसाधन प्रदान करेगा। एक प्रतिस्पर्धी बाजार अर्थव्यवस्था जिसमें एकाधिकार वाली अवसंरचना के खंड और असममित सूचना या नैतिक जोखिम की विशेषता वाली सेवाओं को तर्कसंगत रूप से विनियमित किया जाता है, निरंतर तीव्र विकास के लिए एक आवश्यक शर्त है। सार्वजनिक वस्तुओं का सरकारी प्रावधान और प्रतिस्पर्धी उद्यमिता और नवाचार के लिए एक परिवेश इस विकास को बनाए रखने में मदद करेगा।

10.1 नियंत्रण, विनियमन और नियामक

स्वतंत्रता के पहले 30 वर्षों के दौरान भारत ने नियंत्रण, प्रतिबंध, विनियमन और प्रक्रिया का एक जंगल विकसित किया, जिसे लाइसेंस, परमिट कोटा राज के रूप में जाना जाता है। 1980 के दशक से काफी हद तक नियंत्रण और उदारीकरण हुआ है, लेकिन इसके अवशेष अभी भी प्रत्येक कानून, नियम, विनियमन और प्रक्रिया में मौजूद हैं, जो हर विषय और नीति क्षेत्र से संबंधित हैं।

"टीम लीज रेग टेक" नामक कंपनी के अनुसार, औसत कंपनी पर 1536 अधिनियम और नियम, 69,233 अनुपालन और 6618 वार्षिक फाइलिंग लागू होती हैं। इनमें से, लागू कानूनों और नियमों का 30.1% हिस्सा श्रम, 47% हिस्सा अनुपालन और 68% हिस्सा कारावास के प्रावधानों का है।

कराधान और वित्त से संबंधित 54 केंद्रीय अधिनियम, 945 अनुपालन और 254 फाइलिंग/सूचनाएं हैं।[68]भारतीय कर दफ्तरशाही मुक्त बाजार, खुले लोकतंत्रों में कुख्यात है और संभावित एफडीआई निवेशकों के बीच इसकी प्रतिष्ठा सबसे खराब है। हमारे प्रतिस्पर्धी देशों की तुलना में इसका प्रदर्शन बहुत खराब है। सरलीकरण कानून और दर संरचना, अनुपालन और निगरानी प्रणालियों को डिजिटल बनाने और उनके सुचारू और कुशलतापूर्वक संचालन को बहुत आसान बना देगी, जिससे करदाताओं और सरकार के कर राजस्व संग्रह दोनों को लाभ होगा।

नियंत्रण की मानसिकता जनता के मन में गहराई से समाई हुई है, और इसे जड़ से उखाड़ने के लिए अथक समर्पण और प्रयास की आवश्यकता होगी। इसे आर्थिक रूप से तर्कसंगत विनियमन और सुयोग्य, स्वतंत्र, पेशेवर नियामकों द्वारा समर्थित होना चाहिए।

आधुनिक भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए 21वीं सदी के विनियमन और विनियामक प्रणालियों की आवश्यकता है, जिन्हें तकनीकी रूप से योग्य पेशेवर विनियामकों द्वारा संचालित किया जाता है।[69] ये सार्वजनिक वस्तुओं की अवसंरचना, वित्तीय बाजारों (सेबी) और प्रत्ययी वित्तीय संस्थानों (आरबीआई),

[68]इसके अलावा 62 राज्य अधिनियम, 2339 अनुपालन और 736 फाइलिंग/सूचनाएं हैं, जिन्हें संबोधित किया जाना आवश्यक है।

[69]नौकरशाहों और राजनेताओं को अकादमिक अर्थशास्त्र, बाजार की वास्तविकता, उद्यमशीलता जोखिम लेने और प्रबंधकीय निर्णय लेने की जटिलता के बारे में कुछ नहीं पता है। विनियमों को लागू करने से पहले ऐसे पेशेवरों के साथ-साथ उपभोक्ताओं/उपयोगकर्ताओं/खरीदारों द्वारा भी टिप्पणी और समालोचना की जानी चाहिए।

शिक्षा और स्वास्थ्य (एफडीए) जैसी सामाजिक सेवाओं से संबंधित हैं, जो असममित सूचना और नैतिक जोखिम की विशेषता रखते हैं, और सार्वजनिक सुरक्षा (प्रदूषण-ईपीए, आग के खतरे, खदानें) और सुरक्षा को प्रभावित करने वाले विशिष्ट विषय हैं।[70] सरकार को शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा और विज्ञान में हाल के सुधारों को गहन और व्यापक बनाना चाहिए, ताकि इन जटिल क्षेत्रों के लिए बेहतर नियामक विकसित किए जा सकें।

विद्युत उत्पादन या ट्रेन सेवा संचालित करने जैसे प्रतिस्पर्धी भागों और विद्युत वितरण और पारेषण, बंदरगाह, रनवे और रेल लाइन और सिग्नलिंग सिस्टम, जिन्हें विनियमन की आवश्यकता है, जैसे भागों को अलग करने के लिए अवसंरचना का पृथक्करण आवश्यक है। उत्पादन और इंट्रा-सिटी विद्युत वितरण पर अभी भी राज्य विद्युत बोर्डों का एकाधिकार है और इसे प्रतिस्पर्धी बनाया जाना चाहिए। इसी तरह, यात्री और मालगाड़ी सेवाओं और बंदरगाहों, हवाई अड्डों और रेलवे स्टेशनों पर कार्गो हैंडलिंग, ईंधन आपूर्ति और अन्य सेवाओं को भी प्रतिस्पर्धी बनाया जाना चाहिए। गैर-प्रतिस्पर्धी भागों में, इंट्रा-सिटी विद्युत और पाइप्ड गैस वितरण जैसे क्षेत्रों को बेंचमार्क प्रतिस्पर्धा के अधीन होना चाहिए, और अंतर-शहरी पारेषण लाइनों (विद्युत, पाइपलाइन, रेल लाइन, फाइबर-ऑप्टिक केबल) को विनियमित खुली पहुंच के साथ सार्वजनिक वाहक सिद्धांत पर संचालित किया जाना चाहिए। बंदरगाहों, हवाई अड्डों और समर्पित माल गलियारों के स्टेशनों पर कार्गो के लिए टर्नअराउंड समय कम करके प्रतिस्पर्धी देशों की तर्ज पर किया जाना चाहिए।
घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही वित्तीय बाजारों को नवाचार के लाभों और वृहद अस्थिरता और संकट के जोखिमों के बीच तर्कसंगत संतुलन बनाने के लिए विनियमन की आवश्यकता है। भारत और वैश्विक वित्तीय बाजारों के बीच ब्याज अंतर का एक बड़ा हिस्सा प्रतिस्पर्धा की सापेक्ष कमी और उच्च राजकोषीय घाटे के कारण है। वित्तीय प्रोत्साहन और दक्षता को नष्ट किए बिना निवेशकों/जमाकर्ताओं की बड़ी संख्या की सुरक्षा के लिए प्रत्ययी वित्तीय संस्थानों को विनियमित करने की आवश्यकता है।
इंटरनेट और वेब-आधारित सेवाएँ, जैसे ई-कॉमर्स और सोशल मीडिया, ऐसे नए क्षेत्र हैं जिनके आर्थिक और सामाजिक प्रभाव को अभी भी पूरी तरह से समझा नहीं गया है। भारत के लिए उभरते ज्ञान पर आधारित तर्कसंगत, सामाजिक रूप से लाभकारी विनियमनों को आगे बढ़ाने का अवसर है।

10.1.1 विनियामक अनुपालन में आसानी

संसद द्वारा अनुमोदित चार संहिताओं को अधिसूचित करके श्रम संहिता में सुधार को इसके तार्किक निष्कर्ष पर ले जाना चाहिए। औद्योगिक संबंध संहिता में सीमा स्तर को 300 श्रमिकों से बढ़ाकर 1000 श्रमिक करने पर भी विचार किया जाना चाहिए। सामाजिक संहिता में एक अनजाने में विसंगति है जो श्रम गहन, छोटे-मध्यम उद्यमों (एसएमई) में श्रमिकों को रोजगार देने के लिए हतोत्साहित करती है। 22,000 रुपये प्रति माह से अधिक वेतन वाले कर्मचारियों के लिए नियोक्ता द्वारा सामाजिक सुरक्षा योगदान (ईएसआई, पीएफ आदि) के तहत कर्मचारियों के लिए समान अंशदान के रूप में वेतन का 9% भुगतान किया जाता है। दूसरी ओर, यदि कर्मचारी का वेतन

[70]जैसा कि पिछले खंड में प्रस्तावित किया गया है, हमें तकनीकी रूप से कुशल, खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफडीए), एक पर्यावरण संरक्षण एजेंसी (ईपीए) और रोग नियंत्रण केंद्र (सीडीसी) की स्थापना करनी चाहिए, जो अमेरिका और/या यूरोपीय संघ के संस्थानों की तर्ज पर हो। अच्छे स्कूल नियामकों के लिए हम स्कैंडिनेविया और अन्य यूरोपीय देशों का उदाहरण ले सकते हैं।

22,000 रुपये प्रति माह से कम है, तो नियोक्ता को सामाजिक सुरक्षा योगदान के रूप में वेतन का 45% तक देना पड़ता है। चूंकि एसएमई कर्मचारियों का बड़ा हिस्सा 22,000 रुपये प्रति माह से कम वेतन वाली श्रेणी में आने की संभावना होती है, वे नियमित कामगार रखने के लिए और अधिक हतोत्साहित होते हैं।

नियंत्रणों को समाप्त करना और विनियामक अनुपालन (ईओआरसी) की सुगमता में सुधार करना एक महत्वपूर्ण लक्ष्य बना हुआ है। इसके लिए यथासंभव अधिक से अधिक नियमों और विनियमों को कम करना और एकीकृत करना, तथा डिजिटल फाइलिंग, निजी प्रमाणन और यादृच्छिक लेखा परीक्षा प्रणाली के माध्यम से अनुपालन प्रक्रियाओं को सरल बनाना आवश्यक है।[71] इस प्रक्रिया को केंद्रीय विनियमों से लेकर संघ राज्य क्षेत्रों (यूटी) के विनियमों तक राज्य विनियमों के कई तत्वों के साथ उत्तरोत्तर आगे बढ़ना चाहिए।[72]

श्रम, कराधान और वित्त के अलावा अन्य विषयों पर 23,655 केंद्रीय अनुपालन और 1,893 फाइलिंग/सूचनाएं हैं, जिन्हें अप्रत्याशित रूप से कम करने की आवश्यकता है। इसके बाद 35,289 राज्य अनुपालन और 687 सूचनाओं को बदलने के लिए एक मॉडल विनियमन बनाया जाना चाहिए। केंद्र सरकार संघ राज्य क्षेत्रों में उन्हें लागू करके मॉडल राज्य नियमों का परीक्षण और प्रदर्शन कर सकती है।

जन विकास विधेयक ने आर्थिक अपराधों से संबंधित 40 आपराधिक दंडों को समाप्त कर दिया है। 26,400 अभी भी शेष हैं। प्रत्येक विधेयक को एक-एक करके देखने और आपराधिक दंडों का विलोप करने में आधी सदी लग सकती है। उन्मूलन कुछ आम तौर पर स्वीकृत दार्शनिक, सामाजिक और न्यायिक सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए। इन सिद्धांतों को चुनने के लिए साहित्य के सर्वेक्षण का उपयोग किया जा सकता है और फिर उन्हें शेष कानूनों पर लागू किया जा सकता है।

10.1.2 सरकारी सार्वजनिक इंटरफ़ेस (जीपीआई)

संघ और राज्य स्तर पर सरकार-जनता के बीच संपर्क को डिजिटल बनाने के लिए कई, विविध, असमन्वित प्रयास किए जा रहे हैं, जिनमें से प्रत्येक प्रयास को शुरू से शुरू करना होगा और इनकी सीखों के माध्यम से अग्रसर करना होगा। एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफ़ेस के प्रावधान द्वारा लागत और प्रयास को कम करके इन्हें गति दी जा सकती है। यह, यूनिवर्सल गवर्नेंस इंटरफ़ेस (जीपीआई), सरकार और जनता के बीच तथा सरकारी मंत्रालयों और विभागों के बीच एक-दूसरे के साथ संपर्क के लिए एक प्रणाली की नींव रखेगा। यह जीवनयापन को आसान बनाने और व्यापारिक सुगमता के मामले में एक बड़ी उपलब्धि होगी, जो वित्तीय क्षेत्र में यूपीआई के बराबर होगी।

10.2 डिजिटल टैक्समैन: ई- कौटिल्य

कॉर्पोरेट करों में सुधार किया गया है और कर दाखिल करने और अनुपालन को आसान बनाने की योजनाएं शुरू की गई हैं, लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। आयकर अधिनियम

---

[71]https://prsindia.org/billtrack/overview-of-labour-law-reforms पर कानूनी बदलावों का विवरण देखें। टीम लीज़ स्टडी का अनुमान है कि केंद्रीय श्रम कानूनों के तहत 937 अनुपालन और 135 फाइलिंग और सूचनाएं थीं। इनमें 90% की कमी की जानी चाहिए।

[72]टीम लीज अध्ययन के अनुसार, राज्यों में 423 श्रम-संबंधी अधिनियम, 31,605 अनुपालन और 2,913 संबंधित फाइलिंग हैं। इनमें से अधिकांश को चार केंद्रीय श्रम संहिताओं और उनके अनुपालन में समाहित किया जा सकता है।

(1961) में 90 पृष्ठों में 23 अध्याय, 298 धाराएं और चौदह अनुसूचियां हैं। अधिनियम के 60 वर्षों के स्पष्टीकरण और संशोधनों में जमा हुए कई उप-धाराओं और उप-उप धाराओं से और अधिक जटिलता उत्पन्न होती है। 47 पृष्ठों में 129 आयकर नियम, कई उप-नियम और तीन परिशिष्ट हैं। प्रत्यक्ष कर अधिनियमों में निहित जटिलता बड़े पैमाने पर मुकदमेबाजी उत्पन्न करती है (मार्च 2017 में 1.37 लाख मामले मुकदमे के अंतर्गत थे), जिसमें प्रत्यक्ष कर विभाग द्वारा 85% की गईं, और बार-बार असफल अपीलें हुईं, जिनकी सफलता दर 30% है। आर्थिक तर्क, वैश्विक सर्वोत्तम परिपाटी और भाषा की सरलता को शामिल करते हुए एक नई प्रत्यक्ष कर संहिता तैयार की गई है। इसमें 254 पृष्ठों (16 पृष्ठों की विषय-सूची सहित) में 16 अध्याय, 285 खंड और अट्ठारह अनुसूचियां हैं। यह एमएसएमई के लिए अनुपालन के समय और वित्तीय लागत को कम करने तथा भारतीय अदालतों में मुकदमेबाजी की समस्या को अप्रत्याशित रूप से कम करने के लिए आवश्यक है।

विनिर्माण में व्युत्क्रमित शुल्क ढांचे को सुधारने के लिए सीमा शुल्क ढांचे में सुधार करें और संभावित प्रतिस्पर्धियों थाईलैंड, वियतनाम, मलेशिया (***चित्र 21***) और विशिष्ट शुल्कों (***तालिका 16***) के औसत टैरिफ दरों को कम करें। संभावित प्रतिस्पर्धियों के साथ एफटीए को कम (या शून्य) टैरिफ द्वारा बनाए गए व्युत्क्रम पर सावधानीपूर्वक ध्यान देना चाहिए। विकसित देशों के साथ एफटीए में यह मुद्दा नहीं उठता है। सीमा शुल्क ढांचे में व्यापक सुधार, जिसमें विशिष्ट शुल्कों को समाप्त कर दिया गया है और औसत दर को आसियान के स्तर तक घटा दिया गया है, न केवल एसएमई निर्यात का समर्थन करेगा, बल्कि वैश्विक ध्यान भी आकर्षित करेगा, जो सरकार का एक बड़ा सुधार है।

चित्र 21: आसियान देशों के सापेक्ष भारत के विनिर्माण शुल्क

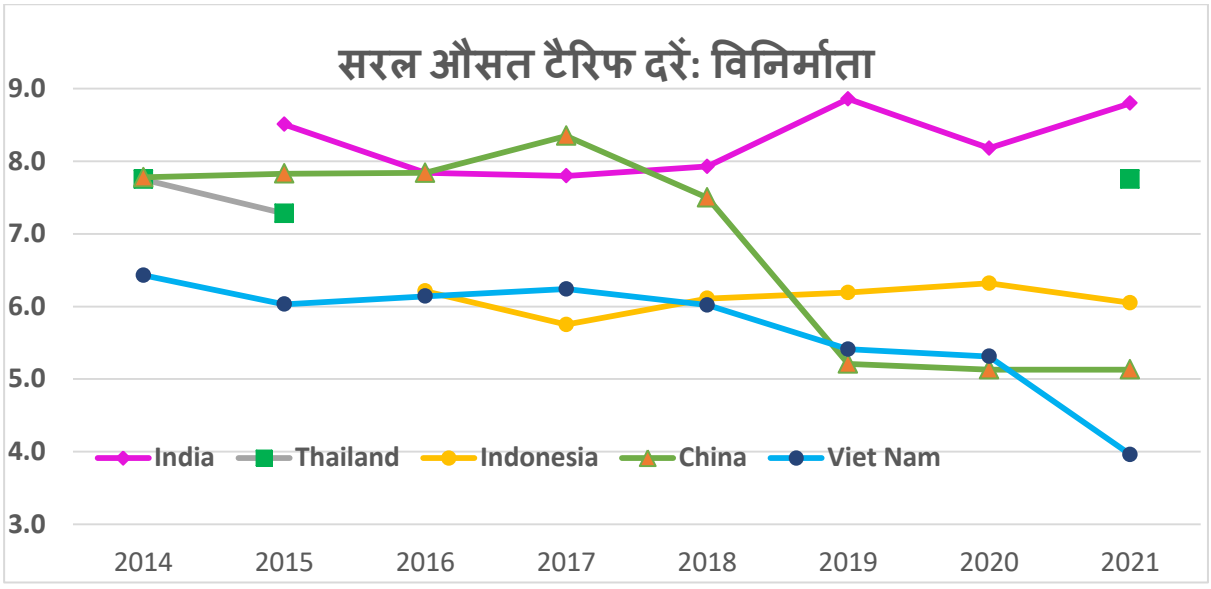

स्रोत: विश्व बैंक, विश्व विकास संकेतक।

तालिका 16: भारत में विशिष्ट शुल्क

विनिर्माण में विशिष्ट टैरिफ दरें (टैरिफ लाइनों का प्रतिशत)

Specific Tariff rates in manufacturing (% of tariff lines)						
	% of specific rates			Rank		
Country Name	**2003**	**2011**	**2020**	**2003**	**2011**	**2020**
India	**2.3**	**2.3**	**3.9**	**4**	**3**	**1**
Uzbekistan			**1.2**			**2**
Timor-Leste			**1.2**			**3**
United States	**1.1**	**0.8**	**1.1**	**7**	**9**	**4**
Nauru			**1.0**			**5**
Average	**0.2**	**0.3**	**0.2**			
Avg-primary	1.2	1.4	5.2			
Average-all	0.5	0.6	1.6			
Note: rank 1 = Worst ie highest nos of specific duties						

वस्तु एवं सेवा कर एक ऐतिहासिक संवैधानिक परिवर्तन था। लेकिन बहुत सारे पुराने कानून, नियम और प्रक्रियाएं, जिन्हें इसे प्रतिस्थापित करना था, नए कानून, नियमों और दरों में सम्मिलित कर लिए गए। नियमों और प्रक्रियाओं का व्यापक सरलीकरण प्राप्त किया जा सकता है यदि तीन-चौथाई (3/4वां) मालों और सेवाओं को एक समान 15% दर के अधीन किया जाए, एक-दसवां से एक-आठवां (10-15%) भोजन, दवाइयां और चिकित्सा सेवाओं और शिक्षा सेवाओं को छूट दी जाए (0%), ताकि समानता सुनिश्चित हो सके।[73] राजस्व तटस्थता के लिए आवश्यक है कि कार, तंबाकू और इसके उत्पाद और लक्जरी होटल 25% की उच्च दर के अधीन हों। [74]यदि उपकर बढ़ाया जाता है तो इसे

[73]केवल निर्यात पर ही शून्य दर लागू होनी चाहिए, अन्यथा जीएसटी प्रणाली की जटिलता तेजी से बढ़ती जाएगी। एकसमान दर संरचना मानव निर्मित और कृत्रिम रेशों, कपड़ों और कपड़े के प्रति भेदभाव को भी दूर करेगी, जिसने भारत को बिना कपास और मिश्रित कपड़ों से बने परिधानों का प्रमुख निर्यातक बनने से वंचित रखा है।

[74]इस दर संरचना के साथ, 99% एमएसएमई दैनिक/साप्ताहिक/मासिक डेटा संग्रहीत करने और रिटर्न दाखिल करने के लिए एक्सेल स्प्रेड शीट का उपयोग कर सकते हैं; प्रत्येक आपूर्तिकर्ता से खरीदे गए इनपुट का कुल मूल्य और प्रत्येक खरीदार को बेचे गए आउटपुट का कुल मूल्य 15% और 25% जीएसटी के लिए अलग-अलग दर्ज करना होगा। निगरानी समान रूप से आसान हो जाती है क्योंकि एक ही शीट विक्रेताओं की (जीएसटीएन) पंक्तियों और खरीदारों के कॉलम का प्रतिनिधित्व कर सकती है, जिसमें प्रत्येक सेल महीने/तिमाही/वर्ष (15% पर) के दौरान खरीदी गई वस्तुओं के कुल मूल्य का प्रतिनिधित्व करता है, और दूसरी शीट उन लोगों के लिए होती है जो 25% पर आइटम बेचते और खरीदते हैं।

तंबाकू और इसके उत्पाद, सुपारी और लक्जरी कारों जैसे कुछ उत्पाद श्रेणियों तक ही सीमित रखा जाना चाहिए, अन्यथा वे बहुत-सी जीएसटी दरों से अलग नहीं होंगे। उच्च आय लोच वाले और मुख्य रूप से कॉर्पोरेट क्षेत्र द्वारा उत्पादित मालों और सेवाओं पर 30% की दूसरी दर रखी जाए। छूट को बुनियादी खाद्य और पेय पदार्थों, चिकित्सा सेवाओं और औषधियों तथा शिक्षा सेवाओं तक सीमित रखा जाना चाहिए। प्रस्तावित परिवर्तनों के परिणाम ***तालिका 17*** में संक्षेप में दिए गए हैं। ऊर्जा (विद्युत, कोयला प्राकृतिक गैस) और पेट्रोलियम उत्पादों को जीएसटी के अंतर्गत लाएं। राजस्व तटस्थता प्राप्त करने के लिए पेट्रोल पर उपकर अधिरोपित करें।

तालिका 17: जीएसटी सुधार *के निहितार्थ*

	श्रेणी के अनुसार मदों की संख्या			परिवर्तन	
श्रेणी	वर्तमान	प्रस्ताव 1	प्रस्ताव 2	प्रस्ताव 1	प्रस्ताव 2
उपभोक्ता माल एवं सेवा	193	177	82	-16	-111
सरकारी माल एवं सेवा	17	17	17		
मिश्रित माल एवं सेवा	36	31	16	-5	-20
मध्यवर्ती	130	123	118	-7	-12
पूंजी माल	4	4	2		-2
कुल	380	352	235	-28	-145

स्रोत: विरमानी और भसीन (2020)

एमएसएमई के लिए आयकर, जीएसटी और सीमा शुल्क टैरिफ की स्वचालित सीडिंग अगले 3 से 5 वर्षों में पूरी की जा सकती है और होनी भी चाहिए। इसके लिए तीनों करों के लिए कर रिटर्न के सरलीकरण, मानकीकरण और एकीकरण की आवश्यकता है, ताकि एआई स्वचालित रूप से तीनों करों के लिए क्रॉस चेक और रिटर्न बना सके (***चित्र 22)।*** कौटिल्य कर प्रणाली की निगरानी और कर चोरी की जांच करने के लिए एक *विशेषज्ञ एआई* डिजिटल टैक्स पर्सन (***ई- कौटिल्य***) बनाया जाएगा। यह उचित प्राधिकरणों द्वारा आगे की जांच के लिए विसंगतियों और अपवादों का उन्मूलन करेगा।

चित्र 22: एक एकीकृत डिजिटल कर प्रणाली

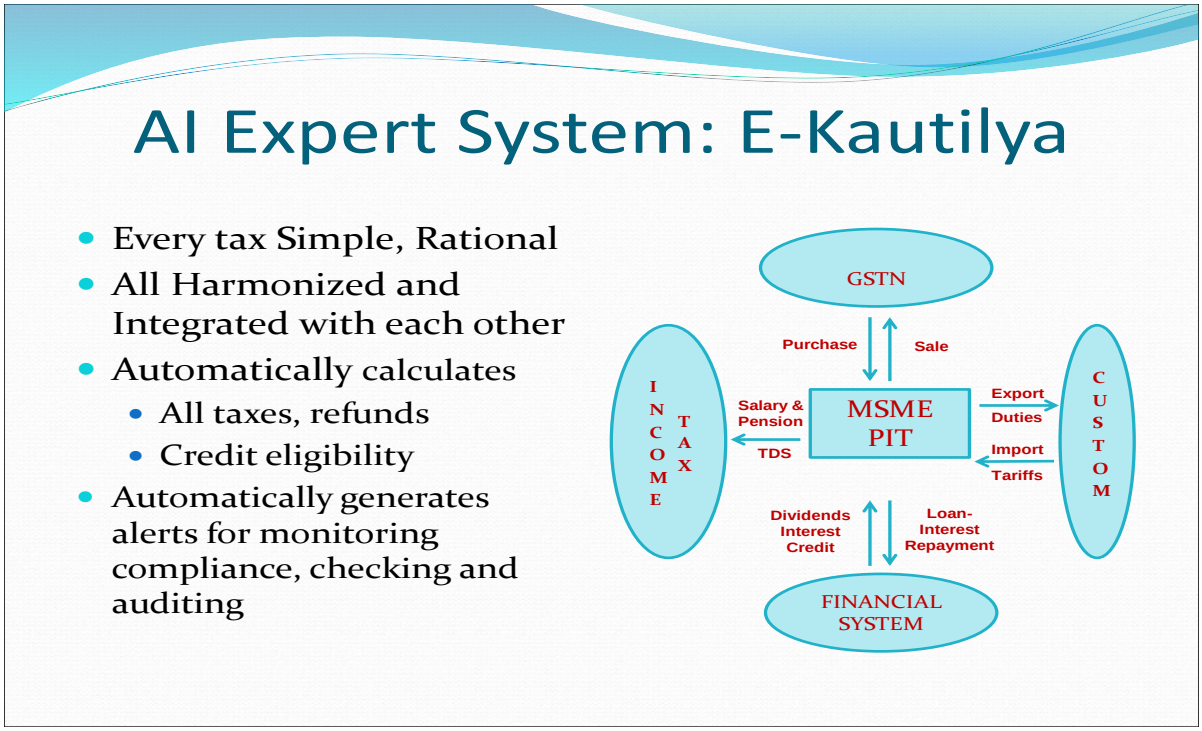

स्रोत: लेखक

कर सुधार, पहले वर्ष में राजस्व तटस्थ होने के बावजूद, स्वैच्छिक अनुपालन में सुधार करेगा, राजस्व में वृद्धि करेगा, तथा दूसरे या तीसरे वर्ष से बहुत अधिक राजस्व उत्पन्न करेगा।

छोटे व्यवसायों के लिए कर भुगतान के डिजिटल स्वचालन को जटिल प्रचालन वाले बड़े संगठनों के लिए एक पेशेवर "कर लेखा परीक्षा इकाई" के साथ समर्थित किया जाना चाहिए, जिसमें परिभाषा और व्याख्या के कई मुद्दे हों, ताकि मतभेदों को आमने-सामने सुलझाया जा सके, और प्रवर्तन प्राधिकरणों द्वारा तदर्थ हस्तक्षेप को समाप्त किया जा सके।

व्यक्तिगत आयकर में सुधार और प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण (डीसीटी) का संबंधित मुद्दा निवल आय हस्तांतरण (एनआईटी) के रूप में कल्याण प्रणाली में एक अभूतपूर्व सुधार की पृष्ठभूमि तैयार करता है। प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण, नकारात्मक आयकर की अवधारणा पर आधारित है, जिसे पहली बार 1950 के दशक के अंत में मिल्टन फ्रीडमैन द्वारा रेखांकित किया गया था। प्रस्तावित एनआईटी प्रणाली आयकर दाता के स्तर से नीचे की आय वाले प्रत्येक व्यक्ति को कवर करेगी, जिसमें सेवानिवृत्त और वृद्ध शामिल हैं।

10.3 पूंजी बाजार

भारत में पूंजीगत लागत अपने प्रतिस्पर्धी देशों और वैश्विक वित्तीय बाजारों के सापेक्ष बहुत अधिक है। एशिया के प्रतिस्पर्धी देश कम कॉर्पोरेट कर दरों और राजकोषीय अधिशेष के लिए प्रसिद्ध हैं। हमने कॉर्पोरेट कर दरों को प्रतिस्पर्धी स्तरों तक कम कर दिया है और हमें 2035 तक राजकोषीय घाटे को समाप्त करना होगा।

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (चार को छोड़कर सभी) और बहुत-सी सरकारी सामान्य बीमा कंपनियों के निजीकरण और एलआईसी में सरकारी इक्विटी होल्डिंग में कमी की घोषित नीति को अगले पांच वर्षों में लागू करने की आवश्यकता है। सरकार के नियंत्रण में बचे चार बड़े सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए, उनके प्रबंधन और विनियमन में सुधार के लिए बैंक राष्ट्रीयकरण अधिनियम को कंपनी अधिनियम द्वारा प्रतिस्थापित करने की आवश्यकता है। ये नीतियां प्रतिस्पर्धा को बढ़ाएंगी और ब्याज अंतर को कम करने में मदद करेंगी।

अधिक जोखिम प्रबंधन उत्पादों की चरणबद्ध शुरूआत और बैंकों द्वारा उनमें निवेश पर नियंत्रण हटाने से गहन सुधार होगा। उदाहरण के लिए, विदेशी मुद्रा डेरिवेटिव बाजारों में सट्टा व्यापार पर प्रतिबंधों को कम किया जाना चाहिए ताकि एक मजबूत बाजार बनाने में मदद मिल सके। बॉन्ड बाजार, कमोडिटी बाजार, विदेशी मुद्रा बाजार और जोखिम प्रबंधन उत्पादों के बाजार वर्तमान में या तो बहुत कम अवधि के हैं या उनमें गहनता का अभाव है। इन्हें विदेशी निवेश और एक निश्चित मात्रा में सट्टा गतिविधि के लिए खोलने की आवश्यकता है, जो बाजार निर्माण के लिए आवश्यक है।

ईसीबी के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए डॉलर मूल्यवर्ग के बॉन्ड बाज़ार के निर्माण की आवश्यकता है। अंतर्राष्ट्रीय सूचकांकों में भारतीय बॉन्ड के शामिल होने से कॉर्पोरेट बॉन्ड बाज़ार का विस्तार करने का अवसर है। इसके लिए एक सॉवरेन यील्ड कर्व बनाने की आवश्यकता है, जिसके आधार पर कॉर्पोरेट बॉन्ड की कीमतें तय की जा सकें। ऐसा भारत सरकार द्वारा गारंटीकृत इंफ्रास्ट्रक्चर बॉन्ड या ग्रीन बॉन्ड के माध्यम से भी किया जा सकता है।

इन उपायों से ब्याज अंतर कम होगा और वर्ष 2035 तक पूर्ण पूंजी खाता परिवर्तनीयता का मार्ग प्रशस्त होगा।

10.3.1 एफडीआई प्रतिबंध

एक आम गलत धारणा है कि एफडीआई नीति बहुत प्रतिबंधात्मक है। यह बिलकुल असत्य है और दशकों से ऐसा ही है। वियतनाम को छोड़कर आसियान देशों की तुलना में भारत में कम प्रतिबंध हैं और यहां तक कि वियतनाम में भी वर्ष 2010 में भारत से ज्यादा प्रतिबंध थे ***(तालिका 18)***। मेक्सिको में भारत की तुलना में कुछ हद तक कम प्रतिबंध हैं, लेकिन पिछले दस वर्षों में यह अंतर कम हुआ है। हालाँकि, निवेश संधियों के प्रति दृष्टिकोण की फिर से जाँच करने की आवश्यकता है।

तालिका 18: एफडीआई प्रतिबंध सूचकांक - 2020 और 2010

OECD FDI restrictions index				
Country	**2020**	**rank**	**2010**	**rank**
Viet Nam	0.130	40	0.300	52
Mexico	0.188	47	0.211	47
India	**0.207**	48	**0.285**	**49**
Saudi Arabia	0.211	49	0.393	54
China (PRC)	0.214	50	0.436	56
Malaysia	0.257	52	0.290	50
Thailand	0.268	54	0.296	51
Indonesia	0.347	55	0.319	53
Philippines	0.374	56	0.417	55
Source: OECD				
Note: Rank is for countries which had data for both years				

10.3.2 बैंकिंग और ऋण

महामारी के दौरान, कई अपरंपरागत उपाय करने पड़े और प्रतिबंध लगाए गए, ताकि संकट को कम से कम नुकसान के साथ प्रबंधित किया जा सके। इनमें बैंक ऋण दरों और प्रक्रियाओं पर प्रतिबंध शामिल थे, इन्हें चरणबद्ध तरीके से हटाया जाना चाहिए और बैंकिंग के प्रगतिशील उदारीकरण की पिछली प्रवृत्ति को फिर से शुरू किया जाना चाहिए। वैधानिक चलनिधि अनुपात (एसएलआर), सीआरआर और अन्य अतिरिक्त आवश्यकताओं में कमी भी कम की जानी चाहिए क्योंकि हमने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के निजीकरण के माध्यम से अधिक प्रतिस्पर्धा शुरू की है।

10.4 आपूर्ति श्रृंखला क्रांति

वित्तीय संकट (2008) विवैश्वीकरण और महामारी (कोविड) के बाद के अवसरों से उत्पन्न चुनौतियों और अवसरों का सामना करने के लिए भारत को एक वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला नीति की आवश्यकता है: सभी स्थापित निर्यातकों को जीएसटी, सीमा शुल्क, नामित बैंक और आरबीआई से डिजिटल रूप से जोड़ा जाना चाहिए, ताकि विदेशी मुद्रा भुगतान/प्राप्तियां, निर्यात और आयात, निर्यात से जुड़े ऋण, जीएसटी सेट-ऑफ/रिफंड, आयात शुल्क सेट-ऑफ तुरंत दर्ज किए जा सकें और सभी के लिए उपलब्ध/दृश्यमान हों। इससे निर्यात की पूरी तरह से शून्य रेटिंग और 8 घंटे का जीएसटी ऑफसेट और अंतरराष्ट्रीय ब्याज दरों पर निर्यात उत्पादन के लिए पूर्ण ऋण प्रावधान सुनिश्चित किया जा सकता है।

एमएनसी आपूर्ति शृंखलाओं और घरेलू एमएसएमई दोनों के लिए महत्वपूर्ण आयात शुल्क कच्चे माल, घटकों, मध्यवर्ती वस्तुओं और उप-प्रणालियों पर हैं। अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के बीच अंतर्संबंधों को देखते हुए, [75]यह सुनिश्चित करना बेहद कठिन है कि कोई भी उद्योग/उप-क्षेत्र असुरक्षित (नकारात्मक प्रभावी संरक्षण का सामना करता है) न हो। सभी खनिजों, तेलों, विनिर्मित वस्तुओं पर

[75]इनपुट-आउटपुट तालिका (आईओ) का उपयोग आमतौर पर विभिन्न उद्योगों और उप-क्षेत्रों के बीच अंतर्संबंधों को दर्शाने और इन उद्योगों में आयात शुल्क की संरचना को देखते हुए प्रत्येक उद्योग के "प्रभावी संरक्षण" की गणना करने के लिए किया जाता है।

एक समान एड- वेलोरम टैरिफ दर यह सुनिश्चित कर सकती है कि एक भी उद्योग असुरक्षित न हो।[76]वैश्विक अनुभव और हमारे एशियाई प्रतिस्पर्धियों के अनुभव से पता चलता है कि 10% की एकसमान मूल्य-आधारित दर से युक्तिकरण और प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि होगी। इस दर को धीरे-धीरे घटाकर 5% किया जा सकता है।[77]

चीन द्वारा एकाधिकार प्राप्त वस्तुओं के आयात प्रतिस्थापन को बढ़ावा देने के लिए विनिर्मित वस्तुओं के लगभग 10% पर सीमित अवधि के लिए उच्च दरें हो सकती हैं। अतिरिक्त सुरक्षा को उत्पादन संबद्ध प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के तहत न्यूनतम कुशल पैमाने की प्राप्ति से जोड़ा जाना चाहिए, ताकि ऐसे संयंत्रों को अपने नए संयंत्रों में गड़बड़ियों को दूर करने और उच्च उत्पादन के अनुरूप अपनी खरीद और विपणन प्रणालियों में सुधार करने के लिए तीन वर्ष का समय मिल सके।

कृषि आयात-निर्यात नियंत्रण, मात्रात्मक प्रतिबंध (क्यूआर), आयात प्रशुल्क और निर्यात शुल्क में तदर्थ परिवर्तन, निर्यात बाजारों के लिए उत्पादन विकसित करने और विशिष्ट उत्पादों के आयात प्रतिस्थापन के जोखिम में वृद्धि करते हैं। हमें आयात शुल्क और निर्यात शुल्क की एक पारदर्शी, वस्तुतः स्वचालित प्रणाली की आवश्यकता है, जो अंतरराष्ट्रीय और घरेलू कीमतों के बीच अंतर से जुड़ी हो। किसानों और कृषि-उद्यमियों के लिए नीति और विनियामक जोखिम को कम करने तथा कृषि और संबद्ध उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए नियंत्रण और क्यूआर को ऐसी प्रणाली से प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए।

10.4.1 विनिर्माण आपूर्ति श्रृंखला

विनिर्माण क्षेत्र में निवेश और उन्नति में वृद्धि के लिए अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू परिस्थितियाँ परिपक्व हैं। घरेलू नीति और अवसंरचना में काफी सुधार हुआ है और वे हमारे एलएमआईसी प्रतिस्पर्धियों के बराबर हैं। उच्च आय वाले विकसित देशों (एचआईडीसी) के बीच जोखिम कम करने की वैश्विक इच्छा बढ़ रही है। 90-95% बहुराष्ट्रीय उद्यमों (एमएनई) के मुख्यालय इन देशों में हैं, और ये एमएनई एफडीआई, कौशल और आंतरिक व्यापार चैनलों के माध्यम से आपूर्ति श्रृंखलाओं का नेतृत्व और संचालन करते हैं। 2/3 मर्चेन्डाइज ट्रेड उनके माध्यम से होता है। इन एमएनई के लिए उदारता दिखाकर और चीन के विनिर्माण एकाधिकार से निपटने के लिए एक संयुक्त दृष्टिकोण विकसित करने में उनके गृह देशों के साथ सहयोग करके आपूर्ति श्रृंखलाओं को भारत में स्थानांतरित किया जा सकता है और विनिर्माण विकास को गति दी जा सकती है।

पीआरसी से विनिर्मित वस्तुओं के आयात पर निर्भरता कम करने हेतु व्यापार नीति विकसित करने के लिए एक उच्च स्तरीय समिति की आवश्यकता है। भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते के आधार पर यूएसए और यूरोपियन संघ के साथ बहुपक्षीय विनिर्माण व्यापार समझौते के माध्यम से

[76]कपड़ा क्षेत्र में दर्जनों विशिष्ट दरें हैं जो जटिलता और भ्रष्टाचार का स्रोत हैं, और जो कपड़ा के ईमानदार, वास्तविक निर्यातकों को हतोत्साहित करती हैं। उद्योग में उपयोग किए जाने वाले कच्चे कपास, रेशम और अन्य संयंत्र सामग्री पर भी समान दर होनी चाहिए, लेकिन इसे धीरे-धीरे लागू करने की आवश्यकता हो सकती है क्योंकि वर्तमान में उनकी दरें बहुत अधिक हैं।

[77]इससे हमारी दरें आसियान देशों में प्रचलित दरों के करीब हो जाएंगी। इस प्रणाली में दो समस्याएं हैं: (ए) आईटी 1 समझौते द्वारा बनाई गई उलटी शुल्क संरचना अभी भी अनसुलझी है। (बी) मध्यम आय वाले देशों के साथ एफटीए ने लकड़ी के गूदे से बने फाइबर जैसे कुछ वस्तुओं में उलटी शुल्क और असुरक्षा पैदा कर दी है।

विनिर्माण क्षेत्र को जोखिम मुक्त करने की कार्यनीति! चूंकि अमेरिका की आंतरिक राजनीति वर्तमान में नए एफटीए के पक्ष में नहीं है, इसलिए हमें विनिर्माण आपूर्ति श्रृंखलाओं पर सख्ती से ध्यान केंद्रित करने वाला एक वैकल्पिक तंत्र खोजना होगा। यूएसएमसीए एफटीए का विनिर्माण हिस्सा, विशेष रूप से इसका संचयी मूल नियम, एक मॉडल के रूप में काम कर सकता है। यह आपूर्ति श्रृंखलाओं को विश्वसनीय आर्थिक भागीदारों के पास ले जाकर जोखिम मुक्त करने के लिए यूएसए-भारत-ईयू समझौते का आधार भी बन सकता है।

मौजूदा टैरिफ नीति में पाकिस्तान से आयात पर 200% तक कर लगाने का प्रावधान है। चीन से आयात के लिए भी ऐसा ही प्रावधान (अगले बजट में) किया जा सकता है। चीन से आयात किए जाने वाले सभी विनिर्मित सामानों पर 50% का आयात शुल्क लगाया जाना चाहिए, सिवाय उन मध्यवर्ती वस्तुओं के जिनका कोई वैकल्पिक स्रोत उपलब्ध नहीं है। टैरिफ चोरी को रोकने के लिए, दूसरे देशों के माध्यम से आयात करके, चीन के भागीदारों से आयात पर चीन में मूल्य वर्धित 100% का अधिभार लगाया जाना चाहिए। चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, चीन से आयातित वस्तुओं के विकल्प के रूप में भारतीय या विदेशी फर्मों को चुनिंदा, समयबद्ध छूट दी जा सकती है।

हमें चीन से विनिर्मित वस्तुओं के आयात पर संयुक्त रूप से 50-60% टैरिफ लगाने के लिए अमेरिका और यूरोपीय संघ के साथ तुरंत चर्चा शुरू करनी चाहिए, साथ ही अमेरिका, यूरोपीय संघ और भारत में संचयी मूल्य वर्धन (और चीन में या अन्य देशों में चीनी फर्मों द्वारा अधिकतम 10% वीए) के आधार पर एक-दूसरे से समान वस्तुओं पर टैरिफ को समाप्त करना चाहिए।

अगले पांच वर्षों के भीतर भारत के प्रत्येक बड़े राज्य में कम से कम *एक एंकर एमएनसी/एमएनई* को आकर्षित करने का लक्ष्य रखना चाहिए (अर्थात, कम से कम 13 एमएनई/एमएनसी)। चूंकि एमएनई के मुख्यालय का एक बड़ा प्रतिशत यूएसए और यूरोपियन संघ+ में अवस्थित है, हमें इन अर्थव्यवस्थाओं में विशेष प्रयास करने होंगे। केंद्र सरकार और राज्यों दोनों को उद्योग और वाणिज्य मंत्रालय में एक आपूर्ति श्रृंखला विभाग स्थापित करना चाहिए। इस विभाग का प्राथमिक लक्ष्य उच्च आय वाले विकसित देशों से एंकर निवेशकों को आकर्षित करना और यह सुनिश्चित करना होगा कि वे निर्णय के एक वर्ष के भीतर उत्पादन शुरू कर दें। इसलिए इस विभाग के पास भूमि खरीदने और स्थानांतरित करने, दूरसंचार, सड़क, बिजली, पानी और सीवेज कनेक्टिविटी प्रदान करने और परियोजना के लिए आवश्यक श्रमिकों के कौशल को सुविधाजनक बनाने का अधिकार होना चाहिए। इसका दूसरा लक्ष्य अगले 3 वर्षों के भीतर एंकर निवेशकों को आपूर्तिकर्ताओं में स्थानांतरित करने की सुविधा प्रदान करना होगा।[78]

उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश जैसे तट से दूर स्थित बड़े राज्यों को बहुराष्ट्रीय कंपनियों/एम.एन.ई. को आकर्षित करने के लिए विशेष व्यवस्था की आवश्यकता हो सकती है। इन राज्यों में विशेष विनिर्माण क्षेत्र (एस.एम.जेड.) स्थापित किए जा सकते हैं, जहाँ सभी आर्थिक कानूनों, नियमों, विनियमों, प्रक्रियाओं का 100% ऑनलाइन डिजिटल प्रशासन होगा। निजी कंपनियों को इन क्षेत्रों में पंजीकृत कंपनियों की समय-समय पर ऑडिटिंग करने के लिए प्रमाणित किया जाएगा।

[78] प्रदर्शन का आकलन चीन से आयात के प्रतिस्थापन, अतिरिक्त निर्यात और सृजित नौकरियों के परिमाण के आधार पर किया जाएगा।

विनिर्माण कंपनियों के साथ एक दशक तक राज्य या भारत सरकार की नौकरशाही का कोई हस्तक्षेप नहीं होगा, ताकि वे अपने श्रमिकों के कौशल निर्माण, आपूर्ति श्रृंखलाओं के विकास और अधिक अनुकूल स्थानों पर स्थित फर्मों के साथ प्रतिस्पर्धी बनने पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

पूर्वव्यापी कराधान लागू होने से विदेशी निवेशकों के साथ कई विवाद उत्पन्न हुए। इनका निपटारा स्वदेश के साथ द्विपक्षीय निवेश संधियों (बीआईटी) में सहमत प्रक्रियाओं के अंतर्गत किया गया। प्रतिकूल निर्णयों के कारण सरकार को नवीनीकरण का समय आने पर बहुत-सी बीआईटी से हटना पड़ा। इससे एफडीआई में पर्याप्त गिरावट आई है; यदि हमें जोखिम कम करने की इच्छा रखने वाले एमएनई का सबसे बड़ा गंतव्य बनना है, जो चीन से भारत में अपनी निर्यात-उन्मुख आपूर्ति श्रृंखला का एक हिस्सा स्थानांतरित कर रहे हैं, तो यह एक ऐसी स्थिति है जिसका तत्काल निवारण करने की आवश्यकता है। विदेशी फर्मों को अंतर्राष्ट्रीय मध्यस्थता से पहले संपूर्ण भारतीय कानूनी प्रणाली से गुजरने के लिए मजबूर करने के लिए बीआईटी को फिर से तैयार करना निर्यातोन्मुख, श्रम गहन, विनिर्माण, आपूर्ति श्रृंखलाओं के लिए एक हतोत्साहक हो सकता है। अगले 15 वर्षों के लिए हमें उच्च आय वाले विकसित देशों (जैसे यूरोपियन संघ, यूनाइटेड किंगडम), जो अधिकांश वैश्विक एफडीआई का स्रोत हैं, के साथ आसियान, दक्षिण कोरियाई, ताइवान और चीन के बीआईटी में शामिल स्वीकृत कानूनी मानदंडों को अपनाना चाहिए।

इसके साथ ही, पीएलआई नीति को पीआरसी (चीन) से भारत में कार्यनीतिक आपूर्ति श्रृंखलाओं को आकर्षित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, विशेष रूप से रक्षा, दोहरे उपयोग की वस्तुओं, दूरसंचार, एडीपी और इलेक्ट्रॉनिक्स और आईओटी से संबंधित, जिनका उपयोग भारत और उसके पश्चिमी भागीदारों की संप्रभुता और सुरक्षा को कमजोर करने के लिए किया जा सकता है। पीएलआई की समीक्षा और परिशोधन एक सतत प्रक्रिया है।

10.4.2 एसएमई और स्टार्ट-अप

कर सुधार, कौशल-निर्माण और सूचना-ज्ञान मंच यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक हैं कि एसएमई आपूर्ति श्रृंखलाओं में भाग लेने, समय पर निर्यात गुणवत्ता वाले उत्पादों का उत्पादन करने और रोजगार सृजन पर ध्यान केंद्रित करने के लिए सुसज्जित हों। स्टार्ट-अप को एसएमई के आधुनिक संस्करण के रूप में देखा जा सकता है। वे 21वीं सदी में नवाचार को आगे बढ़ाने और उच्च गुणवत्ता वाली नौकरियां सृजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहे हैं। दुर्भाग्य से, नौकरशाही प्रणाली अभी भी उन्हें संदेह की दृष्टि से देखती है। स्टार्ट-अप को समान अवसर प्रदान किया जाना चाहिए।

स्टार्ट-अप के लिए कर पूर्वाग्रह को समाप्त किया जाना चाहिए। अवास्तविक पूंजीगत लाभ पर कर को पूरी तरह से समाप्त किया जाना चाहिए, जिसे वर्ष 2011 के आसपास शुरू किया गया था। वित्तीय और अन्य विनियमों को स्टार्ट-अप विरोधी पूर्वाग्रहों से मुक्त किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, कुछ वित्तीय नियामक स्टार्ट-अप के प्रबंधन और स्वामित्व संरचना पर अतिरिक्त आवश्यकताएं अधिरोपित करते हैं, जो कंपनियों पर लागू नहीं होती हैं। इन्हें समाप्त किया जाना चाहिए।

डीप टेक स्टार्ट-अप तीन चरणों से गुजरते हैं: (i) आइडिया से लेकर "प्रूफ़ ऑफ़ कॉन्सेप्ट" तक, (ii) प्रूफ़ ऑफ़ कॉन्सेप्ट से लेकर प्रोटोटाइप तक, और (iii) प्रोटोटाइप से लेकर मार्केटेबल प्रोडक्ट तक। प्रत्येक चरण जोखिम और वित्त पोषण की आवश्यकताओं के संबंध में अलग-अलग होता है। वित्तीय और प्रबंधकीय सहायता को अलग-अलग तरीके से समझने और संबोधित करने की आवश्यकता है।

10.5 शिक्षा और कौशल-निर्माण

प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा पिरामिड का आधार है। जो व्यक्ति दूसरों को पढ़, लिख और समझ नहीं सकता, वह आधुनिक अर्थव्यवस्था में काम नहीं कर सकता। साक्षरता के बिना समावेशी विकास, यदि असंभव नहीं माना जाता है, कठिन है। अगले पाँच वर्षों में 100% कार्यात्मक साक्षरता (एफएलएन) प्रत्येक भारतीय राज्य का लक्ष्य होना चाहिए। हम प्राथमिक, दसवीं और बाहरवीं पास स्तरों पर राज्यों के प्रदर्शन को मापते हैं, जो कि प्रति व्यक्ति एनएसडीपी, एक (शक्ति समीकरण) प्रतिगमन के आधार पर, के स्तर पर अपेक्षित हो सकता है। इस प्रदर्शन अंतर को फिर उन लोगों की संख्या में बदल दिया जाता है जिनके शिक्षा स्तर को बढ़ाने की आवश्यकता है (***तालिका 19)***।

तालिका 19: प्रति व्यक्ति एनएसडीपी के सापेक्ष शिक्षा प्रदर्शन में अंतर वाले राज्य

Gap in Primary, Tenth & school pass (% of pop, > 6 yrs & 1000s)							
State/UT	PC NSDP	Primary (≥8 yrs)		Tenth Pass (≥10yrs)		School Pass (≥12)	
	2020-21	Gap(%)	Nos(ths)	Gap(%)	Nos(ths)	Gap(%)	Nos(ths)
Bihar	26820	-1.8	-1891	1.7	1864	0.6	591
Uttar Pradesh	39735	4.9	9967	5.5	11044	5.6	11282
Jharkhand	51464	-2.4	-815	-0.9	-302	-1.2	-397
Madhya Pradesh	56320	0.2	154	-3.5	-2584	-1.6	-1205
Assam	61304	-1.0	-310	-5.8	-1820	-3.7	-1148
West Bengal	63562	-1.6	-1406	-2.7	-2444	-1.8	-1656
Jammu & Kashmi	65444	11.4	1410	11.1	1371	7.9	976
Rajasthan	73140	-2.3	-1586	-1.7	-1216	-0.4	-299
Chhattisgarh	73259	-0.4	-92	-2.8	-737	-1.1	-299
Odisha	73357	-4.2	-1761	-6.2	-2561	-5.3	-2197
Andhra Pradesh	105880	-10.4	-5053	-4.1	-2013	-4.3	-2113
Punjab	113025	4.4	1238	6.2	1742	3.0	853
Maharashtra	127970	2.7	3132	2.6	2961	2.3	2650
Kerala	132531	13.8	4524	12.8	4197	6.3	2050
Himachal Pradesh	134111	7.6	522	9.3	633	6.0	407
Uttarakhand	137987	1.9	194	0.1	10	2.8	291
Telangana	140703	-9.2	-3199	-1.8	-640	-2.1	-731
Tamil Nadu	143482	1.7	1203	0.8	566	1.7	1226
Karnataka	149030	-5.7	-3477	-1.6	-958	-3.4	-2098
Haryana	155756	0.0	7	-0.3	-88	0.4	97
Gujarat	156285	-6.7	-4202	-10.6	-6646	-7.4	-4665
NCT Delhi	234569	4.1	779	2.4	446	4.8	899
Source: Authors calculation based on NFHS 5 (2019-21) & RBI data.							
Note: Gap = Expected - Actual; Expected based on regression on Pcnsdp							

इन राज्यों (लाल रंग में) को शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार के लिए अपनी संपूर्ण स्कूली शिक्षा में सुधार हेतु विशेष प्रयास करने की आवश्यकता है, जिसमें दीक्षा कार्यक्रम जैसे डिजिटल शिक्षण ऐप को अपनाना भी शामिल है।[79]

केंद्र सरकार उत्कृष्ट दीक्षा कार्यक्रम को *विशेषज्ञ एआई डिजिटल शिक्षक, ई-आचार्य में बदलकर मदद कर सकती है*, जो प्री-प्राइमरी से लेकर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर तक शिक्षकों और छात्रों को पढ़ा सकता है। इसके लिए केंद्र और राज्य सरकारों, एनपीओ और निजी क्षेत्र के बीच उपयुक्त साझेदारी की आवश्यकता होगी। राज्यों को यह सुनिश्चित करना होगा कि दीक्षा और ई- कौटिल्य को राज्य की भाषा और परिवेश के अनुसार अनुकूलित किया जाए और राज्य के प्रत्येक प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के साथ 100% डिजिटल कनेक्टिविटी हो।

पिछले दो दशकों के प्रयासों के बावजूद, युवाओं द्वारा अर्जित योग्यता और कौशल तथा नियोक्ताओं द्वारा मांगे जाने वाले नौकरी कौशल के बीच बहुत बड़ा अंतर है। इसके अलावा सूचना अंतराल और लुप्त बाजार भी हैं। हमें कौशल उद्योग के विकास और विनियमन के लिए एक व्यापक नीति की आवश्यकता है। इस नीति का उद्देश्य सभी हितधारकों के बीच सूचना प्रवाह को सुगम बनाना, उद्योग के विभिन्न खंडों के एकीकरण को बढ़ावा देकर विखंडन को कम करना और ऐसे बाजार बनाना होना चाहिए जहां वे मौजूद नहीं हैं या अल्पविकसित हैं। उद्योग, कौशल उत्पादक, गैर सरकारी संगठनों और उद्योग में शामिल सरकारी संगठनों जैसे सभी हितधारकों के परामर्श से ऐसी नीति विकसित करने के लिए एक उच्च स्तरीय संचालन समूह की स्थापना की जानी चाहिए।

कौशल-निर्माण और रोजगार उद्योग के विभिन्न भागों में निजी कंपनियां, एसएमई, एनजीओ और सरकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रही हैं। कंपनियों को अपने सीएसआर फंड का उपयोग अपने उद्योग से संबंधित कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए करने की अनुमति दी जानी चाहिए और उन्हें ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। "भारत के लिए कौशल-निर्माण, विश्व के लिए कौशल-निर्माण" की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सभी हितधारकों की भागीदारी के साथ एक *कौशल-निर्माण उद्योग परिषद की* स्थापना की जानी चाहिए। प्रशिक्षण और कौशल-निर्माण संस्थानों के छात्रों को सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों से ऋण के लिए पात्र होना चाहिए, और इन संस्थानों में विदेशी आवेदकों को छात्र या *प्रशिक्षु वीजा* के लिए पात्र होना चाहिए। जब तक बुनियादी आवश्यकताओं के लिए कम ब्रैकेट हैं, तब तक नौकरी कौशल-निर्माण और प्रशिक्षण पर 18% जीएसटी लगाने का तर्क प्रश्नाधीन है।

कौशल-निर्माण और रोजगार से जुड़े कई मंत्रालय, विभाग और एजेंसियां हैं। उनके सामर्थ्य और उपलब्धियों तथा कमजोरियों और कमियों की एकीकृत समीक्षा की जरूरत है। कौशल के उन क्षेत्रों में भी समीक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, जो पिछड़ रहे हैं। चूंकि नीति आयोग तटस्थ दृष्टिकोण अपनाने में सक्षम है, इसलिए कौशल-निर्माण और रोजगार से जुड़े सदस्यों के अधीन एक संचालन समूह का गठन किया जाना चाहिए।

[79]दिलचस्प बात यह है कि उत्तर प्रदेश (यूपी), जिसकी प्रति व्यक्ति एनएसडीपी 39,735 रुपये है, अर्थात बिहार और झारखंड के बीच, शिक्षा के सभी तीन स्तरों में अपनी प्रति व्यक्ति एनएसडीपी से अपेक्षा से बेहतर प्रदर्शन कर रहा है।

समीक्षा लंबित होने तक, एकीकृत ई-श्रम - स्किल इंडिया प्लेटफॉर्म को दो व्यापक आयामों (i) राष्ट्रीय और राज्य, (ii) रोजगार के लिए मॉड्यूल (नौकरी चाहने वाले और प्रदाता, मध्यवर्ती), कौशल-निर्माण (कौशल, मानक और प्रमाणन के आपूर्तिकर्ता और उपयोगकर्ता) और सभी संबंधित बाजारों में मॉड्यूलर संरचना के साथ क्लाउड पर रखा जाना चाहिए। सभी मॉड्यूल को उपयोगकर्ता के लिए कनेक्ट और निर्बाध रूप से एकीकृत किया जाना चाहिए। निजी क्षेत्र के मध्यवर्तियों और स्वास्थ्य, शिक्षा एवं अन्य सामाजिक क्षेत्रों में गैर सरकारी संगठनों के साथ भी संपर्क प्रदान किया जाना चाहिए। अंतिम लक्ष्य एक *एआई संचालित विशेषज्ञ प्रणाली, ई-गुरु* बनाना होना चाहिए ताकि प्रत्येक व्यक्ति को उसकी क्षमताओं और सीमाओं के अनुसार उपयुक्त नौकरी कौशल प्रदान किया जा सके।

पहले इस्तेमाल किए जाने वाले उत्पादों (जैसे, बीड़ी) के अप्रचलित होने और ग्रामीण व्यावसायिक कौशल (जैसे, बढ़ई, इलेक्ट्रीशियन, प्लंबर) के अप्रचलित होने की संभावना बढ़ रही है। अप्रचलित ग्रामीण श्रमिकों को फिर से कुशल बनाने के लिए एक मिशन शुरू किया जा सकता है। विश्वकर्मा योजना घरेलू उद्यमों के लिए बुनियादी प्रबंधन/विपणन/खरीद में शिल्पकार की पत्नी या बेटी को प्रशिक्षित करने के लिए एक घटक शुरू कर सकती है।

10.6 शहरी विकास

शहरीकरण और शहरी विकास अगले कुछ दशकों में विकास के चालकों में से एक होंगे। सभी शहरों और कस्बों की सीवेज और जलनिकासी प्रणालियों को आधुनिक बनाने की आवश्यकता होगी और शहरों में बिजली, पाइप्ड गैस और फाइबर ऑप्टिक्स केबल जैसी यूटिलिटीज को ले जाने के लिए भूमिगत नलिकाओं की एक प्रणाली बनाई जानी चाहिए। शहरों और बड़े कस्बों में मास ट्रांजिट सिस्टम का निर्माण करना होगा। नगरपालिका अधिनियम के बावजूद, शहरों की योजना, विकास और संचालन राज्य सरकार की एजेंसियों और कई शहर प्रशासन के बीच अत्यधिक विखंडित है। शहरों और कस्बों के आधुनिकीकरण और विकास के लिए एक एकल राजनीतिक-प्रशासनिक प्राधिकरण की आवश्यकता होती है, जिसमें नगर नियोजन और नीति के सभी तत्व और शहर विशिष्ट कराधान (जैसे, भूमि और अचल संपत्ति) और व्यय इस प्राधिकरण के अधीन हों। इसे सुनिश्चित करने के लिए नगर पालिका और पंचायती राज अधिनियमों में संशोधन किया जाना चाहिए।

जिन नीतिगत उपायों को अपनाने/प्रचारित करने की आवश्यकता है, उनमें शहरी अवसंरचना के लिए भूमि पूलिंग शामिल है; जो उन लोगों के लिए त्वरित और उचित है जिनकी भूमि अधिग्रहित की जाती है। भूमि उपयोग कानून, नियम और प्रक्रिया, आवश्यक अवसंरचना, भूमिगत (सीवेज, जल निकासी, तारों, पाइपों के लिए नलिका) और ओवरग्राउंड (पार्किंग, मेट्रो, बस स्टेशनों के लिए अंतिम मील कनेक्टिविटी) दोनों की उपलब्धता को सख्ती से सुनिश्चित करते हुए, अधिक घनत्व की अनुमति देते हैं। किराया नियंत्रण कानूनों को समाप्त करना और किराये के आवास के निर्माण की सुविधा प्रदान करना और विभिन्न समूहों और अवधि के लिए ऐसे आवास को किराए पर देना। मॉडल किराया नियंत्रण अधिनियम (2021) में एक टेम्पलेट का प्रावधान किया गया है जिसे राज्य स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार संशोधित किया जा सकता है। सभी उपलब्ध किराये के अपार्टमेंट को पंजीकृत करने और आपूर्ति (ई-मार्केट) के साथ मांग का मिलान करने के लिए एक ऑनलाइन पोर्टल की स्थापना की जानी चाहिए। अवसंरचना के लिए पीपीपी ढांचे, जिसकी कमियों और विफलताओं की

पहले ही वित्त मंत्रालय की एक समिति द्वारा समीक्षा की जा चुकी है, जिसने समाधान भी सुझाए हैं, को नया रूप देने की आवश्यकता है।

आधुनिक शहरों में जन परिवहन के लिए डिजिटल सूचना प्रणाली और सॉफ्टवेयर आधारित नियोजन प्रणाली की आवश्यकता होती है। छोटे निजी प्लेयरों और दफ्तरशाही सरकारी संगठनों के पास ऐसा करने की क्षमता या पूंजी नहीं है। राज्यों को कुछ संगठित निजी कंपनियों को शहरों और बड़े कस्बों में बस प्रणाली चलाने की अनुमति देनी चाहिए। यह शहरों के समूहों द्वारा आयोजित बस मार्गों की राज्यव्यापी नीलामी के माध्यम से किया जा सकता है, जिसमें कंपनियाँ या तो शहरों में आधुनिक बस प्रणाली शुरू करने या वंचित उपयोगकर्ताओं को प्रदान की जाने वाली सब्सिडी पर बोली लगा सकती हैं। सरकार, निजी क्षेत्र और गैर सरकारी संगठनों के सहयोग से मेट्रो/बस स्टेशनों से अंतिम मील कनेक्टिविटी की एक प्रणाली भी तैयार की जानी चाहिए।

सभी शहरी झुग्गी बस्तियों को किराये के अपार्टमेंट परिसरों में परिवर्तित करें। मौजूदा नीतियाँ विफल हो गई हैं क्योंकि राज्य सरकारें हमेशा रूपांतरण से अधिकतम राजस्व निकालने की कोशिश कर रही हैं। उन्हें इन परिसरों के बनने के बाद मिलने वाले संपत्ति करों पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए। निजी डेवलपर्स और झुग्गी भूमि पर अवैध कब्जा करने वालों के लिए इस रूपांतरण और पुनर्निर्माण को शीघ्रता से करने के लिए सहमत होने/अनुमति देने के लिए पर्याप्त प्रोत्साहन होना चाहिए। ओडिशा लिवेबल हैबिटेट मिशन या *जागा मिशन (2018)* और पूर्ववर्ती झुग्गीवासियों के भूमि अधिकार कानून अन्य राज्यों और शहरों के लिए मॉडल के रूप में काम कर सकते हैं। इसे उच्च श्रेणी की शहरी अवसंरचना को विकसित करने के अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए।[80]

तीन आयामों - (क) क्षेत्रीय, शहर/कस्बा, (ख) पारंपरिक योजना (परिवहन, यूटिलिटीज) और आर्थिक गतिविधि। (ग) प्लेटफॉर्म, (i) योजना सेवाओं की मांग-आपूर्ति, (ii) योजना कौशल का निर्माण और कौशल की मांग-आपूर्ति का मिलान, (iii) शहरीकरण के महत्वपूर्ण तत्वों (उदाहरण के लिए, वित्त, प्रशासन) के लिए सूचना-ज्ञान मंच, (iv) शहरी सार्वजनिक और अर्ध-सार्वजनिक वस्तुओं (सीवेज और जल उपचार संयंत्र, ठोस अपशिष्ट संग्रह, निपटान और रीसाइक्लिंग सेवाएं) की मांग और आपूर्ति - में क्लाउड आधारित मॉड्यूलर प्रणाली।

कस्बों और शहरों में मौजूदा सीवेज सिस्टम के आधुनिकीकरण के अलावा, मिशन सीवेज ट्रीटमेंट और रीसाइकिलिंग सहित पूरे चक्र को कवर कर सकता है। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि सेप्टिक टैंकों से एकत्र सीवेज को खुले मैदानों, जल नालियों या जल निकायों में न डाला जाए, क्योंकि इससे समस्या का समाधान किए बिना ही समस्या एक स्थान से दूसरे स्थान पर चली जाती है। इसी तरह खुले सीवेज नाले जो मानसून या भारी वर्षा में भर जाते हैं और ओवरफ्लो हो जाते हैं, खुले में शौच के उन्मूलन और उसी स्थान पर 95% शौचालय की उपलब्धता के लाभों पर अधिभावी हो सकते हैं।

नई सीवर लाइनों की योजना बनाना, खोदना और बिछाना, साथ ही साथ वर्षा जल निकासी नालियों को अद्यतन करना, सड़क की सतह से जल निकासी के लिए सड़क डिजाइन, तथा अच्छी सड़क सतह

[80]पृथक वर्षा जल नालियों, सीवेज पाइपों और सार्वजनिक शौचालयों के साथ एकीकृत यूटिलिटीज तारों, केबलों और पाइपों के लिए भूमिगत नालियों के साथ सड़क और फुटपाथ, बच्चों के खेलने के लिए हरित स्थान और सभी के लिए मनोरंजन क्षेत्र, और सामुदायिक केंद्र।

को बनाए रखने के लिए यूटिलिटीज (पानी की पाइप, बिजली के तार, दूरसंचार/फाइबर-ऑप्टिक केबल) के लिए आधुनिक, भूमिगत नलिकाओं का निर्माण करना शामिल होना चाहिए।

10.7 भूमि एवं रियल एस्टेट

कुशल भूमि और रियल एस्टेट बाजारों के लिए भू-स्वामित्व के सटीक रिकॉर्ड की आवश्यकता होती है। ऐसे रिकॉर्ड की कमी से व्यक्तिगत आय और जीडीपी वृद्धि बढ़ाने में रियल एस्टेट द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका सीमित हो जाती है। डिजिटल इंडिया लैंड रिकॉर्ड्स आधुनिकीकरण कार्यक्रम कैडस्ट्रल सर्वेक्षणों के साथ-साथ उद्योग के आधुनिकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। भूमि उपयोग परिवर्तन में अधिक लचीलापन, सभी हितधारकों की भागीदारी के लिए संस्थागत संरचना और भूमि उपयोग में परिवर्तन के लिए त्वरित प्रक्रिया प्रदान करने के लिए शहरी भूमि-उपयोग नियोजन का आधुनिकीकरण किया जाना चाहिए। भूमि और रियल एस्टेट के किराए, पट्टे, बिक्री और खरीद के लिए नियम, प्रक्रिया और प्रणालियों को सुचारू और भ्रष्टाचार मुक्त बनाया जाना चाहिए। रियल एस्टेट विनियमन, प्रक्रियाओं और मुकदमेबाजी की गति से संबंधित को छोड़कर भारत के ईज ऑफ डूइंग संकेतकों में हर उप-श्रेणी में सुधार हुआ है, मुख्यतः इसलिए क्योंकि यह राज्य का विषय है। केंद्र सरकार मॉडल कानून और प्रणालियों को बनाने और लागू करने और उन्हें अपने नियंत्रण वाले संघ राज्य क्षेत्रों और विशेष निर्यात क्षेत्रों में लागू करने की पहल कर सकती है।

10.8 कृषि और ग्रामीण

कृषि क्षेत्र में सबसे अधिक सुधार नहीं हुआ है। ऐसा ज्ञान की कमी के कारण नहीं है। सही नीतिगत समाधान दशकों से ज्ञात हैं। भारत सरकार ने पहली बार ग्रामीण भूमि और कृषि व्यापार कानूनों में सुधार की पहल की है, जिसने विविधीकरण, उत्पादकता और लाभदायक विकास को बाधित किया है। इन प्रयासों को नहीं छोड़ा जाना चाहिए।

विशेष रूप से कौशल आयाम और हर राजमार्ग के 10 किलोमीटर के भीतर तेजी से बढ़ते विकास और ग्रामीण क्षेत्रों के रूप में वर्गीकृत "जनगणना शहरों" को ध्यान में रखते हुए गैर-कृषि रोजगार पर भी अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। आवश्यक सुधारों में - (क) आवश्यक वस्तु अधिनियम (ईसीए) को समाप्त करना या ईसीए (संशोधन अधिनियम) को फिर से लागू करना, (ख) कृषि उपज विपणन अधिनियम (एपीएमसी) को समाप्त करना या किसान उपज, व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सुविधा) अधिनियम को फिर से लागू करना, (ग) उचित रूप से संशोधित, "किसान (सशक्तिकरण और संरक्षण) मूल्य आश्वासन और कृषि सेवा अधिनियम पर समझौता" को फिर से लागू करने पर विचार करना। (घ) सभी कृषि वस्तुओं पर वायदा, विकल्प और गोदाम रसीदों को नियंत्रण मुक्त करना - शामिल हैं।

कीटनाशकों, उर्वरकों, पानी और बिजली तथा पानी की अधिक खपत वाली फसलों पर दी जाने वाली सब्सिडी के कारण देश के कई क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति, भूमि और वायु प्रदूषित हो रही है तथा भूमिगत जल की कमी हो रही है। इन सब्सिडी के नकारात्मक प्रभावों (बाह्य प्रभाव/सहवर्ती क्षति) का अनुमान लगाने और उनका मूल्यांकन करने के लिए साहित्य की व्यापक समीक्षा की आवश्यकता है।

इस उद्देश्य के लिए एक कार्य समूह का गठन किया जा सकता है। वही समूह सभी सब्सिडी को एक साथ मिलाकर किसानों को सीधे नकद हस्तांतरण के रूप में वापस देने से होने वाले लाभों का भी मूल्यांकन कर सकता है।

सभी प्राथमिक विद्यालयों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, राज्य सरकार के कार्यालयों को इंटरनेट डेटा कनेक्टिविटी (24x7) प्रदान की जानी चाहिए। यह आदर्श रूप से फाइबर ऑप्टिक केबल के माध्यम से होना चाहिए जिसे 24x7 एक्सेस किया जा सकता है। इसे सभी गांवों और बस्तियों (100%) को फाइबर ऑप्टिक या सैटेलाइट डेटा कनेक्शन के माध्यम से भी प्रदान किया जाना चाहिए। स्पेक्ट्रम नीलामी के लिए आरक्षित मूल्य सभी ग्रामीण क्षेत्रों के लिए शून्य होना चाहिए, क्योंकि स्पेक्ट्रम की आपूर्ति स्पेक्ट्रम की मांग से अधिक है। सामाजिक नवाचार को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय स्टार्ट-अप उद्यमियों को भौगोलिक रूप से प्रतिबंधित लाइसेंस दिए जा सकते हैं। यूनिवर्सल कनेक्टिविटी फंड को हर गांव में अंतिम मील कनेक्टिविटी सुनिश्चित करनी चाहिए।

कृषि, संबंधित कौशल, संबंधित सेवाओं और गैर-कृषि नौकरी कौशल-निर्माण के लिए क्लाउड आधारित मॉड्यूलर प्लेटफॉर्म। यह दो आयामों अर्थात् (क) राष्ट्रीय, राज्य; (ख) प्लेटफॉर्म, (i) इनपुट और आउटपुट की मांग-आपूर्ति, (ii) कौशल का निर्माण और कौशल की मांग-आपूर्ति का मिलान, (iii) सूचना - ज्ञान प्लेटफॉर्म: अनुसंधान एवं विकास, विस्तार, (iv) कृषि प्रसंस्करण, जिसमें कौशल और संबंधित सेवाएं शामिल हैं - के साथ क्लाउड आधारित होगा।

उत्तर-पश्चिम भारत (गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब) में भूजल संसाधन कम हैं और तेजी से घट रहे हैं। [81]पश्चिमी और पूर्वी घाटों के बीच दक्कन पठार के कई क्षेत्र जल संकटग्रस्त हैं। उद्योग, वाणिज्य और चीनी, चावल और गेहूं जैसी जल गहन फसलों द्वारा जल उपयोग को देश के जल संकटग्रस्त क्षेत्रों में इसकी कमी के मूल्य को दर्शाने के लिए चार्ज किया जाना चाहिए। जुटाए गए धन का उपयोग जल संचयन, जल निकायों की बहाली और भूजल पुनर्भरण के लिए किया जा सकता है।

10.9 परिवहन और ऊर्जा

उत्पादकों, उपयोगकर्ताओं और आम जनता को उच्च गुणवत्ता वाली अवसंरचना प्रदान करने में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। भारत की समग्र एलपीआई रैंक और उप संकेतकों में रैंक की विश्व बैंक रैंकिंग यह दर्शाती है, जिसमें भारत 2023 में फिलीपींस, वियतनाम, इंडोनेशिया और मैक्सिको से ऊपर है। सीमा शुल्क और अवसंरचना में कुछ कमज़ोरी बनी हुई है, हालांकि बंदरगाहों के टर्नअराउंड समय में अविश्वसनीय सुधार हुआ है (***तालिका 20***)।

[81]मानचित्र https://www.wri.org/insights/nasa-satellite-data-help-show-where-groundwater-and-where-it-isnt,"उपग्रह गुरुत्वाकर्षण माप से उत्तर-पश्चिम भारत में दीर्घकालिक भूजल भिन्नता," चैंग, ली, झांग और नी, मई 2014, https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S0921818114000526 ।

तालिका 20: लॉजिस्टिक्स प्रदर्शन तथा बंदरगाह एवं शिपिंग

World Bank Logistcs performance index							
2023	Malaysia	Thailand	India	Philippines	Vietnam	Indonesia	Mexico
LPI Rank	26	34	38	43	43	61	66
LPI Score	3.6	3.5	3.4	3.3	3.3	3.0	2.9
Customs Rank	31	31	47	59	43	59	84
Customs Score	3.3	3.3	3.0	2.8	3.1	2.8	2.5
Infrastructure Rank	30	25	47	47	47	59	63
Infrastructure Score	3.6	3.7	3.2	3.2	3.2	2.9	2.8
International shipments Rank	8	22	22	47	38	57	75
International shipments Score	3.7	3.5	3.5	3.1	3.3	3.0	2.8
Logistics competence Rank	28	38	38	46	53	65	61
Logistics competence Score	3.7	3.5	3.5	3.3	3.2	2.9	3.0
Tracking & tracing Rank	30	46	35	21	59	59	46
Tracking & tracing Score	3.7	3.5	3.6	3.9	3.3	3.3	3.5
Timeliness Rank	29	34	41	49	41	65	62
Timeliness Score	3.7	3.6	3.4	3.3	3.4	3.0	3.1
Supply chain Indicators: Ports & shipping							
Rank	42	31	36	59	25	88	37
Turnaround time at port (days) Median	1.0	0.8	0.9	1.0	0.8	1.1	0.9
Turnaround time at port (days) Mean	1.2	1.0	1.1	1.3	0.9	1.8	1.1
Turnaround time at port (days) IQR (P75 - P25)	0.7	0.8	0.7	0.8	0.5	0.9	0.6
Turnaround time weighted by ship's TEU, Median	1.0	1.1	1.0	1.1	0.9	1.1	1.0
Turnaround time weighted by ship's TEU, Mean	1.4	1.4	1.1	1.3	1.0	1.5	1.3

Source: World Bank, Logistic Performance Index

नई चुनौती यह है कि इसे एक दशक के भीतर उच्च मध्यम आय वाले देशों में प्रचलित औसत गुणवत्ता और पहुँच स्तर तक बढ़ाया जाए। इसके लिए अवसंरचना की व्यवहार्यता और (अनबंडल) अवसंरचना सेवाओं के संभावित प्रतिस्पर्धी भागों की लाभप्रदता में सुधार करने के लिए नीतिगत सुधारों की आवश्यकता है, और अवसंरचना के एकाधिकार-द्वैध भागों को विनियमित करने के लिए पेशेवर, सुयोग्य नियामकों की आवश्यकता है।

यात्री बनाम मालगाड़ियों की समाजवादी कीमत उद्योग के लिए माल ढुलाई लागत को आपूर्ति की लागत से ऊपर अधिक बनाती है, जिससे उपभोक्ताओं को सब्सिडी मिलती है। लॉजिस्टिक लागत बढ़ाकर प्रतिस्पर्धात्मकता कम हो जाती है। यह परिवहन को अधिक कार्बन उत्पादक परिवहन में बदलने को बढ़ावा देता है। हमें लागत आधारित मूल्य निर्धारण की ओर कदम बढ़ाने की आवश्यकता है।

विनिर्माण उद्योग द्वारा बिजली की खरीद के लिए भारत में बिजली की कीमतें उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं/मध्यम आय वाले देशों में सबसे अधिक हैं (***तालिका 21***)।

तालिका 21: बिजली कीमत का तुलनात्मक विवरण

Electricity Prices for business		
Country	**Price**	EMDC
	USD/KWh	Rank
Indonesia	0.069	20
Vietnam	0.072	23
China	0.088	32
Malaysia	0.121	47
Thailand	0.124	50
India	0.129	53
Mexico	0.227	82
Source: globalpetroprices.com		88
Note: Data is for sept 2023		Total

यह मूल्य संवर्धन और रोजगार के विकास के लिए एक अरुचिकर कदम है। **राज्यों को** उपभोक्ताओं और उद्योग के समाजवादी मूल्य निर्धारण से हटकर बाजार मूल्य निर्धारण की ओर जाना होगा। उपभोक्ता सब्सिडी सीधे बजट से आनी चाहिए। यह भारतीय उद्योग के लिए हमारे प्रतिस्पर्धियों (वियतनाम, थाईलैंड, इंडोनेशिया) के लिए प्रतिस्पर्धात्मक नुकसान का एक महत्वपूर्ण स्रोत समाप्त कर देगा। यह निजी क्षेत्र को दिन के समय के पीक सोलर उत्पादन को शाम की पीक मांग के साथ कुशलतापूर्वक एकीकृत करने के लिए प्रोत्साहित करेगा; यह तौर-तरीका माल उत्पादकों द्वारा प्रभावी मांग में बदलाव और आपूर्ति को स्थानांतरित करने के लिए भंडारण प्रौद्योगिकी के उपयोग का संयोजन होगा।

10.10 आपराधिक न्याय प्रणाली

एक कुशल बाजार अर्थव्यवस्था कानून के शासन पर आधारित होती है। नागरिकों को नवाचार करने और उद्यमशीलता जोखिम लेने के लिए अपराधियों से सुरक्षित और संरक्षित परिवेश की आवश्यकता होती है। जघन्य अपराधों (हत्या, बलात्कार और अपहरण) के लिए असंतोषजनक दंड दर में केवल आपराधिक न्याय प्रणाली के व्यापक, आद्योपांत सुधार करके ही काफी हद तक सुधार किया जा सकता है। इसके लिए कानूनों, नियमों और प्रक्रियाओं, पुलिस और अभियोजन सुधार, न्यायिक सुधार, न्यायालयों और जेल प्रबंधन प्रणालियों और राजनीतिक प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है ताकि अपराधियों के विधायक या मंत्री बनने की संभावना को कम किया जा सके।

एआई पहले से ही कानूनी पेशे में क्रांति ला रहा है। हमें एआई विशेषज्ञ प्रणाली, ***ई-मनु*** का उपयोग करने की आवश्यकता है जो संघ और राज्य कानूनों और नियमों में विसंगतियों को पहचानने और दूर करने में मदद करती है; नगरपालिका, उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय के स्तर पर अदालती फैसलों में विरोधाभासों की पहचान करती है और उन्हें दूर करती है, और सभी पिछले निर्णयों को संहिताबद्ध करके और मामलों को हल करने के लिए आवश्यक साक्ष्यों के प्रमुख टुकड़ों की पहचान करके निर्णयों को गति देती है!

11. सार और निष्कर्ष

विरमानी (2021) ने अगले 25 वर्षों के लिए अर्थव्यवस्था के एक व्यापक दृष्टिकोण को रेखांकित किया। यह पत्र अतीत और वर्तमान का विश्लेषण करके दृष्टिकोण को सामने लाता है। भारत की जीडीपी वृद्धि और प्रति व्यक्ति जीडीपी वृद्धि 1980 के दशक से बढ़ रही है, जब देश में समाजवादी से बाजार व्यवस्था की ओर उन्मुखीकरण किया गया। विश्व अर्थव्यवस्था की औसत विकास दर के सापेक्ष भी विकास में वृद्धि हुई है। इस अवधि के दौरान वास्तविक सकल स्थिर पूंजी निर्माण (जीएफसीएफ) / जीडीपी में वृद्धि की प्रवृत्ति और निजी अंतिम उपभोग व्यय (पीएफसीएफ) में गिरावट की प्रवृत्ति रही है। हालाँकि, ये रुझान वैश्विक वित्तीय संकटों से बाधित हुए, वास्तविक जीएफसीएफ / जीडीपी में तेजी से गिरावट आई, लेकिन सुधार हो गया और यह ऊपर उठकर अपने पिछले शिखर से अधिक हो गई। इसके साथ ही सरकारी अंतिम उपभोग व्यय (जीएफसीएफ/जीडीपी अनुपात) में 2% अंकों की गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई है, साथ ही पूंजीगत व्यय के उच्च हिस्से की ओर व्यय की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। वैश्विक संकट के बाद से वास्तविक पीएफसीएफ में हल्की तेजी भी मंद प्रतीत होती है, वास्तविक पीडीसीएफ/जीडीपी अपने निम्नतम स्तर से केवल 2% अंक ऊपर है। ये कारक संकेत देते हैं कि पीसीजीडीपी वृद्धि की बढ़ती प्रवृत्ति स्थायी है।

रोज़गार के आंकड़े सीमित और असंगत हैं। सामान्य स्थिति के लिए रोज़गार के आंकड़े वर्ष 1983 से 2017 तक श्रमिक जनसंख्या अनुपात (डब्ल्यूपीआर) में गिरावट दर्शाते हैं, जो दर्शाता है कि इस अवधि के दौरान नौकरी की वृद्धि दर जनसंख्या वृद्धि से पीछे रही है। औपचारिक/संगठित क्षेत्र की नौकरियों में समग्र नौकरियों की तुलना में अधिक तेज़ी से वृद्धि हुई है; श्रमिकों के लिए एएसआई के आंकड़े बताते हैं कि पिछले दो दशकों के दौरान मानव-दिवसों में रोजगार में औसतन लगभग 3.6% की दर से वृद्धि हुई है। नई पीएलएफएस डाटा श्रृंखला (2017-18 से 2022-23) अनौपचारिक क्षेत्र में श्रमिक-जनसंख्या अनुपात में गिरावट की प्रवृत्ति में उलटाव दर्शाती है, जिसमें कुल डब्ल्यूपीआर में स्पष्ट रूप से बढ़त दर्शाते हैं। सृजित नौकरियों की संख्या प्रति वर्ष जनसंख्या वृद्धि दर से लगभग 3% अधिक हो गई है। यह पिछले तीन दशकों से एक स्वागतयोग्य परिवर्तन है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि रोजगार और वास्तविक मजदूरी में सबसे तेज वृद्धि आकस्मिक श्रम श्रेणी के लिए हुई है, जो दर्शाता है कि इन सात वर्षों के दौरान आकस्मिक श्रम की मांग आपूर्ति की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ी है, अर्थात्, कई विश्लेषकों द्वारा लिखे गए पुश कारकों की तुलना में पुल फैक्टर अधिक महत्वपूर्ण है। हालांकि, स्वरोजगार और नियमित वेतन एवं वेतनभोगी श्रमिकों के लिए वास्तविक मजदूरी वृद्धि प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि से पीछे रही है। इन दोनों श्रेणियों के लिए वास्तविक मजदूरी की वृद्धि महत्वपूर्ण रूप से उनकी श्रम उत्पादकता से जुड़ी हुई है। नियमित वेतन एवं वेतनभोगी श्रेणी, शिक्षा की गुणवत्ता, नौकरी कौशल की गुणवत्ता और अनुभव से सीखने पर निर्भर करता है। अधिकांश श्रमिकों के लिए, इनमें एक व्यवस्थित सुधार श्रम उत्पादकता और वास्तविक मजदूरी वृद्धि के भावी विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

हमारा विश्लेषण वर्ष 2011-12 और 2022-23 के बीच भारत में विश्व बैंक द्वारा परिभाषित $1.9/दिन और $3.2/दिन गरीबी में तीव्र गिरावट की पुष्टि करता है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के लिए उपभोग गिनी में गिरावट आई है। वर्ष 2022-23 के लिए उपभोग वितरण ग्रामीण और शहरी

दोनों आबादी में 2011-12 के वितरण पर अभिभावी है, जो गिनी गुणांक की तुलना में वितरण में सुधार का एक और भी मजबूत परीक्षण है। इस अवधि के दौरान ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में शीर्ष 5% और निचले 5% के उपभोग के अनुपात में भी सुधार हुआ है।

इस शोधपत्र में एक विकसित मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था, एक खुले, बहुलवादी लोकतंत्र की परिकल्पना को रेखांकित किया गया है, जिसमें प्रत्येक नागरिक को अवसर की समानता का आश्वासन दिया जाता है और सभी के लाभ के लिए उसकी पूरी क्षमता विकसित करने के लिए सहायता प्रदान की जाती है। इस शोधपत्र में अगले 30 वर्षों में भारत के तुलनात्मक लाभ के लिए एक मार्ग का पता लगाने के लिए वैश्विक अर्थव्यवस्था और समाज में जनसांख्यिकीय, डिजिटल और हरित प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है। आगे इसमें नागरिकों की औसत आय के संदर्भ में एक आर्थिक दृष्टि की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है और इसे विश्व अर्थव्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में रखा गया है। इस विकास के भू-राजनीतिक और कार्यनीतिक निहितार्थों को शोधपत्र के अंत में संबोधित किया गया है।

अवसर की समानता मानव पूंजी की औसत गुणवत्ता में सुधार और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा कौशल की उपलब्धता और गुणवत्ता के अधिक समान वितरण से प्रेरित होगी। आपूर्ति और मांग की गई नौकरी कौशल का बेहतर मिलान बेहतर परिणामों में इसके परिणाम को सुनिश्चित करेगा। बुनियादी शिक्षा और निम्न-स्तरीय नौकरी कौशल अशिक्षित, अकुशल श्रमिकों की वास्तविक मजदूरी बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। मध्यम स्तर के कौशल के साथ बेहतर माध्यमिक स्कूल परिणाम भी श्रमिकों के बड़े पैमाने पर वास्तविक मजदूरी के विकास के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। हर स्तर पर शिक्षा और कौशल की गुणवत्ता में सुधार, श्रम बल में नए प्रवेशकों के लिए मजदूरी के विकास को बढ़ावा देगा। "अनुभव से ज्ञानार्जन", कौशल का उन्नयन और संबंधित कौशल सीखना, श्रम उत्पादकता के विकास और पहले से ही नियोजित लोगों की वास्तविक मजदूरी में वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। "अनुभव से ज्ञानार्जन" विनिर्माण के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, लेकिन आधुनिक कृषि और सेवाओं के लिए भी प्रासंगिक है। कार्यबल में शिक्षित और कुशल, विवाहित महिलाओं के प्रवेश से श्रम उत्पादकता बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। ये सभी मिलकर मजदूरी आय का अधिक समान वितरण सुनिश्चित कर सकते हैं। प्रस्तावित निवल आय अंतरण प्रणाली (एनआईटीएस) के साथ-साथ एक सुधारगत, सरलीकृत और डिजिटल रूप से एकीकृत कर प्रणाली (ई- कौटिल्य) आर्थिक विकास (कुजनेट्स वक्र) में तेजी के नकारात्मक वितरणात्मक प्रभाव को कम करने में मदद कर सकती है।[82]

अर्थव्यवस्था के संरचनात्मक परिवर्तन में कृषिरत श्रम बल के हिस्से में कमी लाना शामिल है, जो कुल का आधा से पाचवां हिस्सा या उससे भी कम रह जाएगा। शेष लोगों को वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित ग्रामीण सेवाओं और उद्योगों में अधिक उत्पादक रूप से नियोजित किया जाएगा। कम बेरोजगारी और अधिक श्रम उत्पादकता के साथ, कृषि और संबद्ध क्षेत्र में सुधार होगा, जिससे ग्रामीण सेवाओं और औद्योगिक उत्पादों की मांग बढ़ेगी। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि इस बढ़ी हुई मांग का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण भूगोल में स्थित सेवा प्रदाताओं और उत्पादन द्वारा पूरा किया जाए। भौतिक और डिजिटल कनेक्टिविटी, कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था से संबंधित

[82]एनआईटीएस मिल्टन फ्रीडमैन द्वारा "कैपिटलिज्म एंड फ्रीडम (1962)" में प्रस्तावित नकारात्मक आयकर पर आधारित है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल की उपलब्धता, और गैर-कृषि उद्देश्य के लिए भूमि का उपयोग करने की स्वतंत्रता, इस परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

हम मानव संसाधन के उन्नयन, संरचनात्मक परिवर्तन और भारतीय अर्थव्यवस्था को निम्न मध्यम आय से उच्च आय वाली अर्थव्यवस्था में बदलने में डिजिटल इको-सिस्टम की महत्वपूर्ण भूमिका की कल्पना करते हैं। डिजिटल अर्थव्यवस्था में दो अवयव - एक दर्जन स्टैक और सब-स्टैक की डिजिटल वास्तुकला और दूसरा टेलीमेडिसिन और ई-लर्निंग, टेली-शिक्षा और ई-स्किलिंग की एक मॉड्यूलर, बहुस्तरीय प्रणाली - होंगे। स्टैक में शिक्षा, ग्रामीण और कृषि सूचना, अनुसंधान एवं विकास और उच्च तकनीक कौशल के विपणन पर केंद्रित चार उप-स्टैक के साथ एक ज्ञान स्टैक, सार्वजनिक स्वास्थ्य पर केंद्रित एक उप-स्टैक के साथ एक स्वास्थ्य स्टैक, एक कल्याण स्टैक और एक सोशल मीडिया स्टैक के साथ-साथ व्यापक और गहन फिन-स्टैक और ई-मार्केट स्टैक शामिल हैं। स्टैक को नए उद्यमियों और एमएसएमई को पारदर्शी, निष्पक्ष और विश्वसनीय नियमों के साथ एक स्तरीय मंच प्रदान करके डिजिटल अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। ये स्टैक राष्ट्रीय फाइबर ऑप्टिक केबल नेटवर्क के माध्यम से भारत के प्रत्येक निवासी के लिए सुलभ होंगे, जो प्रत्येक ब्लॉक, तहसील और तालुका तक पहुंचेगा।

दूसरे अवयव में एआई सक्षम विशेषज्ञ प्रणालियों का समूह शामिल है जो शिक्षा, कौशल, स्वास्थ्य और सरकारी सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार करता है। इनमें एक डिजिटल शिक्षक (ई-आचार्य), एक डिजिटल प्रशिक्षक (ई-गुरु), एक डिजिटल डॉक्टर (ई-वैद), एक डिजिटल करदाता (ई- कौटिल्य) एक डिजिटल नौकरशाह (ई-चाणक्य) और एक डिजिटल न्यायाधीश (ई-मनु) शामिल होंगे। टेलीमेडिसिन, ई-शिक्षा, ई-कौशल और शासन प्रणाली को हाइब्रिड के रूप में देखा जाता है जो प्रेरणा और सामाजिक शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण व्यक्तिगत मानवीय स्पर्श के साथ वेब डिलीवरी की मापनीयता का लाभ उठाते हैं। वे सरकार और निजी सेवा प्रदाताओं को भी जोड़ेंगे ताकि प्रत्येक की ताकत को पूरा किया जा सके और प्रत्येक की कमजोरी को दूर किया जा सके। वास्तुकला की कल्पना नागरिकों को सशक्त बनाने, श्रम बल के संरचनात्मक परिवर्तन को बढ़ावा देने और समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए की गई है।

शहरीकरण, आवास और परिवहन में समय के साथ बढ़ने और विकास को हरित बनाने में योगदान देने के लिए हरित अर्थव्यवस्था की भूमिका की परिकल्पना की गई है। हरित डिजाइन, सेवाओं, वस्तुओं और प्रणालियों के प्रचार-प्रसार का समर्थन करने के लिए एक हरित उप-स्टैक बनाया जाएगा।

सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली सार्वजनिक वस्तुओं की गुणवत्ता और वितरण भी उपभोग और आय के वितरण को प्रभावित करते हैं। सार्वजनिक स्वास्थ्य एक ऐसा पहलू है जो 65 वर्षों तक अपेक्षाकृत उपेक्षित रहा। पिछले दस वर्षों में इसमें परिवर्तन आया है, लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। हमारी आबादी के बड़े आकार को देखते हुए, स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति, जल निकासी, संग्रह, परिवहन, जल और सीवेज के उपचार और पुनर्चक्रण और ठोस अपशिष्ट को एकत्र करने, प्रसंस्करण और पुनर्चक्रण के लिए बड़े पैमाने पर त्रि-स्तरीय (राष्ट्रीय, राज्य, स्थानीय) प्रणालियों की आवश्यकता है। जब तक ये स्थापित और स्थायी रूप से क्रियाशील नहीं हो जाते, तब तक भारत को विकसित देश नहीं माना जाएगा। इन प्रणालियों का सबसे बड़ा लाभ हमारे साथियों की तुलना में भारत में उच्च, बाल (5 वर्ष से कम) कुपोषण के स्तर का उन्मूलन करना होगा।

विकास और जन कल्याण से संबंधित नीतियां और कार्यक्रम अगले 25 वर्षों के दौरान तेज विकास को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं। इनमें एक व्यापक आर्थिक और क्षेत्रीय परिवेश का निर्माण शामिल है जिसमें निजी पहल फल-फूल सकती है और पूरी अर्थव्यवस्था और समाज को आगे ले जा सकती है। 30 वर्ष के "नौकरशाही समाजवाद" की दुर्भाग्यपूर्ण विरासत नौकरी सृजकों के मार्ग में कई शेष बाधाएं हैं और आर्थिक प्रशासकों को विकास चालकों को सशक्त बनाने के लिए पर्याप्त प्रोत्साहन नहीं हैं। अंतिम अध्याय में विकास को गति देने और तीन दशकों तक तेज विकास को बनाए रखने के लिए आवश्यक नीति और संस्थागत सुधारों को एक साथ प्रस्तुत किया गया है।

भारत-चीन के बीच प्रति व्यक्ति अंतर (अनुपात) अपने निचले स्तर पर पहुंच चुका है और अब कम होने लगा है। भारत की जनसंख्या वृद्धि दर और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर अब चीन से अधिक है, इसलिए सकल घरेलू उत्पाद और आर्थिक शक्ति अनुपात बढ़ती दर से कम होने लगेंगे। यदि मुक्त खुले बाजार वाले लोकतंत्र, पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की विषम आर्थिक, व्यापार, प्रौद्योगिकी और एफडीआई नीतियों को अस्वीकार करते हैं और अपनी आपूर्ति श्रृंखलाओं को पीआरसी से बाहर निकालकर भारत और अन्य मुक्त खुले बाजार वाले लोकतंत्रों में विविधता लाते हैं, तो वे सामूहिक रूप से व्यवधान और शोषण के जोखिम को कम कर सकते हैं। इससे भारत को तेजी से सुधार करने और अपनी अर्थव्यवस्था का अधिक व्यापक रूप से कायाकल्प करने, वर्ष 2050 तक अपने 1.64 बिलियन नागरिकों के लिए एक बेहतर, अधिक समान अर्थव्यवस्था और समाज बनाने में मदद मिलेगी। यह कम आय और निम्न मध्यम आय वाले देशों को अधिक सहायता और मदद प्रदान करने की बेहतर स्थिति में भी होगा।

विश्व अमेरिका और उसके सहयोगियों (ग्रुप यूएसए) तथा चीन और उसके सहयोगियों (ग्रुप चीन) के बीच हाई-टेक डिकप्लिंग की ओर बढ़ रहा है। इसके साथ आंशिक आर्थिक डिकप्लिंग भी होगी, जिसके परिणामस्वरूप निर्मित निर्यात का एकाधिकार समाप्त हो जाएगा और प्रत्येक समूह की आपूर्ति श्रृंखलाओं को जोखिम मुक्त करने का प्रयास किया जाएगा। यह प्रयास इस तथ्य से बहुत जटिल है कि चीन के आसियान पड़ोसी, जो न तो अमेरिका के सहयोगी हैं और न ही चीन के, आर्थिक रूप से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, एफडीआई और चीन के साथ आर्थिक संपर्क और सुरक्षा के लिए अमेरिका पर निर्भर हैं। दूसरी ओर, भारत का चीन के साथ बहुत बड़ा व्यापार घाटा है और उसे मध्यम अवधि में चीन पर अपनी आयात निर्भरता कम करनी चाहिए। अल्प-मध्यम अवधि (5 वर्ष) में यह अपने एमएनई के लिए भारत में अपनी आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाने के लिए स्वागत योग्य परिवेश का निर्माण कर ग्रुप-यूएसए के साथ साझेदारी करके अपनी आपूर्ति श्रृंखलाओं को जोखिम मुक्त करने में मदद कर सकता है। इससे अमेरिका, उसके सहयोगियों (ईयू, यूके, जापान) और भारत की आर्थिक, तकनीकी और कार्यनीतिक सुरक्षा बढ़ेगी।

इंडिया अर्थात् भारत, एक सभ्यतागत राष्ट्र है जो न तो संयुक्त राज्य अमेरिका की तरह होगा जो यूरोपीय औपनिवेशिक परंपराओं का उत्तराधिकारी है, न ही साम्यवादी चीन की तरह जो हान साम्राज्यवादी परंपराओं का उत्तराधिकारी है। जब मिस्र की सभ्यता विजय के माध्यम से प्राप्त धन और श्रम के आधार पर महान स्मारकों का निर्माण कर रही थी, तब भारतीय सभ्यता अपनी विशाल आबादी (विश्व की एक तिहाई) के लिए शहरों के निर्माण, शिल्प विनिर्माण और आंतरिक रूप से तथा

अपने उत्तर-पश्चिमी और पश्चिमी पड़ोसियों के साथ व्यापार विकसित करने पर केंद्रित थी। एक ऐसे युग में, जिसमें अन्य सभ्यताएं पड़ोसी क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करने और "अन्य" लोगों को गुलाम बनाने में गौरव महसूस करती थीं, भारत के शासक वैदिक संस्कृति, आध्यात्मिक विचारों और सभ्यता को भारतीय उपमहाद्वीप (उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में श्रीलंका तक और पश्चिम में बलूचिस्तान के रेगिस्तान से लेकर भारत के पूर्व में म्यांमार की पहाड़ियों तक) में प्रसार कर रहे थे।

इंडिया अर्थात् भारत *धर्मनिरपेक्ष आध्यात्मिक-सामाजिक अनुबंध* पर निर्मित है, जिसमें उस समय (2500-3500 ईसा पूर्व) की सभी जनजातियाँ अपने देवताओं को यज्ञ अग्नि में ले जाती थीं, और हर दूसरी जनजाति के देवताओं को स्वीकार करने के लिए सहमत होती थीं, जिसमें प्रत्येक जनजाति अपने स्वयं के देवता (या किसी भी देवता) की पूजा करने के लिए स्वतंत्र होती थी! आध्यात्मिक-धार्मिक मान्यताओं और बाहरी सभ्यता के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के संदर्भ में यह "हिंदू या भारतीय धर्मनिरपेक्षता" भारतीय सभ्यतागत राष्ट्र की नींव है। यह आज भी भारत के राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य नेतृत्व का मूल दार्शनिक दृष्टिकोण है।

12. संदर्भ

एजेनोर, पी. और ओ. कैनुटो, "एक्सेस टू इंफ्रास्ट्रक्चर एंड वीमेन्स टाइम एलोकेशन: एवीडेंस एंड ए फ्रेमवर्क फॉर पॉलिसी एनालिसिस", फाउंडेशन पोर लेस एट्यूड्स एट रिसर्च सुर ले डेवलपमेंट इंटरनेशनेल, वर्किंग पेपर 45, 2013.

भल्ला, सुरजीत एस., "द न्यू वेल्थ ऑफ नेशंस", 2017

भल्ला, सुरजीत एस, तीर्थ दास, करण भसीन, अभिनव मदरम, एम्प्लायमेंट इन इंडिया, वर्ल्ड बैंक, 2023.

भल्ला, सुरजीत एस, और करण भसीन, "पॉवर्टी इन इंडिया ओवर दि लास्ट डिकेड", इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम LIX, नंबर 28, 13 जुलाई, 2024.

दास, सोनाली, सोनाली जैन-चंद्र, कल्पना कोचर और नरेश कुमार, "वीमेन वर्कर इन इंडिया: व्हाय सो फ्यू अमॉन्ग सो मैनी?", आईएमएफ वर्किंग पेपर नंबर-15/55, 2015.

गनीकोट, गारेंस, देबराज रे और कैरोलिना कोंचा- अरियागाडा, अपवार्ड मोबिलिटी इन डेवलपिंग कंट्रीज, एनबीईआर, अप्रैल 2024.

गोयल, अशीमा (एडिटर), "एक कम्प्लीट हैंडबुक ऑफ दि इंडियन इकॉनॉमी इन दि 21 सेंचुरी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, अक्टूबर 2019.

रेड्डी, वाई.वी., "एडवाइस एंड डिसेंट: माय लाइफ इन पब्लिक सर्विस"

विरमानी, अरविंद, "इंडिया विज़न 2050," पॉलिसी पेपर नंबर पीपी नं.-01/2021, ईग्रो फाउंडेशन, मई 2021.

विरमानी, अरविंद, "फाल एंड राइज ऑफ इंडिया", वर्किंग पेपर नंबर डब्ल्यूएस डब्ल्यूपी 1/2013, अक्टूबर 2013। IndiaEcHistory13Nov01.docx

विरमानी, अरविंद, फ्रोम यूनीपोलर टू ट्राइपोलर वर्ल्ड**: दि मल्टीपोलर ट्रांजिशन पैराडॉक्स, एकेडमिक फाउंडेशन, दिल्ली, 2009**. https://egrowfoundation.org/research/india-vision-2050/ .

विरमानी, अरविंद, प्रोपेलिंग इंडिया फ्रोम सोशलिस्ट स्टेगनेशन टू ग्लोबल पावर**: ग्रोथ प्रोसेस,** वॉल्यूम I (पालिसी रिफॉर्म, वॉल्यूम II), एकेडमिक फाउंडेशन, नई दिल्ली, **2006** .

विरमानी, अरविंद, "ग्लोबल पावर फ्रोम 18 टू 21 सेंचुरी: पावर पोटेंशियल (वीआईपी^{2}), स्ट्रेटेजिक एसेट्स एंड एक्चुअल पावर (वीआईपी)," वर्किंग पेपर नंबर 175, आईसीआरआईईआर, नवंबर 2005. http://icrier.org/pdf/WP175VIPP8.pdf, http://icrier.org/?s=working+papers.

विरमानी, अरविंद, "ए ट्राईपोलर सेंचुरी: यूएसए, चीन और भारत," वर्किंग पेपर नंबर 160, आईसीआरआईईआर, मार्च 2005. http://icrier.org/pdf/wp160.pdf, http://icrier.org/?s=working+papers.

विरमानी, अरविंद, "इलेक्शन 2004: ए डिफ्रेंट एक्सप्लेनेशन, इकॉनोमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम XXXIX नं. 25, 19-25 जून, 2004, पीपी 2565-2567.

परिशिष्ट सारणी

Virmani Index of Economic -Power (VIPe)			
	2020	2035	2050
France	0.12	0.11	0.10
Russia (RF)	0.13	0.11	0.10
UK	0.12	0.12	0.12
Indonesia	0.07	0.12	0.20
Turkiye	0.08	0.13	0.18
Japan	0.21	0.16	0.14
Germany	0.20	0.17	0.14
India	0.14	0.34	0.75
China	0.60	0.87	0.92
USA	1.00	1.00	1.00
EU	0.78	0.73	0.67
India/china	0.23	0.39	0.81
India/USA	0.14	0.34	0.75
China/india	4.3	2.5	1.2

Virmani Index of Military Power (VIPm)			
	2020	2035	2050
Japan	0.06	0.06	0.05
Germany	0.07	0.06	0.05
France	0.07	0.07	0.06
Russia (RF)	0.08	0.07	0.07
UK	0.08	0.08	0.08
India	0.07	0.15	0.24
China	0.31	0.43	0.45
USA	1.00	1.00	1.00
Note: Japanese proj based on data upto 2021			
India/china	0.21	0.35	0.53
china/india	4.7	2.9	1.9
Note: This index doesn't account for Nuclear weapons			

Virmani Index of Power(VIP)			
	2020	2035	2050
Japan	0.11	0.09	0.08
Germany	0.11	0.10	0.09
France	0.09	0.08	0.08
Russia (RF)	0.10	0.09	0.08
UK	0.10	0.10	0.10
India	0.10	0.23	0.42
China	0.43	0.61	0.64
USA	1.00	1.00	1.00
India/china	0.22	0.37	0.65
china/india	4.5	2.7	1.5

नीति आयोग